https://www.studiestoday.com

सूची

क्रम	शीर्षक		लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	विषय वासना ..... पद सुन सुन....		संत शिवनारायण	1-5
2.	सगरे जहान भोजपुरिया	(एकांकी)		6-13
3.	साधो भाई ..... पद		संत पलटूदास	14-17
4.	बाएन	(कहानी)	विशुद्धानंद	18-27
5.	पतेहबहादुर शाही	(कविता)	कुलदीप नारायण झङप	28-33
6.	भारत रत्न डा० भीमराव अम्बेडकर	(जीवनी)		34-38
	बाएन			
7.	मत्तन के कहानी	(कहानी)	तकषी शिवशंकर पिल्लै	39-56
8.	उहो बरखा आई	(कविता)	सत्यनारायण लाल	57-60
9.	जग के लाल : जगलाल	(जीवनी)	जगलाल चौधरी	61-67
	बाएन			
10.	वारिसशाह से	(कविता)	अमृता प्रीतम	68-73
11.	बेयालिस के साथी	(कविता)	रमाकांत द्विवेदी रमता	74-79
12.	भोजपुरी सिनेमा : लोकप्रियता के शिखर पर	(निबंध)		80-85
13.	नेह के पाती	(कविता)	गोरख पाण्डेय	86-90
14.	कबड्डी	(कहानी)		91-96
15.	आग पर तप रहल जिन्दगी	(कविता)	रमेशचन्द्र झा	97-101
16.	भोजपुरी लोकनाट्य आ डोमकच	(निबंध)		102-107
	व्याकरण आ रचना			108-131

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कक्षा-10

पान-फूल

भाग-2

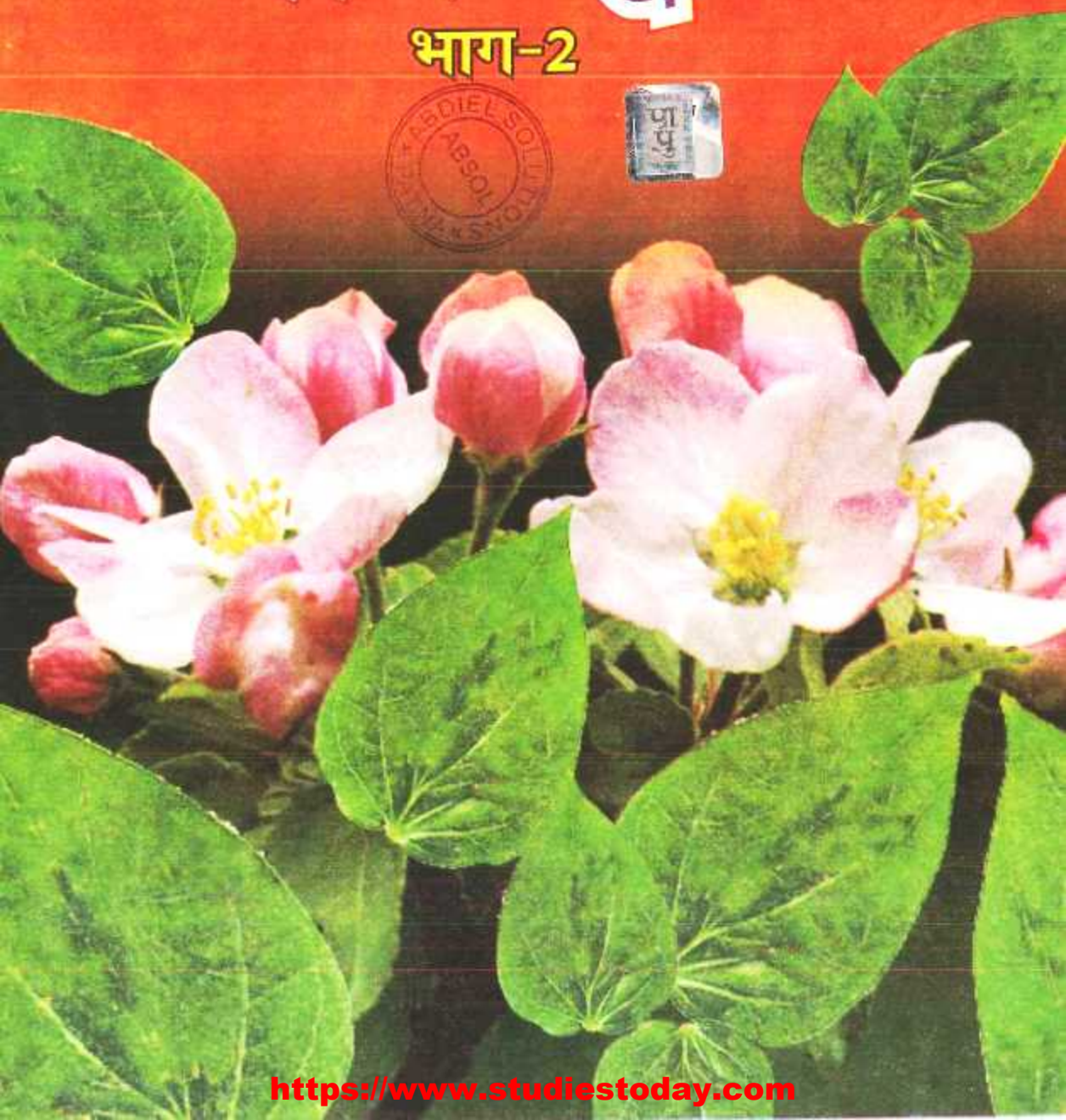

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER
Visit us at www.joinindianarmy.nic.in
or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

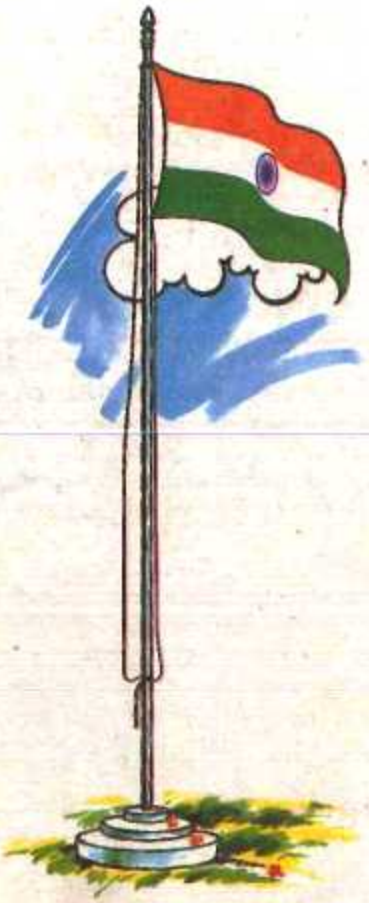

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : शिल्पा प्रिंटिंग वर्क्स, महेन्द्रू, पटना–6

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : एक

संत शिवनारायण

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

भक्ति साहित्य के इतिहास में संत शिवनारायण के बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान बा । इहाँ के रचनन में ब्रह्म जीव आ माया के तात्विक चिंतन प्रस्तुत कइल गइल बा । उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिलान्तर्गत चंदवार नामक गाँव में नरौनी बाघराम के घरी संवत् 1773 में इहाँ के जनम भइल रहे । शिवनारायण जी के बचपने से सामाजिक विषमता आ धार्मिक विकृति के प्रति आक्रोश भीतर भरल रहे । इहाँ के भीतर ब्रह्म दर्शन के उत्कट लालसा रहे । ओह घटी के चर्चित संत दुखहरण जी से इहाँ के दीक्षा लेलीं आ साधना के बल पर ब्रह्म जीव आ माया के विशद विवेचन कइलीं । इहाँ के पवन में भक्ति आ वैराग्य दूनो के सम्यक विवेचन कइल गइल । इहाँ के कबीरदास पलटूदास आदि संतन से प्रभावित रहीं ।

समाज के दलित आ उपेक्षित लोगन के बीच काफी लोकप्रिय भइलीं आ इहाँ के अनुयायी लोग शिवनारायणी संप्रदाय चलाके इहाँ के सिद्धांत के प्रचार-प्रसार कइल । आजो एह संप्रदाय के लाखन शिष्य उहाँ के पद के भक्ति भाव से गावेला ।

संत शिवनारायण के पद में बाह्याडम्बर के विरोध क के आंतरिक साधना पर जोर दिहल गइल बा । एह संग्रह के संकलित पद में उहाँ के ओह ढोंगी साधक के चेतावनी दे रहल बानी कि जब मन से विषय वासना ना छूटल, त झूठो के वैराग्य लिहल ओसही प्राणघातक होई जइसे स्वाद के लालच में मछरी वंशी में फँस के आपन प्रान गंवा देले । जदपि जंगल में विचरण करेवाला हरिण के केहू से दुश्मनी ना होखे, बाकि वंशी के मधुर गान सुने के फेरा में बहेलिया के हाथे आपन जान गंवा देला । फतिंगा नयनसुख खातिर दिया में जर जाला आ भंवरा सुगंधि के लालच में पचरस खातिर जान गंवा देल ओसही लालची मन के गति होला। तीर्थन में पत्थर पूजला

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

से आ मौन बनके ध्यान लगवला से कवनो लाभ ना होखे। बिना मन के वश में कइले ई सब व्यर्थ बा ।

असही दूसरका पद में अपना चंचल मन के चेतावत इहाँ के कह रहल बानी कि माया, मोह आ भ्रम के भयावह नदी बह रहल बा, जवना में आशा के लहर झकझोरता । काल आ कर्म नजदीके बा एहसे जगके जंजाल में भुला के अबेर मत कर, आपन रास्ता चेत । जब बुढ़ापा रूपी साँझ के अन्हरिया घेर लिही तब एह भवसागर के कइसे पार करब। हमार बात मानके अपना घरे चल, नाहि त पछतइब । अपना रहे जोग आपन देश बा, जहाँ सभ संत लोग अपना-अपना घर के वास करता । तूं अनकर आस का कइले बाड़ । शिवनारायण जी विचार के कहतानी कि अपना घर पहुँच के असंख्य सखियन के साथ धमार गाव । एह पद में अंतर्मुखी साधना पर बल दिहल गइल बा ।

विषय वासना छूटत न मन से

विषय वासना छूटत न मन से, नाहक नर बैराग करो ।
जैसे मीन बाझु वंसी मंह, जिभ्या कारन प्रान हरो ।
सो रसना वस बस कियो न जोगी, नाहक इन्द्री साधि मरो ।।1।।
जैसे मृगा चरत जंगल में, ना सो बैर करो ।
बंसी के तान लगी श्रवननि में, व्याधा बान सों प्रान हरो ।।2।।
जैसे फतिंगा परै दीप में, नैना कारन प्रान हरो ।
नासा कारन भंवर नास भयो, पांचो रसबस पांच मरो ।।3।।
तीरथ जाके पाहन पूजे, मौनी ह्वै के ध्यान धरो ।
शीव नरायन ई सभ झूठा, जब लग मन नहिं हाथ करो ।।4।।

सुनु सुन रे मन कहल मोर

सुनु सुनु रे मन कहल मोर, चेत करहु घर जहां तोर ।।टेक।।
मोह मया भ्रम जल गंभीर, बहै भयावन रहै न थीर ।।
लहरि झकोरै लै दूसरि आस, काल करम कर निकट बास ।।1।।
आपु देखि पंथ धरु सबेर, का भुलि भुलि जग करु अबेर ।।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सांझ समै जब घेरु अंधार, तब कैसे जइब उतरि पार ।।2।।
फिर पछतइब समै जात, चलहु आपन घर मानहु बात ।।
देश आपना आपन जोग, जहाँ बसहिं सब संत लोग ।।3।।
अपन अपन घर करत बास, केहु न काहुक करत आस ।।
सीव नरायन सब्द बिचारी, अनंत सखिन संग रचु धमारी ।।4।।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संत शिवनारायण के जनम कवना जिला में भइल रहे ?
   (क) सीवान (ख) आजमगढ़
   (ग) बक्सर (घ) बलिया
2. संत शिवनारायण कवना पंथ के मानव रहीं ?
   (क) सगुण पंथ (ख) सूफी पंथ
   (ग) निर्गुण पंथ (घ) कवनो पंथ
3. जोगी खातिर कवना इन्द्रिय के साधल सबसे जरूरी बा ?
   (क) रसना (जीभ) (ख) कान
   (ग) मन (घ) नयन
4. फतिंगा दीया का टेम्ह पर गिरके जर जाला? फतिंगा के कवन इन्द्रिय एकर कारण होला?
   (क) नैना (देखल) (ख) सुनल (श्रवण)
   (ग) टस चीखल (घ) कवनोवा
5. संत शिवनारायण अपना पद में 'सांझ समै' कहके आदमी के जिनगी के कवना अंश किओर इशारा करत बाड़े ?
   (क) बालपन (ख) जवानी
   (ग) बुढ़ापा (घ) कवनो ना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आदिमी विषय वासना में पड़ के का करेला ?
2. फतिंगा काहे दीया के लौ के फेरा में पड़ेला ?
3. सुनु सुनु रे मन कहल मोर चेत करहु घर जहाँ तोर ?
   मोह मया भरम जल गंभीर, बहै भयावन रहै न धीर ।
   – एकर अर्थ कहीं ।
4. संत शिवनारायण 'आपन घर' कहके का बता रहल बानीं ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पदन में कवना तरे धर्म के बाह्याडंबर के निरर्थकता पर प्रकाश डालल गइल बा ?
2. निर्गुण पंथ के विकास में संत शिवनारायण के योगदान के वर्णन करीं ।

परियोजना कार्य

1. रउवा घरे भा गाँव-जवार में केहू के निर्गुण पंथ के कवनो संत के भजन याद होखे त ओकरा के सुन के लिखी ।
2. संत कबीर आ संत शिवनारायण ने तुलना करीं ।
3. शिवनारायणी संप्रदाय के कवनो मठ का बारे में लिखी ।

शब्द-भंडार

जिभ्या – जीभ,

मृगा – हरिण,

बैर – झगड़ा,

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्यथा – दु:ख,

बहेलिया – शिकारी,

फतिंगा – उड़ेवाला कीड़ा,

पाहन – पत्थर,

मीन – मछरी,

दासना – जीभ,

नाहक – बेकार,

बैर – दुश्मनी,

श्रवननि – कान में,

दीप – दीया ।

2

मोर – हमार,

तोर – तहार,

घेरू – घेर लिहल,

अबेर – देर,

काहुक – केहू के,

रचु धभारि – धमार रचल, खुशील मनावल,

धीर – असथिर,

भयावन – भयानक,

समै – समय,

बास – रहला, बसल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : दू

विषय-प्रवेश

भोजपुरी भारत के अलावे आउर कईगो देशन में बोलल जाले । आज हिंदी के जवना अंतरराष्ट्रीय स्वरूप के बात हो रहल बा ओकरा नेंव में भोजपुरिये बिया। मारीशस, फीजी, सूरीनाम, गुवाना, हालैंड जइसन देशन से भारत के जोड़े में भोजपुरी पुल के काम करतिया । शताब्दियन पहिले गइल भोजपुरिया लोग अपना लहू से सींच के एह देशन के खुशहाल बना दिहल। भोजपुरिया लोग मजदूर का रूप में एह देशन में गइल रहे आ अपना कर्तव्य से ओजवाँ के शासक बनल । एकर कथा प्रेरणा से भरल बा । भोजपुरिया लोग जहाँ भी बा अपना रीति-रिवाज, संस्कृति आ भाषा के जोगवले-सहजले बा । समय का बदलाव के असर भाषा पर जरूर पड़ल बा बाकिर मूल रूप अबहियों जस के तस बनल बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

एकांकी

सगरे जहान भोजपुरिया

पात्र

गुरुजी

मुन्ना

राजू

राहुल

अरविन्द

[विद्यालय का ओर से लड़िका लोग पटना घूमे आइल बा । ऊ लोग घूमत-घामत पटना के गाँधी मैदान तर पहुँचता]

मुन्ना : गुरु जी ! ई केकर मूर्ति ह ?

गुरुजी : ई मारीशस के राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम के मूर्ति ह । इहाँ के भोजपुरिये रहलीं ।

राजू : (अचरज से) त का भोजपुरी आउरो जगे बोलल जाले ?

गुरुजी : हाँ ! भोजपुरी दुनिया के कई गो देशन में बोलल जाले । ई नेपाल के नारायणी, लुंबिनी, रोतहट, बारा, पर्सा, चितवन, पवल, परारी, रूपनदेई आ कपिलवस्तु आदि इलाकन के मातृभाषा ह । एकरा अलावे मारीशस, फीजी, सूरीनाम, ट्रीनीडाड, गुवाना, हालैंड आदि देशन में भोजपुरिया लोग सदियन पहिले गइल रहे । ऊ लोग आज ले अपना भाषा आ संस्कृति के पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोगवले चलि आवत बा ।

राहुल : ऊ लोग ओजाँ कइसे पहुँचल ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गुरुजी : एकर कहानी त बड़ा दु:ख भरल बा ।

सब लड़िका : भला ऊ का ?

गुरुजी : अंग्रेज लोग भोजपुरिया लोग के नौकरी देवे के एग्रीमेंट कइल आ धोखा देके पनिया जहाज पर चढ़ा के समुद्र का रास्ते एह देशन में ले गइल । एह के आजो एकरा याद में एगो गीत गावल जाला–

कलकत्ता से चलल जहजिया

पवरियाँ धीरे बहऽऽ

एह लोग के गिरमिटिया मजदूर कहल गइल । गिरमिटिया एग्रीमेंट के एगो विकसित रूप ह ।

मुन्ना : अंग्रेज लोग अइसे काहे कइल ?

गुरुजी : मारीशस, फीजी, सूरीनाम आदि देशज के माटी ऊँख के खेती के अनुकूल रहे। भोजपुरिया लोग ऊँख के खेती करे में माहिर रहे । एही से अंग्रेज ओह लोग के फँसा के ले गइल ।

अरविन्द : तब त भोजपुरिया लोग के बड़ी साँसत भइल होई ?

गुरुजी : ओह साँसत के त पूछहीं के का बा ! ओह लोग के दु:ख के ओर-छोर ना रहे। आपन घर-दुआर, नाता-रिश्ता, हित-मित सब छुट गइल । टापू पर अंग्रेजन के गुलामी करे के पड़े । मातृभूमि के इयाद समुद्र में उठत लहर खानी हिलोर लेत रहे । एह लोग का दु:ख के बखान मारीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र भगत मधुकर के एगो बिरहा में आजो सुनल जा सकेला–

अइते मरीचिया में सोनवा सुदेहिया से
बंधल गुलमिया जंजीर
खाइ के त रात-दिन लौर, गारी, लात मिले
पीये के नयनवा के नीर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

माहुर-माहुर भरल गोरवा के बतिया हो

बिंधले करेजवा में तीर

राहुल : तब फेन का भइल ?

गुरुजी : तू लोग त जानते बाड़ जे भोजपुरिया लोग बड़ी कमासुत होला । ऊ लोग मारीशस, फीजी, सूरीनाम जइसन कई गो उजाड़ टापूअन के अपना मेहनत से गुलजार बना दिहले। एकरा खातिर भोजपुरिया लोग के आपन जीव-जांगर ठेंठावे के पड़ल । एकरो के ब्रजेन्द्र भगत मधुकर जी लिखले बानी–

ऊँखवा के खेतवा में गल गइले सोनवा के

सोनवा समनवा शरीर

परती जमीनिया में ऊँखवा उगाइके हो,

सोनवा भइले खलिहान

लहुआ के बुंदवा से सिंचले मरीचिया

सोनवा नीयर कतेने जवान

वीर नीयर काम कइले कुलियन के बांके लाल

भारत के गरब गुमान

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अरविन्द : एह घड़ी एह देशन में भोजपुरिया लोग कवना हाल में बा ?

गुरुजी : हरेक देश के अलग-अलग स्थिति बा । मारीशस में भोजपुरिया लोग सबसे नीमन तरे बा जबकि फीजी में संकट में बा लोग ।

राहुल : मारीशस में कइसे बा सभे ?

गुरुजी : सर शिवसागर रामगुलाम जीं, जेकरा मूर्ति तर हमनी ठाढ़ बानी के अगुआई में मारीशस आजाद भइल आ इहाँ के लमहर समय ले मारीशस के प्रधानमंत्री रहलीं।

राजू : इहाँ के पुरनियाँ कहाँ के रहनियार रहे ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गुरुजी : इहाँ के पुरनियाँ भोजपुर जिला के जगदीशपुर थानान्तर्गत हरिगाँव के रहनियार रहे ।

सभे लड़िका (खुशी से) : आँय ! भोजपुर के ! हरिगाँव के !!

अरविन्द : इहाँ के बाबूजी के का नाँव रहे ?

गुरुजी : इहाँ के बाबूजी के नाँव मोहित महतो रहे । उहाँ के 1871 में मारीशस ले जाइल गइल रहे । मोहित महतो के बाबूजी के नाँव रामशरण महतो रहे ।

मुन्ना : एह घड़ी मारीशस के प्रधानमंत्री के बा ?

गुरुजी : एह घड़ी उहाँ के प्रधानमंत्री श्री नवीनचन्द रामगुलाम जी बानी । इहाँ के सर शिवसागर रामगुलाम जी के लड़िका हई ।

राजू : ई त आउर खुशी के बात बा । बाकिर फीजी में भोजपुरिया लोग काहे संकट में बा ?

गुरुजी : ओजवाँ भोजपुरिया लोग के संगे भेदभाव होता । उहाँ स्वदेशी मूल-विदेशी मूल के मुद्दा बना के कुछ लोग जबरन सत्ता दखलिया लेले बा ।

मुन्ना : आउर सब देशन में भोजपुरिया लोग मजे में बा । कई जगे ई लोग राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री बनत रहेला । गुवाना में डा. छेदी जगन जी प्रधानमंत्री बनल रहीं।

अरविन्द : त का मास्टर जी ! ऊ लोग आजो भोजपुरी बोलेला ?

गुरुजी : हाँ । बाकिर ओह में तनी-मनी अंतर रहेला । हमनी किहाँ कहलो जाला-कोस-कोस पर पानी बदले, पाँच कोस पर बानी । ई भाषाविज्ञान के नियमों ह । अंग्रेजिओं में अइसहीं होला । इंगलैंड, अमेरिका आ भारत के अंग्रेजी में अंतर बा ।

..... अब साँझ हो गइल । अब लवटल जाव ।

(सभे लवटता)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ब्रजेन्द्र भगत मधुकर के हवे ?
2. सर शिवसागर रामगुलाम जी के रहे ?
3. एह घड़ी मारीशस के प्रधानमंत्री के बा ?
4. मरीचिया कवना देश के कहल जाला ?
5. **कवना-कवना देश में भोजपुरिया लोग बा ?**

   (क) मारीशस (ख) सूरीनाम

   (ग) चीन (घ) मारीशस आ सूरीनाम दूनों में
6. **'सगरे जहान भोजपुरिया' कवना विधा के रचना ह ?**

   (क) कविता (ख) कहानी

   (ग) निबंध (घ) एकांकी
7. **मारीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम के पुरखा लोग कहवाँ के रहे लोग ?**

   (क) भोजपुर जिला के जगदीशपुर थान के हरिगाँव के

   (ख) सीवान जिला के

   (ग) गोपालगंज जिला के

   (घ) उत्तर प्रदेश के देवरिया जिला के
8. **छेदी जगन कहवाँ के प्रधानमंत्री बनल रहीं ?**

   (क) मारीशस (ख) गुवाना

   (ग) फिजी (घ) सूरीनाम
9. **सर शिवसागर रामगुलाम के मूर्ति कवहाँ स्थापित बा ?**

   (क) पटना में (ख) आरा में

   (ग) छपरा में (घ) मोतिहारी में

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नेपाल में कहवाँ-कहवाँ भोजपुरी बोलल जाले ?
2. तीन गो विदेश के नाँव लिखीं, जहवाँ भोजपुरी बोलल जाले ।
3. भोजपुरी क्षेत्र के मजदूरन के अंग्रेज लोग मारीशस काहे खातिर ले गइल ?
4. आज मारीशस में भोजपुरिया लोग के कवन हाल बा ?
5. फिजी में भोजपुरिया लोग का संगे कइसन व्यवहार हो रहल बा ?

दीघ उत्तरीय प्रश्न

1. पठित पाठ के आधार पर विदेशन में भोजपुरिया लोग के स्थिति बताईं ।
2. 'अइते मरीचिया में सोनवा..... बिंघले करेजवा में तीन' के भावार्थ लिखीं ।

भाषा आ व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. पाठ में आइल निम्नलिखित शब्दन के कवन तरह के शब्द कहल जाला ?

   घर-दुआर, नाता-रिश्ता, हित-मित, ओर-छोर ।

2. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखीं–

   अनुकूल, दुःख, स्वदेशी, नीमन ।

3. पाठ के ध्यान से पढ़ीं आ निम्नलिखित के चुनाव करी–

   (क) पाँच गो विशेषण शब्द

   (ख) पाँच गो संज्ञा शब्द

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

परियोजना कार्य

1. 'सगरे जहान भोजपुरिया' के अपना संघतिअन के संगे मंचन करीं ।
2. रउवा गाँव-जवार में केहू भोजपुरिया गिरमिटिया प्रथा के तहत विदेश गइल होखे त पता कके ओकरा बारे में लिखीं ।
3. भाषा में होते बदलाव आ विविधता का बारे में जानकारी प्राप्त करीं

शब्द-भंडार

एग्रीमेंट	–	समझौता
गिरमिटिया	–	एग्रीमेंट से विकसित रूप
पवरिया	–	हवा
ऊँख	–	ईख
सांसत	–	बहुत दुःख
मरीचिया	–	मरीशस के एगो नाँव
सुदेहिया	–	सुंदर शरीर
लौर	–	लाठी
माहुर	–	जहर
गोरवा	–	अंग्रेज
गुलजार	–	खुशहाल
हँसी	–	खुशी से भरल
लहुआ	–	खून
गरब	–	गर्व
पुरनियाँ	–	पूर्वज, पुरखा लोग ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय - तीन

संत पलटू दास

पलटू दास के जीवन के संबंध में कवनो विशेष जानकारी नइखे। उपलब्ध तथ्यन के आधार पर कहल जा सकेला कि इहाँ के फैजाबाद जिला के जलालपुर नाँव के गाँव में पैदा भइल रहीं। इहाँ के पिता के नाम कांदू बनिया रहे। इहाँ के गुरु के नाम बाबा जानकी दास रहे। बाबा पलटू दास जादे समय अयोध्या में बितवलीं। इहाँ के कबीरदास से प्रभावित रहीं आ कबीरे दास लेखा समाज के विकृति पर खरा-खोटा सुनावे से बाज ना आवत रहीं। इहाँ के रचना में कुंडलियन के संख्या अधिका पावल जाले।

इनका निधन के संबंध में बतावल जाला कि अयोध्या में कुछ साधु लोग इनका ख्याति आ उपदेश से चिढ़के इनका के जिअते जरा दिहलन बाकी जगन्नाथ जी में ई एक बेर फेर देखल गइलन आ ओकरा बाद इहाँ के अनंतकाल में समा गइनी।

विषय-प्रवेश

साधना में सिद्ध साधक ओह स्थिति के पहुँच जाला जहाँ भक्त आ ब्रह्म के भेद मिट जाला। दूनों एकमेव हो जाला। तब सूरति, सबद, जोग, जोगी, आत्मा, परमात्मा अलग-अलग कुछ ना रह जाला। बुझाता, जे भक्त बा उहे भगवान बा। जे नश्वर रहे, ऊहे अब अविनाशी बा, लोक, परलोक के अवभव सब एके बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

साधो भाई

साधो भाई उहंवा के हम बासी,
जहवां पहुंचै नहि अबिनासी ॥ टेक॥

जहंवा जोगी जोग न पावै,
सुरति सबद नहिं कोई ।
जहंवा करता करे न पावै
हमहीं करैं सो होई ॥1॥

ब्रह्मा बिस्नु नाहिं गमि सिव की,
नहीं तहां अबिनासी ।
आदि जीति उहां अमल न पावै,
हमहीं भोग बिलासी ॥2॥

त्रिकुटी सुन्न नाहि है उहवां
दंडमेरू ना गिरिवर ।
सुखमन अजपा एकौ नाहीं,
बंक नाल ना सरवर ॥3॥

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'साधो भाई उहंवा के हम वासी, जहवाँ पहुँचि नहि अविनासी – रचेवाला कवि के नाम बताईं।

2. **पलटू साहब कइसन ब्रह्म के उपासक रहीं :**

   (क) सगुन (ख) निर्गुन

   (ग) राम (घ) शिव

3. **पलटू साहब कवना परंपरा के कवि मानल जाइले :**

   (क) तुलसी-परंपरा के (ख) कबीर-परंपरा के

   (ग) बुद्ध-परंपरा के (घ) जायसी-परंपरा के

4. पलटू साहब के पद में 'ब्रह्मा' के बाद कवना देवता के नाम जाइले बा ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पलटू साहब कब आ कहाँ पैदा भइल रहीं ?
2. पलटू साहब के पंथ के बारे में तीन पंक्ति लिखीं ।
3. पलटू साहब आ कबीरदास के ईश्वर निर्विकार बाड़न, कइसे ?
4. पलटू साहब अपना पद में साधो के काहे संबोधित कइले बाड़े ?
5. 'जहँवा करता करे न पावै, हमहीं करै सो होई' के अर्थ लिखीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न.

1. पलटू साहब के जीवन-वृत्त लिखीं ।
2. निर्गुन संत के लक्षण बयान करीं ।
3. सगुण आ निर्गुण पंथ के अंतर समझाईं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. उपासना में जब भक्त आ भगवान एक हो जालन तब कवन स्थिति पैदा हो जाला ? आ काहे ?

5. पठित कविता के भाव स्पष्ट करीं ।

परियोजना कार्य

1. पलटू साहब जइसन कवनो दोसरा संत कवि के पद लिखीं ।

2. आस-पास केहू कबीरपंथी होखस त उनकर रहन-सहन बताईं ।

3. कबीरदास के कवनो रचना जवना में आत्मा-परमात्मा के बात होखे, ओकर भाव समुझाईं।

शब्द-भंडार

अविनासी	–	जेकरा नाश ना होखे
जोग	–	साधक द्वारा ईश्वर प्राप्ति खातिर साधना, एकर आठ गो प्रकार बतावल गहल बा–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा आ समाधि
सुरति	–	ध्यान (इष्ट के ध्यान)
सबद	–	अनाहद नाद (कबीर के रचना के नाम)
जोति	–	रोशनी, लौ
अमल	–	प्रयोग, व्यवहार में लावल
भोग-विलासी	–	भोग विलास करे वाला
त्रिकुटी	–	भँव के बीच के जगह
सुन्न	–	जवना पर स्पर्श के कवनो असर ना पड़े
दंडमेरू	–	मेरूदंड
गिरिवर	–	पहाड़
सुखमन	–	सुषुम्ना नाड़ी
अजपा	–	जवन जप स्वत: होत होखे
बंक	–	टेढ़
नाल	–	कमल के डंठल
सरवर	–	तालाब

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : चार

विशुद्धानंद

विशुद्धानंद के जनम इहाँ के परिवार मूलत: भोजपुर के बासिन्दा रही। बिहार के भागलपुर जिला के घोघा बाजार स्थान में पहली जनवरी सन् 1949 ई के भइल रहे। प्रारंभिक शिक्षा के बाद ई स्नातकोत्तर पास कइलीं आ स्वतंत्र लेखन आ पत्रकारिता के साथे-साथे सिनेमा खातिर गीतो लिखली। अबही ई स्वतंत्र लेखन करत सिनेमा के गीत-पटकथा आदि लिखे में व्यस्त साबानी। इहाँ के प्रकाशित किताके नाँवबा–'एक नदी मेरा जीवन (गीत-संग्रह) आ कालजली बर्बरीक (खंड काव्य)

विषय-प्रवेश

शादी-बियाह, जग-परोजन में संबंधी किहाँ से आइल कवनो मिठाई के बाएन कहल जाला, एह कहानी में लेखक सहज सरल ढंग आ प्रवाहपूर्ण भाषा में बतावे के कोशिश कइले बा कि आदमी के अपना अज्ञानता आ लापरवाही के चलते एड्स अइसन खतरनाक बीमारी के शिकार होखे के पड़ेला।

एह कहानी के माध्यम से 'एड्स' बेमारी के बारे में जानकारी दिहल गइल बा। एगो उद्देश्यपरक रचना उच्च कोटि के कलाकृति हो सकेला–एकर ई सटीक उदाहरण बा। 'एड्स' जइसन भयावह बेमारी से नवकी पीढ़ी के सावधान कइल गइल बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहानी

बाएन

सुगिया ना जानत रहे कि ओकरा प्रीतम 'डरायबर' के का हो गइल बा । जानत तऽ ओकर डरायबर पति जीतनो ना रहे कि ओकरा कवन रोग लाग गइल बा । अपना खानदान में ऊहे एगो गोर, गबरू, छव फीटा नवही रहे । घुँघरइला बार, चाकर छाती, मुट्ठी भर के कमर, ऊँच लिलार, सकुची के पोंछ के कोड़ा जइसन कसल गठीला शरीर । जब फगुआ चाहे चइता के गोल में कांसा के बड़का झाल ले के, ठेहुनियाँ मार के, सीना तान के अलाप ले, तऽ पूरा गाँव-जवार ओकरा टाँसी पर 'अह-अह' कर उठत रहे । अभिलाखा ठाकुर अपना मोंछ पर ताव देत ललकार उठस–'चाबस बेटा । करेजा बावन गज के कर देले पट्ठा, ओकरा व्यासगिरी के चर्चा गाँव-जवार में चटकारा ले के होत रहे । गीत-गवनई में ओकर प्रतिष्ठा बढ़ते जात रहे । ओकरा शोहरते पर लोभाके, सुगिया के बाबू ओकरा के आपन दामाद बनवले रहन ।

सुगियो कमाल के सुन्नर लइकी रहे । विधाता ओकरो के फुरसत में, चाव से रचले रहन। नैन-नक्स छुरी-कटारी नीयर तीखा, धप-धप गोर, गज-गामिनी घर के दुलरुई तेतर बेटी। ओकर बाबू, अपना गिरहथ लोग के दाढ़ी बनावत गुमान से बोल उठस... 'मालिक ! साँचे कहल बा.. . तेतर बेटी राज रजावे, तेतर बेटा भीख मँगावे.... रउआ सभे देखब.... अपना सुगिया खातिर अइसन दमाद उतारब कि देखनिहार के धरनिहार लागी.... लछुमन उर्मिला के जोड़ी बनाइब ।'

आ.... साँचो... जब सुगिया आ जीतन के सुमंगली होत रहे, तऽ जात बिरादरी का.... गाँव-जवार के लोग वाह-वाह कर उठल रहे । अभिलाख ठाकुर जब सुगिया के छेंके गइल रहस तऽ ओकरा के देखते, अनेरे उनका मुँह से निकल गइल रहे.... "हमरा लछुमन के उर्मिला मिल गइल" । सुगिया के बाबुओ के पाँव, जीतन अइसन दामाद देखके, जमीन पर ना पड़त रहे ।

सुगिया जौने दिन जीतन-बहू बन के घर में आइल रहे, ओही दिन से घर के रौनक बदले लागल रहे । दिन दूना-रात चौगुना तरक्की होखे लागल रहे । जीतन के लोखर लेके दुआरे-दुआरे गइल, आ दाढ़ी बनावल रुचत ना रहे । एही से ऊ सुगिया के समझा-बुझा के कलकत्ता चल गइल । एगो ट्रॉन्सपोर्ट कंपनी में पहिले खलासी, फेर डरायबर बन के अपना ट्रक का साथ,

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हिन्दुस्तान के पूरुब-पच्छिम, उत्तर-पच्छिम, उत्तर-दक्खिन एक करे लागल। गाँव के चउपाल पर रोजे चरचा होखे..... "जीतन व्यास दूनो हाथे पइसा पीट रहल बाड़े।" माटी के खपड़इल घर, पक्का कोठा के रूप ले लिहलस। सुगिया के बदन पर रेशमी साड़ी, आ गहना-गुरिया देख के नीमन-नीमन गिहथिन लोग के आँख फैल के सितुहा हो जाय।

सुगिया, जब अपना पुश्तैनी रेवाज के अनुसार, अपना पातर कमर पर 'बाएन' के दउरा ले के, दहिना हाथ लहरावत लयदार लचक लेले मस्त चाल से, बाएन बाँटे खातिर गाँव के गली से गुजरे तऽ चउक-चउबारा पर जमल नवही लेग भीतरे-भीतर कट के रहि जास। केहू के छेड़खानी के हिम्मत ना होत रहे। बाएन बाँटत सुगिया के देख के ससुर के उमिर वाला जवानो लोग देवर बने खातिर ललच जास।

-"का हो सुगिया भउजी! सबके के बाँटऽ तारू, हमरा के छाँटऽ तारू? अरे हमार बखरा बा कि ना?" कौनो बइठका से आवाज आई।

-"हँऽ बा नूँ देवर जी.... रउआ दीदी लगे..... जाईं.... भर हींक चाभीं।"

बिंदास आ हाजिरजबाब सुगिया जवाब दे के मुसकी के मोती झारत, अपना मस्त चाल से निकल जाय, आ बखरा माँगे वाला नवही पर ओकर साथी, बेंग-बचन का साथे ठहाका लगा के पाँच घइला पानी ढरका देस। ओकरा हाजिर-जवाबी, मस्ती आ खुशमिजाजी पर पूरा गाँव फिदा रहे। काज-परोजन में, जजमान-गिरहथ लोग किहाँ, सुगिया ठकुराइन पहिला पसंद रही। सुगियो, अपना हिस्सा के सरग-सुख भोगे में मस्त रहे।

बाकी..... दइबो के लीला विचित्र होला। ओकर मरम केहू ना जाने। सुगिया के बिआह के भइला दस बरिस हो गइल। साल-दर-साल ऊजर करिया दिन-रात गुजर गइल, बाकी सुगिया के नारी के पूर्णता माने महतारी बने के सुख, दइब ना दिहले। उनुकर मर्जी का रहे ई तऽ ऊहे जानस. ..... सुगिया के का? ऊ तऽ उनका मर्जी के आपन मर्जी मान के, शादी-बियाह, परब-तेवहार में अपना गीतन के मस्ती से, खुल्लम-खुल्ला हास-परिहास से सउँसे गाँव के रसबोर करत, अपना भीतर से खुश रहे। ओकरा अपना जिनगी से कवनो शिकायत ना रहे।

एक रात.... दस बजत रहे। पड़ोसी ढोंढई राम के दोकान में लागल डबलू, एल. एल. टेलीफोन रहे जेकरा से गाँव भर के जुड़ाव बाहर से हो जात रहे। ढोंढाई टेलीफोन उठा के बतियवले आ अपना बेटा छोटू के सुगिया के बतियवले आ अपना बेटा छोटू के सुगिया के बोलावे खातिर भेज दिहले। सास के गोड़ में तेल रगरत सुगिया से छोटू कहलस कि जीतन काका के

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

फोन बा । सासो ओकरा के खुशी-खुशी जाए के आदेश दे दिहली । सुगिया उछाह में उठके छोटू के साथे आँगना से निकलल । जेठानी-देवरानी के भुन-भुन अनसुना कर के जब ऊ बाहरी बइठका से गुजरत रहे तऽ अभिलाख ठाकुर खँखारत टोक दिहले....

–"एतना रात के कहाँ जातारू कनियाँ ?"

–"डरेबर बाबू के फोन बा बाबूजी ।"

–"अच्छा... जा... चोरबतिया तऽ ले लऽ ?"

–"अच्छा बाबूजी ।"

सुगिया उनका चउकी से टॉर्च उठा के, झटका से निकल गइल ।

ढोंढ़ाई राम.... टेलीफोन के बगल में राखल रिसीवर के ओर इशारा कऽके.... दोकान के बाहर बइठ गइले । मरद-मेहरारू के बीचे ऊ बाधक बनल उचित ना समझले। सुगिया रिसीवर उठवलस। ओकरा हाथ में रिसीवर रहे अ चेहरा पर आपना प्रीतम 'डरेबर' के बोली सुने के उत्कंठा ।

–"हेलोऽ..... कहाँ से बोलऽतारऽ ए डरेबर बाबू ? पटना से ? तोहार आवाज अतना कमजोर काहे लागत बा हो ? तबीयत खराब बा का ? .....

आ रहल बाड़ऽ कब ? काल्हे ? अरे आवऽ आवऽ सब ठीक कर देब.... हंऽ हऽ... इहाँ सब कुछ ठीक-ठाक अपना जगहे पर बा.... राखऽ तानी ।"

रिसीवर राख के सुगिया बाहर निकलल । आँचरा के खोंट में बान्हल दू रोपेया के सिक्का खोल के, ढोंढ़ाई राम के हथेली पर धरत, हँसते-हँसते बोलल..... 'थैंकू देवर जी.... बात करावे खातिर थैंकू ।' आ भीतर से गुद-गुदी महसूस करत, उड़ंकू नीयत अपने घरे आ गइल। चउकी पर ससुर के चोरबत्ती धरत बता देलस कि जीतन कालहुए आवत बाड़े ।

बिहान भइला जीतन अइले, बाकी साल भर बीत गइल.... लवट के काम पर ना जा सकले। उनुकर बेमारी बढ़ते जात रहे । सुगिया अपना डरेबर के ले के कहाँ-कहाँ ना गइल ? ओझा-गुनी, पीर-फकीर, देवल-मजार सगरे टंगले फिरले, सैकड़ो मनता मँगलस, होमियोपैथी, हकीमी, वैदगिरी, सब इलाज करवलस । दूध-फल अंडा-पनीर, छेना-खोआ एक से एक पुस्टई खियवलस बाकी कौनो असर ना । ओकर प्रीतम डरेबर हड्डी के ढाँचा बनल जात रहे। बड़-बड़ बिल्लौरी आँख

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कोटर में धँस गइल । खिलल गाल पुचुक गइले सऽ, दाँत बहरी लउके लागल, घुघुर-धुघुर बार झर गइले सऽ । जीतन का साथे सुगिया नीयन कमल के जइसे पाला मार गइल । सोना नीयन दमकत अंग-अंग झुलस गइल, सब रूप, सब मस्ती, ना जाने कहँवा बिला गइल ? ना जाने ककर नजर लाग गइल ओकरा सोहाग-भाग के ?

सुगिया पी.एम.सी.एच. के अलगढ़वा वार्ड में जीतने नीयन रोगियन के बीचे बेड़ के पैताना में बइठल, अपना सोहाग-भाग आ दुर्भाग्य के अनुपात के समझे में गुमसुम कहीं भुलाइल रहे कि डॉक्टर के आवाज पर ओकर कठमुर्की टूटल । ऊ सम्हर के खड़ा हो गइल ।

–"सुगिया देवी !"

–"जी डाकदर बाबू ।"

–"क्या आपको पता है कि आपके पति को एड्स है ?"

– "हम कौनो डाकदर बैद हई सरकार कि हमरा पता होई ? ई कवन रोग हऽ हुजूर ?"

–"देखिए । मैं आपको समझाने की कोशिश करता हूँ । एड्स एक ऐसा रोग है, जो शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता ही नष्ट कर देता है । यानी शरीर के अंदर रोगों के खिलाफ़ लड़ने की जो ताकत होती है वही खत्म हो जाती है । शरीर अनेक रोगों का घर बन जाता है। इस पर किसी पुष्टिकर भोजन या दवा का कोई असर नहीं होता । धीरे-धीरे आदमी की मौत हो जाती है । यह रोग खून में एच.आई.वी. नामक विषाणु के प्रवेश करने पर होता है। यह विषाणु प्रदूषित सूई से, एड्स ग्रसित व्यक्ति के साथ असुरक्षित संभोग से, माता से संतान में, अथवा दूषित रक्त चढ़वाने से एक से दूसरे शरीर में, प्रवेश करता है और तेजी से फैलता है । इस तरह जो अपने जीवन-साथी के अलावे दूसरे अनजान लोगों के साथ असुरक्षित सहवास करते हैं उनपर विशेष खतरा मंडराता रहता है । यह विषाणु साथ रहने, खाने-पीने, हाथ मिलाने अथवा कपड़ा-बर्तन इस्तेमाल करने से नहीं फैलता । चूँकि अब तक इस रोग की कोई कारगर दवा नहीं है इसलिए इससे मृत्यु निश्चित है । एकमात्र सच्चाई यही है कि जानकारी और संयमित जीवनशैली ही इससे बचने के उपाय हैं । आपके पति ट्रक ड्राइवर हैं... इनको ये रोग कैसे लगा, यह तो यही जानें, लेकिन अभी आप भी अपना खून दीजिए । हमें आपकी भी जाँच करनी है ताकि आप सतर्क होकर संयमित जीवन जी सकें और आगे इसे फैलने में शामिल न हो सकें । सिस्टर । इनका रक्त का नमूना लो।"

सुगिया हक्का-बक्का डॉक्टर के बात सुनत रह गइल । नर्स नया सिरिंज निकाल के ओकरा बाँह से खून ले लिहलस । नमूना ले के डाक्टर आ नर्स तऽ चल गइल लोग आकी सुगिया के

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दिमाग में सवालन के बवंडर छोड़ गइल । ओकर चेहरा उतर गइल. हउल दिल होखे लागल । फेर कसहूँ अपना के सम्हरलस जब तक साँस तबतक आस होला ई सोच के रात भर के जीतन के सेवा मशीन नीयन करत रहल ।

भोर भइल .. रात के सब चिंता झटक के ऊ कमरा से बाहर निकलल... जल्दी-जल्दी अपना किरिया करम से निपट के आइल..... जीतन के हाँथ-मुँह धोआवलस। दउर के अस्पताल के बाहर गइल..... चाह, पावरोटी, सिनल अंडा, केरा वगैरह ले के आइल । अपना डरेबर के नाश्ता करवलस, चाह पियवलस । जीतन अपना अपराधबोध में गुम सुम ओकरा से आँख ना मिला पावत रहस । ऊ चुपचाप ओकर निहोरा माने पर बेबस रहे । बस, सुगिया जवन-जवन आदेश देवे ओकर पालन करत जाय । एतना सुरीला गायक, दहाड़े वाला मरदाना, एकदम मौन, सून्न, आपन भोगना भोगे पर बेबस लाचार रहे । ऊ लेटले-लेटल, छत के सटले गोल हवा वाली जाली में लागल गउरइया के उजरल खोंता के निहारे लागल जौना के छोड़ के पंछी परा गइल रहले सऽ ।

–"सुगिया देवी !" ई डाक्टर के आवाज रहे ।

–"जी डाक्दर बाबू !" असरा आ उमेद के साथ उठ के सुगिया स्वागत कइलस ।

–"हमें खेद है..... मुझे यह सच्चाई कहनी पड़ रही है कि आप भी एच.आई.वी. पोजिटिव हैं यानी आप के खून में भी एड्स के विषाणु पाये..... ।"

डाक्टर के बात पूरा होत-होत सुगिया पुक्का फार के रिरिया उठल –

– "जा हो डरेबर बाबूऽऽऽ... ई बाएन कहँवा से ले अइलऽ हो.... अरे हमरो बखरा लगा देल हीऽऽ.... हाय रे करऽऽम.... ।"

सुगिया डकरत, हँकरत माथा धर के धरती पर थस से बइठ गइल । ओकरा रोआई से पूरा वार्ड में पीर पसारे लागल । पत्थल के मूरत बनल जीतन के कोटर में धँसल दूनों आँख से, दरद आ ग्लानी, पानी बन के ढ़रके लागल जवना के धार में, तकिया के साथे-साथे ओकर समूचा अस्तित्व गहराई में डूबत चल गइल ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बाएन' गद्य के कवन विधा के रचना बा ?

   (क) निबंध (ख) कहानी

   (ग) संस्मरण (घ) रेखाचित्र

2. 'बाएन' रचना कवना विषय पर आधारित बा -?

   (क) प्रेम पर (ख) गीत-गवनइ पर

   (ग) एड्स पर (घ) पति-पत्नी पर

3. 'बाएन' कहानी के लिखले बा ?

4. केकरा व्यास गिरी के चर्चा गाँव-जवार में चटकारा लेके होत रहे ?

5. 'बाएन' के नायिका के हवे ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. 'हमरा लछुमन के उर्मिला मिल गइल' एह पंक्ति में लछुमन आ उर्मिला केकरा कहल गइल बा आ कवना दृष्टि से ?

7. एड्स शरीर सबसे पहिले केकरा खत्म करेला ?

8. एड्स कवना विषाणु से उत्पन्न होला ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. एड्स फइले के कवन-कवन कारण होला ?

10. कवन-कवन चीज से एड्स के विषाणु ना फइले ?

11. जीतन काहे लेटल-लेटल गउरइआ के उजरल खोंता निहारत रहे ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

12. नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ दिहल बा, एकनी के वाक्य में प्रयोग करीं।

(i) **आँख फइल के सितुहा भइल**–अचम्भा में पड़ल

(ii) **बावन गज के करेजा भइल**–गर्व से उत्साहित भइल

(iii) **पाँच घइला पानी ढ़रकावला**–निराश कइल

(iv) **हड्डी के ढ़ाँचा बनल**–शरीर कमजोर भइल

(v) **जबतक साँस तबतक आस**–कवनो छोटो सहारा रहला पर सफलता के आस।

(vi) **दूनो हाथे पइसा पीटल**–खूब कमाइल

(vii) **मोंछ पर ताव दिहल**–ताकत, अहंकार के देखावल

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

शब्द-भंडार

चाबस	–	शाबस
बाएन	–	कवनो बाहर से आइल सनेस के दोसरा में बांटल
नवही	–	नया, जवान
टाँसी	–	गीत में मधुर आ टेस आवाज में देर तक टेरल
व्यासगिरी	–	कीर्तन, गीत-गवनई में मुख्य रूप से गावे वाला
दुलरई	–	जेकरा खूब मानल जाला, दुलारी
तेतर बेटी	–	तीन गो बेटा पर से जनमल बेटी
चउपाल	–	जहाँ गाँव के लोग बिटोरा के बात-विचार करेला
खपड़इल	–	खपड़ापोश, छप्पर वाला
बखरा	–	हिस्सा
काज-परोजन	–	कवनो संस्कार आदि का अवसर पर होखे समारोह

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चोरबत्ती	–	टॉर्च
उडंकू	–	उड़ के आवे वाला
मनता	–	कवनो चीज प्राप्त करेला देवी-देवता के चढ़ावा मानल ।
ठकमुर्की	–	का करीं का ना करीं के भाव
कोटर	–	पेड़ में बिल, गड़हा नियर
रिरियाना	–	शोर आवाज देके भगावल, बोलावल
डकरत	–	जोर लगा के बोलल
हकरत	–	जोर लगा के ललकारल, बोलल
पुस्तैनी	–	पुरखा लोग से पावल ।

पठेत्तर

सात भईसि के सात चभक्का; सोरह सेर घीव खाँउ रे ।

कहाँ बाड़ें तोर बाघ मामा, एक पकड़ लड़ि जाँउ रे ।।

भंइसि का दूध में ऊ काबू बा कि जेवन पाड़ा खाली बैलन का हुरपेटि दिहला पर खून मूते-लागेलन ऊहो बाघ से लड़े के समाती राखत बाड़ेन । ईहे सोचि के दूबर करज-गुलाम काढ़ि के भंइसि कीने के ठानि लिहलन । मेहरारू हाले के मूअलि रहे । दूबर का लरिका पोसे के रहे। लमहर चाकर पलिवार रहे । सोचलन कि घीव बेचाइ जाइल करी । माठा पानी से लरिकवा मोटजो मजे में खा लिहल करिहन । गोरस पताई से कुल्हि बेकतिन के गुजर हो जाई । लरिका कें नाँव भीम एह खातिर धइलन कि का जाने नाँवों के असर परत होखे। उनुकर माई बाबू उनुकर नाँव 'दूबर' धर दिहलन तेवर जिनिगी भर दूबर केतनों धूरि लगवलन उधरेंगवां ना भइलन । दूबर के कोसिस त ईहे रहे कि भीम के महतारी के मूअल ना बुझाउ। घीव-दूध के अलमगंज रही । भीम का जेवने मन करे तेवने खात रहसु आ देहि बनावसु । भंइसि ठीक-ठाक भइल सवा तीन सौ में । तोड़ा के रुपया दूबर सहेजलन त कुल्ही आठ बीस आ पांच गो भइल । बुटुखुरी राय से जोड़ववलन त पैंतीस कम दू सौ भइल । अबहीं आठ बीस अउरी रुपिया रहति तब जाके त मामिला फरियाइत ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अबकी दूबर सोचिले रहलन कि असों गूर बेचि के सेठ फटकचन्द के लहना-तगादा साफ कइ देइबि । करज गुलाम आदिमी इज्जते खाति खाला । एगो त सूदि देत-देत नाकि में पानी हो गइल बाटे । उनुकरा रुपया के सूदि हलमान जी का पोंछि नीयर बढ़ते जात बा । हर साल हिसाब साफ कइल जाला बाकिर साल के आखिर में जब हिसाब कइल जाला त फेनु जस के तस । करजा देवे खातिर दूबर दसो नोह जोरि के तैयार रहेलन बाकिर डहरी-घाटे जबे सेठ फटकचन्द से भेंट हो जाई माहुर नीयर बोले लागेलन । हीत-नात केहू दुआर पर आइल रही, उनुकर तगदिहा चोंहपि जाइ आ लागी माहुर ढकचे । बेचारू दूबर चिरइता के घोंट पीके रहि जालन । करबे का करसु । अबर के खीस खोंटि बरोबर ।

अभ्यास

1. "सात भइंसि..... लड़ि जाउं रे ।" छूटल पंक्ति पूरा करीं ।
2. दूबर भइंसि काहे खातिर खरीदल चाहत रहन ।
3. दूबर अपना लड़िका के नाँव भीम काहे रखलन ?
4. कर्ज काहे खातिर लीहल जाला ?
5. कर्ज लेबे वाला काहे परेशान रहेला ?
6. 'अवर के खीस खोंट बरोबर' के अर्थ स्पष्ट करीं ।
7. रोपेया के सूद केकरा नीयर बढ़त जात रहे ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : पाँच

कुलदीप नारायण 'झड़प'

परिचय

कुलदीप नारायण 'झड़प' जी के जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिला क लिलकर गाँव का एगो बड़ गृहस्थ परिवार में भइल रहे । उहाँ का गहन स्वाध्याय से साहित्य, भाषाशास्त्र, समाज, संस्कृति के ज्ञान अर्जित कइलीं । उहाँ के कार्यक्षेत्र सारण प्रमंडल रहल, जहवाँ शिक्षक रहीं। उहाँ के आजादी का लड़ाई में भाग लिहलीं आ वृन्दावनलाल दास, राहुल सांकृत्यायन आदि का प्रभाव से 'जनपदीय भाषा आंदोलन' आ किसान आंदोलन में सक्रिय भाग लिहलीं । काशी नागरी प्रचारिणी सभा से जे हिंदी शब्दकोश कई भाग में प्रकाशित भइल, ओकरा संपादक-मंडल में झड़प जी भी रहीं । अपना कार्यक्षेत्र में धूमधाम के उहाँ के शोध कइलीं। खास कके तुलसीदास जी का जीवन पर उहाँ के काम महत्त्वपूर्ण बा । जनपदीय आंदोलन का सिलसिला में सभ जनपदीय भन के विकास खातिर झड़प जी आजीवन उत्जोग कइलीं। 'अरघ' 'दोहा सतसई' 'बात क बात' आदि झड़प जी के भोजपुरी में प्रकाशित किताब बाड़ी स ।

विषय-प्रवेश

सारण में काम करत में उहाँ का फतेहबहादुर शाही का बारे में काम कइलीं जे 1757 में भइल जनक्रांति में अंग्रेजन से लोहा लिहले । फतेहशाही फिरंगियन से लोहा लेवे वाला नायक रहले । उनका से हुस्सेपुर के गढ़ छीन के अंग्रेज मीर जमाल के मलगुजारी वसूले के काम किहले स । 'मीर जमाल बध' में एही जमाल के हरा के मारे के कथा दिहल बा । 'बंकजोगिनी' का वन में लुका के अपना मुट्ठी भर सैनिकन का बलपर छापामार युद्ध कके फतेहबहादुर अंग्रेजन का नाक में दम कर दिहले । एह कविता में 'जमाल वध' खंडकाव्य के एगो अंश दिहल ब बा जवना में जमाल के युद्ध में हरा के मार देवे का युक्ति पर विचार कइल गइल बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

फतेहशाही

प्रथम क्रांतिकारी ऊ वीर,
फतह शाही नृप रणधीर ।
वीर पिता के वीर कुमार,
जेकर जश गावत संसार ।
कइले उ अंग्रेजन से रारि,
बंकजोगिनी में बसि के मारि ।
तेइस बरिस कइले तब युद्ध,
वसना उनकर जीवन शुद्ध ।

हुस्सेपुर गढ़ छोड़िके, निर्जन वन में वास ।
छापा मारस युक्ति से, देसु फिरंगीन त्रास ।
गोविन्द राम के शासन, विहले तब अंग्रेज ।
उनका वध पर 'मीर' के मिलल काँट के सेज ।
ऊ ना बुझलन सिंह के, विहलन खोदि जगाई ।
राजा अपना घात में, गइले कहीं लुकाई ।

रिपु सैनिक लिहले गढ़ घेर,
गइल निकसि न परले फेर ।
राजमहल सुख गइल भुलाइ,
वन-झारन में तरु तर जाइ ।
घास-फूस में लोटे लोग,
बहरा पहरा हाथे बोंग ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

सोच बहुत लागे ना नीनि,
कइसे ना जगाल के बीनि ।
सोचत जतन बिचारत बाति,
गइल बीत तीन पहरा राति ।
पहर रात से रहल ना ढेर,
बोलले सब वीरन के टेर ।
जागऽ जागऽ, जागऽ लोग,
कर चढ़ाई के उतजोग ।
लोग बटूरि आइल तत्काल,
अस्त्र-शस्त्र निज लिहल सम्भाल ।
का आदेश ? कहीं सिरमौर,
हमनी के रउरे ले दौर ।
हाथन फरकत बा हथियार,
मन में बा उत्साह अपार ।
देत हुकुम जनि करीं अबेर,
पालन में ना होई देर ।
जइसे गिरी तरुवर पर गाज,
जइसे बर्याँ-झुंड पर बाज ।
ओइसे जाइब छन में दौर,
लोकि लेबि जा अरि के चौर ।
तब नरेश के मुँह खुलल, कहले कुछो न देर ।
अबहीं तनिका दम धरीं, बाटे बहुत सबेर ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कवि 'प्रथम क्रांतिकारी वीर' केकरा के कहत बा ?

(क) वीर कुंवर सिंह (ख) महाराणा प्रताप

(ग) फतेहशाही (घ) मंगल पांडेय

2. फतेहशाही अंग्रेजन से कतना दिन ले लड़ाई लड़ले ?

(क) तेइस बरिस ले (ख) पन्द्रह बरिस ले

(ग) पाँच बरिस ले (घ) पचीस साल तक ।

3. फतेहशाही कहवाँ के राजा रहले ?

(क) हुस्सेपुर (ख) बंकजोगिनी

(ग) काशी (घ) तमकुही

4. 'जमाल वध' खंडकाव्य केकर लिखल ह ?

(क) डा. रामविचार पांडेय (ख) कुलदीप नारायण 'झड़प'

(ग) प्रसिद्ध नारायण सिंह (घ) रामवृक्ष राय 'विधुर'

5. फतेहशाही का कवना बात के चिंता सतावत रहे कि रात के नींने ना लागे ?

(क) अंग्रेजी सेना गढ़ घेरे लेले रहे

(ख) राजमहल के सुख छिना गइल रहे

(ग) जमाल के कइसे मार गिरावल जाय

(घ) एह में से कवनो ना

6. फतेहशाही से अंग्रेज काहे भयभीत रहले स ?

(क) युक्तिपूर्वक छापामार युद्ध कइला से

(ख) गोविन्द राम का बाद मीर जमाल के वध कर देला से

(ग) बंकजोगिनी का वन में लुका गइला से

(घ) एह में से कवनो कारण से ना ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फतेहशाही के 'प्रथम क्रांतिकारी वीर' काहे कहल गइल बा ?
2. मीर जमाल का पहिले शासन के भार अंग्रेज केकरा के देले रहले स ?
3. मीर जमाल के शासन के भार मिलला के मिलल, 'क्रांट क सेज' काहे कहल बा ?
4. कवना चिंता-फिकिर में फतेहशाही के तीन पहर रात ले नीन ना पड़ल ?
5. रात का अंतिम पहर में राजा अपना सैनिकन से कऽ कहले ?
6. राजा फतेहशाही अपना सैनिकन से 'अबहीं तनिका दम भरीं' काहे कहत बाड़े ?
7. राजा का पुकार पर बहुराइल लोग के मन में उछाह काहे भरल रहे आ बाँह काहे फरकत रहे?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. महाराजा फतेहशाही अंग्रेजन के विरोध काहे कइले ?
2. मीर जमाल के वध काहे करे के पड़ल ?
3. कविता के सारांश लिखीं ।
4. 'बंकजोगिनी' आ 'हुस्सेपुर' का बारे में पाँच पंक्ति लिखीं ।

भाषा आ व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दन में भाववाचक संज्ञा बनाईं–

   वीर, शुद्ध, निर्जन, क्रांतिकारी, युक्त ।

2. नीचे दिहल मुहावरा के अर्थ लिखीं–

   रारि कइल, जस गावल, काँट के सेज मिलल, खोद के सिंह जगावल, फेर में ना पड़ल, नीनि ना लागल, मुँह खुलल, लोकि लिहल

परियोजना कार्य

1. आजादी का लड़ाई में भाग लेवे वाला केहू रउरा गाँव-जवार में भइल होखे त ओकरा बारे में पता करके जानकारी बटोरीं आ एगो निबंध लिखीं ।
2. जनपदीय आंदोलन के संबंध में जानकारी प्राप्त करीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्द-भंडार

नृप	–	राजा,
रणधीर	–	युद्ध में जे धीरज राखे,
कुमार	–	पुत्र, बेटा
रारि	–	झगड़ा, लड़ाई
गढ़	–	महल,
युक्ति	–	उपाय
घात	–	धोखा देके वार कइल
लुकाइल	–	छिप गइल
रिपु	–	दुश्मन, बैरी
ढेर	–	ज्यादा
उतजोग	–	उपाय
तत्काल	–	तुरंत
सिरमौर	–	सबसे ऊपर
अबेर	–	देर
अरि	–	दुश्मन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : छव

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा

विषय प्रवेश

डा० भीमराव अंबेडकर के जीवन प्रेरणा से भरल बा, उहाँ के जीवन यात्रा शून्य से शिखर पर पहुँचे के कथा कह रहल बा । ज्ञाने का बले उहाँ के बड़-बड़ लड़ाई लड़नी आ जीतबो कइनी । उहाँ के जीवनी संकट से ना घबड़ाये के सीखावता ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

भारत-रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर

भारत के इतिहास में डॉ. भीमराव अंबेडकर के नाँव कबो भुलावल नइखे जा सकत। इहाँ के भारतीय संविधान के जनक कहल जाला। दलित, शोषित आ वंचित वर्ग के सामाजिक सम्मान आ अधिकार दिलावे खातिर अंबेड़कर जी बहुते संघर्ष कइलीं।

इहाँ के जनम 14 अप्रैल 1891 के मध्यप्रदेश के महू नगर में भइल रहे। इहाँ के माई के नाँव श्रीमती भीमाबाई आ बाबूजी के नाँव श्री रामजीव राव मालोपी राव रहे। पिता जी सेना में सूबेदार मेजर रहीं आ, इहाँ के मूलतः महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिला के बासिन्दा रहीं।

अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा सतारा में भइल। आगे के शिक्षा मुम्बई में प्राप्त कइलीं। आगे के शिक्षा पावे खातिर उहाँ के विदेश गइलीं। उहाँ के अमेरिका के कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर आ इंगलैंड के लंदन विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. के उपाधि प्राप्त कइलीं। लंदने से उहाँ के बैरिस्टर के शिक्षा पवलीं। ओह घड़ी के सामाजिक व्यवस्था भेदभावपूर्ण रहे। डा. अंबेडकर के डेग-डेग पर बाधा-विघ्न के सामना करे के पड़ल। पढ़ाई पूरा करे खातिर उहाँ के लगे रुपया-पइसा भी ना रहे। बाकिर एह सब से उहाँ के घबड़इनी ना। कहल बा कि जहाँ चाह उहाँ राह। बड़ौदा नरेश उहाँ के छात्रवृत्ति दिहलीं।

डा. अंबेडकर के असली ताकत उहाँ के ज्ञान रहे। एकरे बले उहाँ के पूरा दुनिया से आपन लोहा मनववलीं। बाकिर ई ज्ञान उहाँ के सहजे ना मिलल। एकरा के पावे खातिर तरह-तरह के कष्ट उठावे के पड़ल। उहाँ के कहनाम रहे कि शिक्षा एगो अइसन चाभी ह जवना से दुनिया के सभ ताला खुल जाला। उहाँ के शोषित-पिछड़ल लोग के हर हाल में शिक्षा प्राप्त करे के सलाह दिहलीं।

उहाँ के हिंदू धर्म के भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से उबल रहीं। उहाँ के एह व्यवस्था में बदलाव चाहत रहीं। एह मुद्दा पर उहाँ के विचार महात्मा गाँधी से अहलदा रहे। डा. अंबेडकर के माँग पर सन् 1932 में ब्रिटिश सरकार अनुसूचित जाति के लोग खातिर पृथक निर्वाचक मंडल के घोषणा कइलस। एह में ई व्यवस्था रहे कि अनुसूचित जाति के लोग आपन प्रतिनिधि अपने वोट से करी। महात्मा गाँधी एह व्यवस्था के खिलाफ आमरण अनशन कइलीं। डा. अंबेडकर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महात्मा गाँधी के मान राखत पृथक निर्वाचक मंडल के जगे दोसर व्यवस्था पर सहमत हो गइलीं। एह दूनों महापुरुषन के बीच एगो समझौता भइल जवन 'पूना पैक्ट' के नाँव से जानल जाला।

देश आजाद भइला पर संविधान बनावे के काम शुरू भइल। एह काम खातिर एगो प्रारूप समिति के गठन भइल। बड़ा सोच विचार के बाद डा अंबेडकर के एह समिति के अध्यक्ष बनावल गइल। उहाँ के बड़ी परिश्रम, लगन आ सूझबूझ से एह जिम्मेदारी क निभवलीं। संविधान बनावे में उहाँ महान योगदान के देखिएके उहाँ के 'भारतीय संविधान के पितामह' कहल जाला।

उहाँ बड़हन विद्वान रहीं। उहाँ के कई गो किताब लिखलीं, जवना में प्रमुख बा-जाति का उच्छेद, शूद्र कौन ? कांग्रेस और गाँधी ने अछूतों के लिए क्या किया ? भगवान बुद्ध और उनका धम्म। उहाँ को 'मूक नायक' नाँव के एगो पत्रिका निकालत रहीं। उहाँ के आपन बात बड़ा तार्किक रूप से रखत रहीं जवना से विरोधियो लोग प्रभावित हो जात रहे।

तत्कालीन हिंदू धर्म के भेदभाव से उबिया के उहाँ का 14 नवम्बर, 1956 के बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिहलीं। उहाँ के संगे आउर लाखन अनुयायी लोग बौद्ध हो गइल। 6 दिसम्बर 1956 के अंबेडकर जी के निर्वाण हो गइल। उहाँ के मरला के बहुत दिन बाद सन् 1990 में भारत सरकार देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' के उपाधि से विभूषित कइलस। भारतीय समाज के समरस बनावे खातिर अंबेडकर जी जवन संघर्ष कइलीं आ भारतीय संविधान के निर्माण में योगदान दिहलीं-एह में उहाँ के सिद्धांत आ विचार आजो प्रेरक बा आ उहाँ के नाँव हमेशा अमर रही।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. भीमराव अंबेडकर के जनम कब भइल रहे ?

(क) 1884 में (ख) 1991 में

(ग) 1885 में (घ) 1917 में

2. अंबेडकर के पिता रामजीव राव मालोपी मूलतः कहवाँ के बाँसिन्दा रहीं ?

(क) मध्यप्रदेश के (ख) उत्तरप्रदेश के

(ग) महाराष्ट्र के (घ) गुजरात के

3. श्रीमती भीमाबाई अंबेडकर के के रहस ?

(क) मातारी (ख) बहिन

(ग) मौसी (घ) फुआ

4. अंबेडकर के बाबूजी सेना में का रहीं ?

(क) सूबेदार (ख) मेजर सूबेदार

(ग) हवलदार (घ) कैप्टन

5. अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा कहाँ भइल ?

(क) सतारा में (ख) पुणे में

(ग) मुम्बई में (घ) लखनऊ में

6. अंबेडकर का समय समाज कइसन रहे ?

(क) समरस (ख) भेदभावपूर्ण

(ग) उपद्रवी (घ) शोषित

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डा० अंबेडकर के प्रारंभिक शिक्षा लेवे में काहे दिक्कत होत रहे ?
2. डा० अंबेडकर के उच्च शिक्षा खातिर के मदद कइल ?
3. डा० शिक्षा का बारे में अंबेडकर के का कहनाम रहे ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. शोषित-वंचित लोग खातिर अम्बेडकर जी के का सलाह रहे ?
5. अनुसूचित जाति के लोग खातिर पृथक निर्वाचक मडल के घोषणा कब भइल ?
6. 'पूना पैक्ट' में का रहे ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अंबेडकर जी काहे बौद्ध बन गइली ?
2. अंबेडकर जी के संघर्ष भरल जीवनी अपना शब्दन में लिखी ।

व्याकरण

1. नीचे दिहल शब्दन से विशेषण बनाईं–

समाज, शिक्षा, बाधा, शोषण, सहयोग

परियोजना कार्य

1. अपना गाँव-जवार के केहू अइसन आदमी का बारे में लिखीं जे दलित समुदाय का हक खातिर संघर्ष कइले होखे ।
2. अपना क्षेत्र मे धूम के दलित समुदाय के चिंतित करीं आ बतलाई कि ओमें शिक्षा के स्थिति एहघड़ी कइसन बा ?

शब्द-भंडार

डेग-डेग – कदम-कदम पर

बसिन्दा – मूल निवासी

अलहदा – अलग, फरके

उबियाइल – उबल

निर्वाण – बौद्ध धर्म के अनुसार मृत्यु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बाएन

अध्याय-सात

तकषी शिवशंकर पिल्लै

तकषी शिवशंकर पिल्लै के जनम सन् 1914 ई. में केरल के तकषी में भइल रहे। शुरू में वकालत के परीक्षा पास कके वकालत कइलीं आ किसानों के रूप में काम कइलीं।

आधुनिक मलयाली साहित्य में इनकर स्थान अप्रतिम बा । कहल जाला कि मलयालम में आधुनिक कहानी के प्रवर्त्तक बाड़न । इनका कहानी के सबसे बड़ा खूबी बा सरल आ सुस्पष्ट भाषा। इनका कहानी में सामान्य तबका के आदमी के जिनिगी के दुख दर्द आशा-निराशा आ ओकरा बेचैनी के चित्रण बड़ा बारीक ढंग से कइल गइल बा । इहे कारण इनका कहानियन के सामान्य जन के बीचे प्रतिष्ठित होखे के । ई प्रगतिशील आंदोलन से जुड़के लोगन खातिर काम कइले आ मशाल के रूप में अग्रणी भूमिका निभवले ।

साहित्य के हर विधा में काम करेवाला तकषी जी के करीब पचास साठ गो किताब प्रकाशित होके प्रशंसित हो चुकल बा । साहित्य अकादमी से पुरस्कृत इहाँ के उपन्यास 'चेम्मीन' के अनुवाद भारत आ विदेश के कईगो भाषा में कइल गइल बा । एकरा अलावे कई गो आउर प्रतिष्ठित पुरस्कार इनका मिल चुकल बा ।

कहानी के अनुवाद पाठ्य-पुस्तक निर्माण कार्यशाला में कईल गइल बा ।

विषय-प्रवेश

'मत्तन के कहानी' के मूल कथा सामाजिक विषमता आ शोषक शोषित के कार्य व्यवहार आ सामान्यजन के उत्पीड़न के बा । एह में एगो कमजोर वर्ग के गरीब आदमी मत्तन के कथ्य बा जवन आपन पेट काट के पइसा जमींदार चाको किहाँ जमा करत बा, आ अपना बेटी के बियाह के बेटा जब ऊ पइसा माँगत बा तब जमींदार इंकार कर जात बा, आ मत्तन के हत्या करवा देत बा । एह कहानीं में केरल के ग्रामीण जीवन के वैषम्य उभर के सामने आइल बा । जे भोजपुरी भाषा-भाषी इलाकनो के साँच बा, आ एहमें एहीजा के शोषण-उत्पीड़न के झलक मिलत बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहानी

मत्तन के कहानी

"माई, बाबूजी आजो ना अइहें का ?" प्रार्थना के बीचे त्रेसा अपना माई से पूछलस।

प्रार्थना करत खा मरिया के ध्यान घाट पर से आवत नाव के आवाज पर लागल रहे। ऊ कहलस "अइहें बेटी, आजे अइहें।"

मरिया आठ दिन खातिर प्रार्थना कइली आ सामने परोसल भोजन के प्रति आभार जतवली। त्रेसा आंसही देखली। हाथ फइला के माथा एक ओर झुका के, कपड़ा तनीसा सरका के, खाली पेट, अधा खुलल ओठ, अन्हुआइल आँखन से खंभा के उपर लटकत आकृति के आँख टिका के देखलस। टिमटिमात दीया के मद्धिम अँजोर में आकृति के ओठ हिलत लउकत। बुझाइल जे भगवान कुछ कहल चाहत होखस। "रक्षा करीं भगवन।" फेर उहे प्रार्थना ! त्रेसा कुछ ना बोलल।

बगल में सूतल रोसा कुछ बड़बड़ा उठल। त्रेसा फेर पूछलस, "बाबूजी ना अइहें त हमनी खाना कइसे खाइब ?"

"खाइल जाई बेटी।"

दीया बुतायेवाला बा। मरिया उठके एक बेर दीया हिला के देखली। रात गहिरा गइल रहे। बरखा बरखे लागल रहे। हवा तेज हो गइल रहे।

ऊ चुपे-चुपे प्रार्थना कइलस। ऊ प्रार्थना अब तक अबूझ रहे। चार-पाँच फीट गहिर पानी आ नदी के बहाव के रोक के जाये के बा। अइसे पहाड़ के तलहटी तक गइल बाड़ें। झील के कूल-किनारा के पता ना चले। एकदम सून-सनाटा, कहीं चिरईं के पूतो ना लउके जे मोका प मदद कर सके। नदी में गबरो खूबे बा। हाथ के बाँस अगर टूट जाई तब ? -ई विचार मन में आवते ऊ ईसा के चरण से लिपट गइल। आखिर ओकरा दू गो लइकियो बाड़ीस।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त्रेसा फेरू पूछलस–"बाबूजी एह बरसात में कहाँ होइहें । बरखा में भींजला से बोखार ना लागी का ?"

मारिया आँख खोलली । ओकरो में उहे कमी बा । दीया अब बुता जाई । घाट पर से नाँव के आवाज सुने के आस में दूनो भाई-बेटी बाहर का ओर देखली–घुप्प अन्हरिया रहे आपन हाथ तकले आ देखाई देत रहे ।

"माई, बाबूजी !"

"बेटी त्रेसा ।"

बहरी केहू बोलावत बा ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL * PATNA *

"रानी दीया देखाव त बेटी ।"

"दीया बुता गइल, बाबूजी ।"

त्रेसा दीया लेके दोबारा दुआर प आइल । बकिर फेरू दीया बुता गइल ।

मत्तन ओसारा में आइले । उनका हाथ में एगो छड़ी आ एगो बड़ पोटली रहे ।

"दीया देखाव बेटी ।"

"आग नइखे, बाबूजी ।"

त्रेसा अंहरिया में बाप के गला मिले खातिर टकटोरत बाकिर बाबू जी के कहीं पता ना रहे। रोसो जाग गइल रहे । उहो बाबू के आवाज देलस आ उनका के पकड़े में ओकर माथा त्रेसा के ओठ से टकरा गइल ।

"बोरसियो में आग नइखे का ?" मत्तन पूछले ।

आज घर में आगो ना जरल । ई सोच के मत्तन के दिमाग गरम हो गइल । आज बोरसियो ना जरल ।

"आज लइको कुछ ना खइले होइहें स ?"

मत्तन बरखा से भींजल रहे । पहिले रोसा के ऊ उठा के गोदी में ले लेहले ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"एकनी के थोरे आ साँझ के धिया देल रहीं । रात खातिर कुछुओ न रहे ।" मारिया कहलस "पड़ोसिया से लइकन के बहुत कुछ मिल गइल रहे । आज कवनो काम ना हो सकल थारहो से बरखा बरखत बा ।"

"तब त तूहूँ कुछ ना खइले होइबू ?" मतन अपना मेहरारू से पूछले ।

"ना ।"

बेटी के नीचे बइठा के मतन आग ले आवे चल गइल । आह दिन आधा रात खा घर में दीया जरल बाकिर ओकरा बादो केहू सूतल ना । दूना बतिआवत रहले स ।

मरद कहलस "तीन रोपआ देलीं । ओकरा बाद मोटर प चढ़के एरणाकुलम चल गइलीं।"

"तब हई चार आना ?"

"पाले में कॉफी पीये खातिर देल रहीं । दलिया ना रहे । हम काफी ना पीयले रहीं।"

"चाउर कहाँ स....।"

"राह खर्च में से बचा लेले रहीं ।"

"कतना बा ?"

"दू प्रउवा ।"

मारिया मतन के गइला के बाद सब हाल कह गइली । दू दिन पत्तल बनावे मट्टक्काट्ट गइलीं । नौ आना मिलल । एक दिन तरभुरम में चाउर ठीक कइली । एक दिन चार गो नरियर बेचलीं । बाकिर आज पानी बरिसत रहे एह से बाहर ना निकलली ।

"हम लइकन के भूखे नइखीं रखले ।"

"बाकिर तूँ त भूखे रहलू ।"

फेर चुप्पी । ई चुप्पी सुतला के ना चिंता के रहे । ओह चुप्पी से कबो आवाज उठ सकत रहे ।

"अब केतना होई ?"

"चउदह ।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"का ई सब पइसा देवे जात बाड़ ।"

"ना त अउर का । एक साल में अतना हो सकल । ओकरो उमिर त आठ बरिस के हो गइल। पाँच-सात साल अउर बाकी बा ।"

कुछ देर चुप रहला के बाद मत्तन कहलस–"दस पइसा जादहीं दे देब त अच्छा रही, वरो अच्छा मिली । हँ, हमरा तनी कष्ट जादे सहे के पड़ी ।" मारिया सहमत हो गइल। आगे दिन के बारे में सोचत-सोचत ऊ दूनों सूत गइले स । ऊ दूनो सपना देखत रहले स.... बेटी के शादी.. ... ओकर घर.... ।

भोर होते मत्तन अरच्चरा पहुँच गइल । तब ले चाक्को से मिले खातिर चार-पाँच लोग आ गइल रहे ।

चाक्को ओहिजा के धनी आदमी बाड़न । उनका पाले बहुत सा खेत बा जमीन-जायदाद बा,।

उनका धन के बारे में कईगो खिस्सा लोक में प्रचलित बा । उनका में घमंड ना सहानुभूति बा । ऊ हरमेस मीठ बोलेलन । उनका मुँह से दोसरा खातिर कबो खराब बात ना निकले । भगवत-भक्ति के बारे में त कुछ कहे के नइखे । हर एतवार के बि ना नागा कइले गिरिजाघर जालन । ईश्वर के भुला के कुछो ना करस । अबहीं हाले में गिरिजाघर खातिर एक हजार रोपेया दान देलन हा ।

चाक्को नींद से उठके बहरी अइले त मत्तन के देखले ।

"कब अइले, मत्तन"

"काल्ह रात के ।"

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

मत्तन के चाक्को से एकांता में बात करे के रहे, बाकिर ओहिजा चार-पाँच आदमी बइठल रहे। मिले खातिर त लोग आवत-जात रहे । मत्तन के कष्ट भइल ।

चाक्कोचन के बेटी उनका के कॉफी पीये खातिर बोलबलस । सब आदमी के बइठत छोड़के ऊ कॉफी पीये चल गइल । साथ में मत्तनों रहे । थोड़े देर में मत्तन बहरी आ गइल। ओकर चेहरा खिलल रहे । ऊ तीन रोपेया चाक्को के सऊँप देले रहे । एह तरह अबतक त्रेसा के बियाह खातिर चउदह रोपेया एकट्ठा कके ओकरा संतोष भेटाइल ।

चाक्को के मेहरारू मत्तन के लकड़ी काटे खातिर बोलवली । लकड़ी कटला के बाद चाक्को

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अपना काम खातिर बोलवलस । खेत में जहाँ हल जोतात बा, चाक्को के ओहिजा जाये के बाद । नाव खेवे के काम मत्तन के बा ।

नाव प जात खानी मत्तन चाक्को के खूब गुनगान कइलस । सऊँसे गाँव के लोग चाक्कोच्चन के जानेला ।

मत्तन चाक्को के बेटी खातिर एगो वर देखले बा । बहुते धनिक लोग बा । बाग-बगइचा बा।

"साँचल जाई"

"साँचल जाई", चाक्को जबाब देले ।

खेत प पहुँचला के बाद गायन के चरी देबे के काम मत्तन के जिम्मे क देल गइल। चरी देला के बाद नारियल के पत्ता ठीक कइलस । फेरू दस मन चाउर लेबे के बा, अइसन बहुत काम रहे । एही में साँझ हो गइल ।

मत्तन काम करत-करत अतना थाक गइल रहे कि खड़ा ना भइल जात रहे । रसोईघर के पास जाके ऊ गरम पानी मँगलस । पानी गरम ना भइल रहे । चाउर खदकत रहे। ओही घड़ी चाक्को ओहीजा पहुँच गइले ।

"अरे, अब पानी पीये के टाइम कहाँ बा ?"

थोड़ा लजात मत्तन कहलस "कुछ ना, तनी थकावट......"

"दुपहरिया में तक भरपेटा खइले होइबे ?"

"कुछ नइखीं खइले !"

"काहे ?"

"घर में कुछ रहले ना रहे ।"

"अच्छा तनी काम करेवालन के मजूरी दे दे ।"

मजूरी बाँटत-बाँटत अउर साँझ हो गइल ।

चाक्को के प्रार्थना के समय रहे । मत्तन देह तक सीधा ना क सकत रहे । ओकर मन दुखित रहे । ईसर खुजुआवत मत्तन चाक्को के पीछे-पीछे चले लागल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"का तोरा जाये के नइखे का ?"

"कुछ धान........"

"चावल ! केकरा खातिर ?''

"लइकन खातिर घर में कुछो नइखे ।"

"हम तनी प्रार्थना क के आवत बानी ।"

ABSOL PATNA

मत्तन सोंचलस कि ओकरा छव सेर धान माँगे के चाही । चार सेर मजूरी के रूप में आ दूसेर आज के भोजन खातिर ।

अबहीं केहू के पाले पहुँचावे खातिर मत्तन के जाये के बा बाकिर अब ओकरा देह में ताकत नइखे रह गइल । लोग के कहनाम बा कि अब ऊ कवनो काम लायेक नइखे रह गइल ।

मत्तन लोगन के आगे हाथ जोड़ के कहत फिरे–"हमरा के काम पर बुलाईं ।"

काम खातिर जब लोगन के केहू ना मिले तब लोग मत्तन के बोलावे । अब ओकरा के मजूरियो दिहल भार बुझात रहे । एकरा बादो ऊ लोगन से हिसाब माँगत चाक्को के घरे मत्तन के करे जुगुत बहुते छोट-छोट काम रहे । जब कहीं काम ना मिले त ऊ ओहिजे चल जाला। काम निपटवला के बाद चार सेर धान माँग लेवे । एही तरे ओकर दिन कटत रहे बाकिर अइसन दिन करला से का फायदा ? कपड़ा पेन्हे के बा तेल लगाने के बा । गिरिजाघर में चंदा देवे के बा, बाटिन के पढ़ावे के बा, ई सब चाक्कोचन के मदद से चल रहल बा। एकरा अलावे घर के कवनो आदमी के बेकारी-हेमारी में टहल-टिकोरा खातिर मत्तन के बोलावल जाय। अगर मत्तन ना होइत त का होइत ?

"हमहूँ इहे सोचत बानी ।"

"हं, का करि आदमी ?"

चाक्कोचन मत्तन खातिर देवता बन गइल रहले । कतना दयालु आ भगवान के भगत बाड़न ।

मत्तन के सपना बेटी के सुंदर रूप देवे के रहे । ओकनी के जीवन-संघर्ष के अनुमान ओकनी के काम देख के लाग जात रहे । बच्चा जनमला के बाद हाथ-पैर हिलावत उठत-गिरत, बकोइयाँ चलत बड़ हो गइले स । बेटी सब धीरे-धीरे संयान हो गइली स । अब अ स्कूल जाये लागल रहीस ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अतने ना, ओकनी के जिनिगी के साथ साथे एगो हिसाब अउर बढ़त जात रहे जे जिनिगी भर ना मिटे वाला रहे । जवन ओकरा [illegible] में रहे । दिन प दिन हिसाब बढ़त रहे। मत्तन चाक्को के हाथ में रोज कुछ ना कुछ धातो सउँपत रहे । ऊ [illegible] बढ़त-बढ़त नब्बे रोपेया ले हो गइल रहे ।

रोज साँझ के दूनो मरद-मेहरारू बतिआवस-''आखिर हमनी के एकनिये खातिर नूँ सब सहत बानीं ।'' आ हिसाब किताब जोड़स ।

मेहरारू पूछस -"कतना रोपेया देला प एगो साधारण बर मिल जाई ?'.

"दस हजार आना रहला पर अइसन बर मिल जाई जेकरा पाले रहे खातिर आपन घरो होई।''

ऊ पूछे-"अतना पइसा जमा करे में कतना दिन लागी ?''

एह तरह से ओकनी के दिन कटत रहे । आ ऊ पइसा एकट्ठा करत रहल से । इहे विचार ओकनी के खुशी से भर देत रहे । भूखे पेट सूतलो प ओकनी के कवनो गम ना रहत रहे । ओकनी के मन हमेशा ई सोच के खुश रहत रहे कि बेटिन के बियाह खातिर ऊ पइसा एकट्ठा करत रहे ।

मत्तन के खुशी भरल चेहरा गाँव में जग-जाहिर रहे ।

त्रेसा रोज बाप-मतारी के बतकही सुनत रहे । रोज-रोज पइसा बढ़त रहे । कबो-कबो हिसाब जोड़े में गलती होखे । त्रेसा ई जानला के बादो कि हिसाब गलत बा कबो कुछ ना कहत रहे । ओकरा मुँह से कवनो शब्द ना निकले । आखिर ऊहो त औरते बिया ।

एह सबके बादो त्रेसा के भीतरे स्वाभिमान आ धीरज बा । ओकरा स्थिति अतना खराब नइखे । मछली वाला तोमा के बेटी एक दिन कहत रहे कि ऊ गरीब बाड़ीस ।

त्रेसा कहलस-''हमनी गरीब भइला के बादो गरीब नइखी स ।''

ओकरा बात बिना समझले चाक्को के बेटी हँस देलस । त्रेसा जोश में फेरू उहे बात दोहरवलस ।

हँ, त्रेसे ओकर अर्थ बूझेले । दोसरा के ई बात ना समझ में आई ।

एक दिन दुपहरिया में त्रेसा अपना सहेलियन के साथे स्कूल के सामने खेलत रहे तबे बैंड-बाजा के आवाज सुनाई पड़ल । आवाज सुनके ऊ घर के ओर धउरल । एगो बियाह के जुलूस रहे । ऊ सब बिआह क के लवटत रहलन स । मारिया ओकनी के जानत रहे। ऊ बतवलस

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कि "ओकरा घर के बगल में रहेवाला अला बाड़न । आ ऊ लड़िका आविच्चेरि के बा ।" कनिया ओकरा ओर देखलस । देख के ऊ हँस देलस ।

त्रेसा पूछलस-"दहेज कतना मिलल बा ।"

"हमरा नइखे मालूम ।" मारिया जबाब देलस ।

त्रेसा बियाह के जुलूस देख के मूरत अइसन ठाड़ रहे । ओकरा मन में विचारन के आन्ही चलत रहे । अ अपने आप में खो गइल रहे । अगल-बगल में का होत बा ओह सबसे बेखबर। पता ना ओकरा मन के हिरण कहाँ-कहाँ धउरत रहे ।

ओकर सब सखी जा चुकल रही स । थोड़ा दूर आगे गइला प मारिय धूम के पीछे देखलस आ त्रेसा के आवाज देलस । आवाज सुन के त्रेसा के ध्यान टूटल । ऊ धउरत अपना सहेलियन के पास पहुँच गइल । ओकर एगो सखी टिहोका लेलस-"ओहिजा खड़ा-खड़ा अपना बियाह के सपना देखत रहू का ?"

दोसर की पूछलस-"र कहाँ के ह ?"

तीसर की पूछलस-"दहेज कतना मिलल हईस ।"

त्रेसा के मन खिसिया गइल । अ अपना सखी सब प गुस्सा गइल । एह प सखी सब हँसे लगली स ।

त्रेसा कहलस-"हँसत काहे बाड़ू लोग । हमार भाई-बाबू हमरो खातिर दहेज एकट्ठा करेला लोग ।" अतना कह के ऊ ओहिजा से चल गइल ।

कुछ साल अउर बीतल । मत्तन के हिसाब काफी बढ़ गइल रहे । ओकरे साथे त्रेसो जवान हो गइल रहे । अब ऊ भरपूर औरत बन गइल रहे । अब बेटी के बराबर लइकिन के बाप के परेशान देख के मत्तन के भीतरे खुशी लहर मारे । ओकरा बेटी के अच्छा घर-वर मिली ।

जब दूनो मरद-मेहरारू हिसाब करे बइठस त त्रेसा के मन में लड्डू फूटे । ओकरा खातिर कहीं एगो राजकुमार बइठल होई । कइसन होई ? का करत होई ? कुरता आ टोपी पेन्ह के ओकरा गरदन में मंगल-सूत्र पहिरावे वाला के छवि ओकरा मन में आवत जात रहे। .....ससुराल.... ! कइसन होई घर ? घर आ जमीन उनके होई नूँ । ऊ खूब प्यार करी । सेवा करी..... आ बदला में उनकर प्यार मिली । उहो माँ बनी ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

त्रेसा इहे कुल्हि सोचत रहे । जब अनजान मरद ओकरा के जगाई तब ऊ लजा जाई।

कवना उमिर में हमार बिआह होई ? सोलह साल में बियाहल कईगा साखयन के इयाद ओकरा आइल । ऊ सतरह बरिस के भइल । हमरा उमिर के बारे में बाबू के साइद ठीक से ना मालूम होई, बाकिर माई त ठीक-ठीक जानेले ।

एक दिन मारिय मत्तन से कहलस–"अइसे बइठला से काम ना चली । बेटी के सतरहवाँ चल रहल बा ।"

"हूँ ।" त्रेसा लम्हर साँस खींचलस । मत्तन कहलस–"हमरा ध्यान में बा । अच्छा लइका खोजे के बा ? भले चार पइसा जादे लागे ?"

कुछ दिन के बाद मत्तन पाले गइल । लवटल त मेहरारू के बतवलस–"लइका मिल गइल बा । बीस बरिस के गबरू जवान बा । बीड़ी तक ना पीये । बाप-मतारी के एकलउता बेटा बा । अउर त अउर ओकरा पाले एक एकड़ जमीनो बा । अगिला एतवार के लइकी देखे अइहनस ।"

"का देवे के बा ?"–मारिया पूछलस ।

"पाँच हजार आना ।"

त्रेसा अपना मन के आँख से ससुरा के घर आ जमीन के देखलस । उनकर माई-बाबू होइहें । उनका साथे जिनगी आराम से कटी ।

अगिला एतवार के ऊ लइकी देखे अइलन स । ऊहो अपना होखेवाला मरद के देखलस। लइको ओकरा के देखलस । त्रेसा खुशी में फूल के कुप्पा हो गइल ।

बियाह तय हो गइल । दहेज तय भइल पाँच हजार आना । बियाह के दिनो धरा गइल । गिरिजाघर के पादरिया तारीख के ऐलान कइलस । त्रेसा के बाबू अगिला एतवार के दहेज पहुँचाके के वादा कइले ।

त्रेसा के मन में लड्डू फूटल रहे । ओकर सखी सब मजाक करे लागली स । बियहलखी सब आपन-आपन अनुभव सुनावस । ऊहो दिन गिने लागल रहे ।

दूनो मरद-मेहरारू बइठ के हिसाब लगावत रहले । दहेज, बियाह आदि के बादो कुछ पइसा बाँचे के चाही । आखिर रोसो खातिर त पइसा चाही ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पाले जाये कि दून पहिले मारिया बगल के घर से लौट के बतवलस कि "चाक्कोच्चन आया है ।"

"चाक्कोचन आया है । काल्ह सबेरे ऊ बाजार जाई । ओकरा पहिले कोट्टयम जाई। आजे रोपेया ले आके रख ली ।"

"ई कइसे । एतवार के ओकर मेला बा ।"

"ओकर इंतजाम करे के बा ।" मत्तन पीछे के घर में गइल । मत्तन के देखके चाक्को मुस्काइल ।

"बुझत बा, सब इंतजाम हो गइल ।"

"हँ । ऊ हाँ से आधे इन्तजाम पूरा हो जाये कि उम्मेद बा ।"

"दहेज कतना देबे के बा ?"

"पाँच हजार आना ।"

"तब त सब खरचा मिल के सात हजार लाग जाई ।"

मत्तन कुछ कहलस ना खाली हँसत रहल ।....

चाक्काच्चन लइका के बारे में पूछलस ।

मत्तन सबकुछ फरिया के बतवलस ।

"पइसा कहाँ से आई । कहीं गाड़ के रखले बाड़े का ?"

मत्तन सुनके भकुआ गइल । ई ओकरा जिनिगी के पहिला सदमा रहे। ऊ भकुआइल खड़ा रहे । मुँह से बकार तक ना निकलल ।

"इहाँ थोरकी-थोरकी दिहल पइसा.... ।" एकरा आगे ऊ कुछ ना कह सकल।

"थोरकी-थोरकी दिहल पइसा ?" चाक्को पूछलस । चाक्को के आवाज मत्तन के कान में गरम सीसा अइसन सन्न से घुस गइल ।

चाक्को कहले–"सबकर हिसाब हमरा पाले बा । तोर लेल आ पहिले के बाकी दू रोपेया यानि कुल सतरह रोपेया तोरा देबे के बा अबही ।"

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

"हम ले ले बानी ।"

"हँ ।"

"हम.... हम त मेहनत मजूरी क के..... ।"

"तूँ एहिना काम कइले । भगवान प भरोसा कवेवाला कवन धर्मात्मा तोरा से काम करवाई । बोका कहीं का ।"

"हम पत्ता काटलीं..... । गाय के देखभाल कइली ।"

चाक्को ठठा के हँसल ।

"ओकर मजूरी ।" मत्तन माथा ध के बइठ गइल ।

चाक्को कहलस—"लइकी के भाग ठीक होई त सब ठीक होई । हमहूँ पनरह रोपेया देब । भगवान सब जानत बाड़न ।"

दू-तीन गो बड़का लोग आ पुरोहित घाट पर अइल । चाक्को आगे बढ़ के स्वागत कइलस।

रात गहरा गइल रहे । मत्तन के घर के दीया बुता गइल रहे । आबादी ले ऊ लवटल ना रहे । दीया बुतइला के बादो मतारी-बेटी पड़ा हेरत रही ।

दोसरा दिने मारिया तरप्पुरा गइल । कुछ लोग ओकरा के देखबो कइल बाकिर कुछ कहल ना ।

मत्तन दोसरे दिने ना आइल । अरधुरम में जनम दिन के धूमधाम रहे ।

दोसरा दिने एतवार रहे । चाक्को के मेला लागल रहे । एगो लाश घाट पर आके लागल बा । हाथ-गोड़ रस्सी से बान्हल रहे । ऊ मत्तने होई । मेला के चारो दिशा से-चाक्को के ईश्वर भक्ति के तारीफ के आवाज गूँजत रहे । आ मत्तन से लिपट के रोवत माई-बेटी के आवाज ओह गूँज में कहीं गुम हो गइल रहे ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''बाबूजी ना अइहें त हमनी खाना कइसे खाईब ।'' ई के कब आ केकरा से कहले बा ?
2. मत्तन कवन काम करत रहल ?
3. त्रेसा आ मत्तन के बीचे कवन रिश्ता बा ?
4. चाक्को मत्तन के के रहले ?
5. ''दस पइसा जादहीं देब त वरो अच्छा मिली ।' – ई कथन केकर ह ?

   (क) मारिया (ख) त्रेसा

   (ग) चाक्को (घ) रोसा
6. "तब त सब खरचा मिला के सात हजार लाग जाई ।" केकर कहल बा ?

   (क) मत्तन (ख) चाक्को

   (ग) त्रेसा (घ) मारिया

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. त्रेसा काहे खाना ना खात रहे ?
2. त्रेसा आ ओकर सखी सब बारात जात देख के का कहली ।
3. चाक्को दहेज के सुन के मत्तन के का कहले रहले ?
4. 'मत्तन के कहानी' पढ़ला के बाद मन में कवन भाव पैदा होत बा ।
5. मत्तन भोरे-भोरे अरच्चरा काहे खातिर गइल रहे ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'मत्तन के कहानी' से का शिक्षा मिलत बा ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. कहानी के सारांश लिखीं ।

3. मत्तन के चरित्र-चित्रण करीं ।

सप्रसंग व्याख्या

1. "जब दूनो मरद मेहरारू हिसाब करे बइठस त त्रेसा के मन में लड्डू फूटे ।"

2. "ई ओकरा जिनगी के पहिला सदमा रहे । उ भकुआइल खड़ा रहे । मुँह से बकार तक ना निकलल ।"

परियोजना कार्य

1. कवनो दोसर पढ़ल आ सुनल कहानी लिखीं जवना में गरीब के शोषण कइल गइल होखे।

2. अपना गाँव के चाक्को अइसन मातवर आदमी के चुन के ओकर चरित्र-चित्रण करीं।

3. एह कहानी में आइल कथावस्तु के अपना भाषा में लिखी ।

4. अपना गाँव आ अगल-बगल में घटल घटना जे मत्तन के कहानी से मिलत-जुलत होखे ओकरा के अपना भाषा में लिखीं ।

5. कवनो भोजपुरी गद्य रचना के हिंदी भा अंग्रेजी में अनुवाद करीं ।

शब्द-भंडार

अहुआइल	–	अऊधाइल
आँख टिका के	–	कुछ देर एके जगह आँख स्थिर कके ध्यान से देखल
बड़बड़ाइल	–	कुछ-कुछ अंट-संट बोलल ।
बुतायेवाला	–	बुझाए वाला
अबूझ	–	जे न बूझल जा सके
दीया	–	जेकरा तेल बाती राख के जरावल जाला दीपक
पोटली	–	छोट गठरी

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बोरसी	–	जवना बरतन में आगि सुलगावल जाला
पड़ोसिया	–	पड़ोस के रहे वाला
एकांता	–	जहाँ सुनसान रहे, अकेला में
मेहरारू	–	पत्नी, औरत
चरी	–	माल मवेशी के हरियरी खाना भा चरल
मजूरी	–	मेहनत के मजदूरी
पेड़ा	–	रास्ता
बकोइया	–	हाथ पैर के सहारे सरक के चलल
थाती	–	जोगा के रखल चीज

पाठेत्तर सामग्री

टोक बंदोबस्ती के रह हीले के खबर जब बबुआन टोला से होत नगेसर सिंह के दुआर प पहुँचल त साँझ अँगना में उतर चुकल रहे । कउड़ा के धुआँ गवे गँवे ऊपर आकास का ओर उठे लागल रहे । नगेसर सिंह के खीस कउड़ा से उठत आग के लहर अइसन लहोक लेत रहे बाकिर बाबा के नाँव सुनते मातर ऊ मदारी के साँप अइसन फन सिकुड़ा के मुड़ी नीचे गोत ले ले आ बुदबुदइले.... समय अइला प सब लोग के देख लेब । बात आइल-गइल हो गइल । बाकिर नगेसर सिंह के करेजा के आग त बोरसी के आग अइसन सुनुगत रहे। कए बेरा रायबहादुर के लोभ-लालच के साथे-साथे, ई निमन ना भइल हा, एकर रिजल्ट बड़ा खराब होई, जइसन धमकियो देल गइल, बाकिर उ टस से मस ना भइलन । नगेसरो सिंह हार माने वाला जीव ना रहस । तैमूर लंग अइसन किरिया खा के अपना लक्ष्य के प्राप्ति में लागल रहलन ।

बाबा के समाधि के समाचार सुन के पूरा जवार स्तब्ध रहे । कुछ लोग भीतरे-भीतरे खूब खुश हे बाकिर सामाजिक भय से खुल के सामने ना आवत रहे । बाकिर ई सब जादे दिन ले ना चल पावल । खुल के त केहू विरोध ना कइल बाकिर खुसुर-फुसुर शुरू हो गइल रहे। अफवाह हवा उठे आ शांत हो जाय । गाँव के चौराहा तक ले बंटा गइल रहे।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बबुआन टोला के लोग भीतरे-भीतर अपमान के अग्निकुंड में जरत रहे । बदला लेवे के कवना उपाय सोचल जाय, बाकिर हवा गरम देख के सामने आवे के हिम्मत केहू के ना करत रहे । नगेसर सिंह के दलान प रोज जमघट्टा जुटे । गाँजा के चिलम भोले बाबा ले नाँव प लहके आ ओकरे साथे बहसी के बाजार गरम हो जात रहे । हमला करे के योजना बने आ टूटे आ कवनो एकमत राह ना निकल पइला से जमावड़ा अगिला दिन खातिर टूट जात रहे। नगेसर सिंह के इच्छा रहे कि चुपचाप राते में कब्जा क लेल जाय । बाद में कोर्ट-कचहरी होई त देख लेल जाई । बाकी रिपुदमन के विचार ठीक उल्टा रहे । उनका राय में चुपचुप कब्जा आ बात कायरता के निशानी रहे । ऊ कहस जब जमीन हमनी के नाँवे बा त डर कइसन । हमनी आह प कब्जा करब दिन में सबके सामने । बहादुर अइसन । चोर अइसन ना।

जवान लोग रिपुदमन के विचार के समर्थक रहे । ओह लाग के बाँह फड़कत रहे। रग में गरम-गरम खून उबाल लेत रहे । बूढ़न के राय रहे—बात के कवनो बीच के राह से हल निकालल जाय । छोट लोग के मुँह लगवला स आपन बदनामी बा । खून-खराबा भइला से गाँव-जवार सब के बदनामी होई । थाना-कचहरी होई से अलगे आपसी रिश्ता खराब होई। अगर जबरदस्ती कब्जा ना हो सकल त मुँहकरखी लाग जाई । एही कुल्ह बातन के बीच जमौड़ा अगिलो दिन खातिर टूट जाय । फैसला कुछ ना हो पावत रहे । उहे ठाक के तीन पात ।

बबुआन टोला के बात हवा में उड़त पहिले गाँव के एक टोला से होत दोसरा टोला पहुँचे आ फेरू अवार-जवार में पसर जाय । टोक के सुरक्षा खातिर एनियो सभा हाख लागल रहे। अगल-बगल के गाँव के लोगन के आवा जाही शुरू भइल रहे । सबलोग से सोच-विचार क के तय कइल गइल कि ई पता लगावत रहल जाव कि ऊ लोग टोक प कब कब्जा करे के प्लान बनावत बा । आ फेरू सब कुछ पहिलहीं जइसन चले लागल रहे । साथ-साथे कालो दी के उपदेशो चलत रहत रहे । उनकर उपदेश चरवाहन के पोख्ता बना देले रहे । टोक में सांझबके लागे वाला चरवाहा सब अपना धुन के पक्का रहले स ।

एक दिन किसुनवा टोक प अपना भईसन के साथे पहुँचल त देखलस कि नगेसर सिंह के लइका अपना बिरादरी के कुछ लोफरन के संगे टोक प घूमत बड़ुए । साथ-साथ पेड़न से फलो तूरत रहे । आ चरवाह सब के डाँटत रहे कि ऊ सब अब एहिजा आपन गाय-भईस चरावे मत अइहन स ।

ओकर बात सुन के फुलेसरी कहलस—"बड़ा बगइत्ता वाला बनल बाड़ । हमनी के कहीं ना जाइब । आपन गोरू एहीजे चराइब । देखत बानी, कवन भोंछकटा रोकत बा ।"

6B

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

–''ए छोकरी, जादे बकर बकर मत कर । ना त पूरा डंटा.....

–''नतीऊ, जादे बोलब त मुड़िये छंवड़ देब ।'' कहत फुलेसरी डाँड़ में से हँसुआ निकाल के झपटल । तले गनेसवा, मंगरा, परबतिया, महँगुआ ब धउरल ओहीजा पहुँच गइलन स।

बाबूजी आफिस से लवटले त तेल के एगो बोतल लेले अइले । माई देखली त अहनरि क कहली बड़ा नीक कइलीं हाँ । ठंढा तेल कहिए से घर में ना रहे । कपार बथला पर बी. डी. ओ. साहेब के मेहरारू किहाँ माँगे जाये के परत रहे ।'

बाबूजी कुछुओ ना बोललें आ माई लफि के तेल के बोतल बाबूजी के हाथ से थाम्हि लिहली । बाबूजी खटिया पर ओठंघि गइले । तनी देर भइल त बाबूजी कहले, ''का हो ? चाहो पानी मिली कि ठंढे तेल बोथाई कपार पर ?''

माई तेल के बोतल आलमारी में सहेजि देले रहली आ रसोई घर में चलि गंइली। तुरते चाह के गरम-गरम गिलास बाबूजी के हाथ में पहुँचि गइल । ऊ नान्हे-नान्ह घोंट भरत चाह पिये लगले । माई खड़ा होके निरेखत रहली । उनुका बुझात रहे जे बाबूजी थाकल बाड़े।

माई कहनी, 'बुझात बा कि रउबा हरानी हो गइल बा । तनी सरकीं त तेलवा चानी पर रगरि दीं । मन कबजा में आ जाई ।'

बाबूजी में कवनो उत्साह ना उभरल । ऊ ओइसहीं ओठंघले कहले–''रहे द । ऊ त खिजाब ह, बार करिआ करेवाला तेल ।''

''एह उमरी खिजाब लगाबल जाई ? बूढ़ घोड़ी के लाल लगाम ।''–माई कहली । बाबूजी दबकि के चुपाइले रहले । माई रसोई घर में समा गइली ।

अभ्यास

1. बबुआन टोला के लोग कवना बात पर तमतमाइल रहे ?
2. केकरा समाधि के बात सुन के जवार के लोग स्तब्ध रहे ?
3. टोक प भईंस चरावे के पहुँचल रहे ।
4. केकर बात सुनके फुलेसरी खिसिआइल रहे ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. तेल के बोतल देख के माई काहे खुश हो गइली ?

6. "का हो ? चाहो पानी मिली कि ठंढे तेल बोबाई कपार पर" ई केकर कथन ह ?

7. माई बाबूजी के थाकल जान के जब ठंढा तेल लगावे के प्रस्ताव रखली त ऊ काहे उत्साह हीन बनल रहलन ?

8. खिजाब का कहाला ? बाबूजी खिजाब काहे खातिर खरीद के ले आइल रहन ?

9. "एह उमरी खिजाब लगावल जाई" इ बात माई काहे कहली ?

10. "बूढ घोड़ी लाल लगाम" के अर्थ स्पष्ट करीं ।

11. बाबूजी के दबकि के चुपइल पर माई रसोईघर में काहे समा गइली ?

शब्द-भंडार

बंदोबस्ती	–	खेत आदि के केहु के नाम लिखके सरकारी मोहर लागल ।
कउड़ा	–	घुरा, जंगल झाड़ बटोर के ढेर क के जलावल
लहोक	–	लहास
करसी	–	गाय-बैल के सूखल मल
किरिया	–	कसम
जमवड़ा	–	एकट्ठा भइल
गुपचुप	–	चुपे-चुपे
सोझबक	–	सीधा
छेपेड़ल	–	काटल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय-आठ

सत्यनारायण लाल

भोजपुरी-हिंदी के यशस्वी कवि सत्यनारायण लाल के जन्म 9 जुलाई 1915 के भोजपुर जिला में भइल रहें ।

इहाँ के बाल साहित्य आ छात्रोपयोगी साहित्य के विशेषज्ञ रहीं । इहाँ के सरल-सहज भाषा पाठक के मन के छू लेले । इहाँ के शिक्षा-संबंधी दर्जनन किताबन के रचना कइलीं। इहाँ के प्रकाशित पुस्तक बाड़ी सन-नवीन भारती, बाल भारती, भाषा सरिता, साहित्य सरिता, चारं एकांकी शहीद का स्मारक, कुँअर सिंह की थाती, बाल रंगमंच, अभिनव शिक्षाशास्त्र, सुधियाँ मधुमास की फूल-शूल । सत्यनारायण लाल अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक लोगन में से रहीं । इहाँ के 9 फरवरी 2004 के एह दुनिया से विदा हो गइलीं ।

विषय-प्रवेश

'ऊहो बरखा आई' में कवि बरसात में रिमझिम बदला से धरती के हरियराइल, पेड़-पौधन के पनपल, लोग के खुश होके अगराइल आदि के बखान करत बाड़े। उनकर चाह अइसन वर्षा के बा जे सब केहू में जान फूँक देवे आ हर तरह के भेद मेटा देवे।

बरखा से जहाँ एंकोरी धरती के भाग्य जागेला, जीव-जंतु के पियास बुझेले उहईं टुटही चुअत पलानी में अकेले तिरिया घबड़ाइल फिकिर में पड़ल रहेले काहे कि ओकर पति परदेस में बा आ गोदी में आँचर तर लुकाइल लइका बीमार बा । रोज काम कके दू जून के रोटी के जोगाड़ कके भूख मेटावे वाला लोग का बरसात का ओजहे काम ना मिल पावे। अइसन लोग बरसात से घबड़ाला त अमीर लोग पिकनिक मनावेला। केहू धधाय आ केहू पियराय-घबड़ाय । कवि का अइसन बरसात के चाहत बा जे अमीर-गरीब सभका में जान जगा देवे, टील्हा-गढ़हा सबके भर देव आ सब जीव-जंतु भेदभाव बिसरा के वर्षा के आनंद उठावे । कवि का भरोसा का कि अइसन बरसात आवहीं वाला बा जब 'साँप-मोर मिल के कजरी गाई ।'

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ऊहो बरखा आई

आइल बरखा आइल !

रिमझिम परल फुहार जगत के धधकत हिया जुड़ाइल,
लौटल भाग सोहागिन धरती के, परती हरिआइल,
नाचल वन में मोर, पिआसल जिया-जन्तु अगराइल,
पनपल;पसरल घास-फूस सब, ठूँठो अब टूसिआइल,
बाकिर चुअत मड़इया में अकसरि तिरिया घबराइल,
पति परदेसी, आँचर तर लइका बेमार सँकाइल,
आइल बरखा आइल !

कतहूँ महल-अटारिन्ह से कजरी के धुनि आवत बा,
केहू मातल पुरवा से बरखा के गुन गावत बा,
पिच पर कार चला के केहू पिकनिक चलल मनावे,
रोज कमा के खाए वाला बरखा के गरिआवे,
केहू आज धधाइल, बाकिर केहू बा जहुआइल,
केहू बा हरिआइल, बाकिर केहू बा पिअराइल,
आइल बरखा आइल !

हमरा चाहीं ऊ बरखा जे सब में जान जगा दे,
टीला ढाहि भरे जे गड़हा, जे सब भेद भगा दे,
धाने में ना हिंगुओ में जे पतई नया उगा दे,
जे दुरंगी चाल चले ना, केहू के न दगा दे,
गरजत बा आकास बुझाता ऊहो बरखा आई,
बाघ-हरिन आ मोर-साँप जब मिलि के कजरी गाई,
ऊहो बरखा आई ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **'ऊहो बरखा आई' कविता कवना ऋतु से जुड़ल बा :**

(क) बसंत ऋतु (ख) वर्षा ऋतु

(ग) ग्रीष्म ऋतु (घ) शरद ऋतु

2. **वर्षा ऋतु कवन लोग गरिआवे ला :**

(क) कार पर चढ़े वाला (ख) छोट-छोट लइका

(ग) रोज कमाये वाला मजदूर (घ) केहू ना

4. **चुअत पलानी में औरत काहे घबड़ाइल बिआ ?**

(क) अकसरुआ बिआ (ख) पति परदेसी बा

(ग) लइका बेमार बा (घ) एह सब कारण से

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'ऊहो बरखा आई' शीर्षक कविता के कवि के नाम बताईं ।
2. 'पनपल-पसरल' में कवन अलंकार ह बताईं ।
3. "हमरा चाहीं ऊं बरखा जे सब में जान जगा दे

टीला ढ़ाहि भरे जे गड़हा, जे सब भेद भगा दे ।"– एकर भाव स्पष्ट करीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ्य पुस्तक में दिहल 'ऊहो बरखा आई' शीर्षक कविता पढ़ला के बाद वर्षा ऋतु में रिमझिम फुहार पड़ला के बाद आइल प्राकृतिक बदलाव के वर्णन करीं ।
2. 'ऊहो बरखा आई' कविता में 'ऊहो बरखा' से कवि के का भाव बा–वर्णन करीं ।
3. 'ऊहो बरखा आई' शीर्षक कविता के काव्यगत विशेषता के वर्णन करीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

4. 'गरजत बा आकास बुझाता ऊहो बरखा आई'–ई पंक्ति के माध्यम से कवि कवना प्रकार के सामाजिक परिवर्तन के उम्मीद करत बा ? एह पर विचार करीं ।

5. रोज कमा के खाएवाला के बरसात में कवन-कवन परेशानी के सामना करेके पड़ेला ? एह बात के अपना शब्दन में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. रिमझिम फुहार देखला के बाद अपना हियरा में उमड़े वाला भाव के कविता के रूप में उतारे के कोशिश करीं ।

2. वर्षा ऋतु पर कुछ दोसर-दोसर कवितन के संग्रह करीं आ वर्षाऋतु पर आधारित चित्र बनाईं ।

3. वर्षा ऋतु में गावल जाए वाला परंपरागत 'कजरी' धुन के पाँच गो गीत जमा करीं।

शब्द-भंडार

धधकत	–	लहकत, तवल
हिया	–	हृदय, हियरा
तिरिया	–	मेहरारू
अटारिन्ह	–	छत, अटारी सब, महल
गरिआवे	–	गारी दिहल
गड़हा	–	गड्ढा
पतई	–	पत्ता
लौटल भाग	–	खुशी के दिन आइल
परती	–	जवना जमीन पर कुछ ना जामे
अगराइल	–	खुश भइल
जिया-जंतु	–	जीव, जानवर
धधाइल	–	अगराइल, बहुत जादे खुश भइल
जहुआइल	–	बिलमल, देर भइल
पियराइल	–	पीयर भइल, उदास भइल
हरियाइल	–	हरियर भइल, खुश भइल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : नौवा

एह पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा ।

विषय-प्रवेश

'जग के लाल : जगलाल' एगो अइसन व्यक्तित्व के जीवनी बा, जे अभाव का रेत पर अपना जिनगी के गाड़ी चला के मंजिल तक पहुँचल । उहाँ के व्यक्तित्व के एगो लमहर विशेषता रहे कि ऊहाँ के कबो सिद्धांत से समझौता ना कइलीं। गाँधीवादी विचारधारा के अनुयायी जगलाल चौधरी के सऊँसे जिनगी प्रेरणा से भरल बा। उच्च पद पर आसीन भइला का बादो उहाँ के जीवन सादगी से भरल रहे । आजादी के लड़ाई में उहाँ के अपना जवान लड़िका के बलि चढ़ा दिहनी ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जग के लाल–जगलाल

'सादा जीवन–उच्च विचार' आज खाली मुहावरा बन के रह गइल बा । चारु ओर अनैतिकता के बोलबाला बा । नैतिक मूल्यन के क्षरण तेजी से हो रहल बा । अइसना समय बरबस आँख के आगा जगलाल चौधरी के सूरत नाच उठेला ।

बिहार के सारण जिला के गरखा गाँव में 5 फरवरी 1885 के मूसन चौधरी के घर में तेतरी देवी के कोख से इनकर जनम भइल । इनकर परिवार बेहद गरीबी में जीयत रहे। घर के खरचा-बरचा ताड़ी बेच के आ मजूरी क के जुटावल जाव । जगलाल चौधरी अपना बाबूजी के समझावंत रहस कि ऊ ताड़ी बेचल बंद क दीं । गरीबी में जियला के बादो इनकर बाबूजी शिक्षा के महत्त्व समझत रहले एह से ऊ मने-मन तय कइले कि भले अपने दुख सहब बाकिर लड़िका के पढ़ाइब । जगलाल चौधरी पढ़े में मेधावी रहले । गाँवें के स्कूल से मीडिल परीक्षा छात्रवृत्ति के साथ पास कइले । अब आगे पढ़े के सवाल पर आर्थिक दबाव सामने आइल बाकिर इनकर बाबूजी हार ना मनले आ छपरा जिला स्कूल में नाँव लिखाइल। ऊ मैट्रिक परीक्षा में सऊँसे जिला में प्रथम अइले आ इनका के चाँदी के मेडल से पुरस्कृत कइल गइल । आगे के पढ़ाई पटना से इंटर कइला के बाद डाक्टरी के पढ़ाई खातिर कलकत्ता मेडिकल कालेज में नाँव लिखाइल । ओहिजा इनका सामाजिक उपेक्षा के दंश झेले के पड़ल बाकिर चौधरी जी गाँधीवादी विचार से प्रभावित रहले एह से ऊ अहिंसात्मक तरीका अपनवले आ चौबीस घंटा उपवास रहके अनशन कइले । इनका अनशन के आगे लोग के झुके के पड़ल । पढ़ाई के समय में ही इहाँ के गाँधीजी से अतना प्रभावित भइलीं कि सन् 1921 ई में मेडिकल के फाइनल परीक्षा के समय पढ़ाई छोड़ के आजादी के लड़ाई में कूद पड़लीं । केहू कुछ कहे त कहस देश आ समाज के सेवा खातिर कवनो डिग्री के जरूरत ना होला ।

धुन के धनी जगलाल चौधरी पढ़ाई छोड़ला का बाद गाँधीजी के आश्रम, वर्धा (महाराष्ट्र) पहुँच गइलीं, आ पूर्ण रूप से गाँधीवादी विचार में रम गइलीं । कुछ दिन बाद जब गाँवे लवटले त स्वदेशी आंदोलन में जीव-जान से जुट गइले । बाद में पूर्णियाँ के टीकापट्टी आश्रम में रहे लगलीं । एहीजे से इहाँ के राजनीतिक जीवन के शुरुआत भइल । सन् 1932 ई. में नमक सत्याग्रह में भाग लेलीं आ जेल गइलीं । सन् 1934 ई. में बिहार में भीषण भूकंप आइल जेसे जान-माल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

के बड़हन क्षति भइल । जेल से निकलला के बाद इहाँ के लोकसेवा में लाग गइली । एही बीच बेटी के तपेदिक के बीमारी भइल । ऊ एइसा आ इलाज के अभाव में काल के गाल में समा गइल।

पूर्णियाँ जिला छुआछूत के भयंकर बीमारी से ग्रसित रहे । ओहिजा दलित समुदाय के लोगन किहाँ जाके साफ-सफाई करीं, लइकन के साफ-सुथरा रहे के शिक्षा दीं । एकरा चलते इहाँ के काफी लोकप्रिय हो गइलीं । एकर फल भइल कि सन् 1937 ई. में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़लीं आ कुरसैला एरिया के जमींदार के हरा दीहलीं । चुनाव के बाद श्रीकृष्ण सिंह के अगुआई में बनल सरकार में मंत्री बनलीं । एकरा बाद पहिला काम कइलीं शराबबंदी के । एह कारण इहाँ के चर्चा में अइलीं । इनकर आपन समुदाय के लोग खिलाफत करे लागल बाकिर इनका सादगी आ सज्जनता के आगे सभे हार गइल ।

एक बेर के बात ह कि पंजाब के स्वतंत्रता सेनानी पृथ्वी सिंह आजाद के आमंत्रण पर इहाँ के पंजाब गइलीं । ओह घड़ी इहाँ के मंत्री रहीं । स्टेशन पर लोग खातिर करे खातिर खाड़ रहे । लकदक कपड़ा में पहिले चपरासी निकलल त लोग ओकरे फूल-माला से तोप देलस । बाद में सादा भेष में चौधरी जी निकललीं । इहाँ के केहू महत्त्व ना दीहल । जब पृथ्वी सिंह जी इहाँ के परिचय दिहलीं त सभे झेंप गइल ।

एगो दोसर घटना जे सबसे जादे प्रभावित करेला, ऊ देवघर विद्यापीठ के बा । जहाँ इनकर बेटा इन्द्रदेव आ धर्मदेव, दूनो जाना पढ़त रहले । ओहिजा छुआछूत के भयंकर बेमारी रहे । एक बेर दूनो बेकत लइकन से भेंट करे खातिर देवघर गइल लोग । एह लोग के पिआस लागल रहे । इनकर बेटा धर्मदेव पानी ले आवे खातिर बगल वाला कुआँ प चल गइले जवना प एह लोग के जाये के मनाही रहे । सुनसान देख के धर्मनाथ चुपके कुआँ से पानी भर लगले तले कवनो लइका देखके हल्ला कइलस आ लइका सब जुट के उनके पीट देलेसन । हल्ला सुनके चौधरी ओहिजा गइलन आ छुआछूत के खिलाफ अनशन पर बइठ गइलन । इनका सादगी आ सच्चाई के आगे लोग के झुके के पड़ल आ छात्रावासों में केहू के साथे भेदभाव बरते के प्रथा ओरा गइल ।

सबसे मार्मिक एगो प्रसंग जवन चौधरीजी के अवरू महान बना देला । ऊ सन् 1942 ई के बा । इहाँ के अगुआई में गरखा थाना आ पोस्ट ऑफिस पर आंदोलनकारी लोग कब्जा क लेले रहे। सड़क काट देल गइल रहे जेसे गोरन के फौज उहाँ ना पहुँच सके । तीन-चार लोग के माँवे वारंट निकल चुकल रहे कि देखते गोली मार द । ओह में इनको नाम रहे। 22 अगस्त के अंगरेजन के फौज गरखा घेर लेलस । गाँव के लोग ओकनी पर ईंटा-पत्थल लेके टूट पड़ल । एकर नेतृत्व

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

इन्द्रदेव करत रहले । एही बीचे अंग्रेजन के गोली उनकर छाती के पार हो गइल । ऊ बेहोश हो के गिर गइले । तनिए देर में उनकर प्राण पखेरू उड़ गइला । अंगरेजी पलटन लाश ट्रक पर लाद के छपरा ले गइल ।

चौधरी जी के बेटा के शहादत के खबर मिलल लोगन के मना कइला का बादो सीधे एस. डी.ओ. के आफिस में घुस गइलीं । तत्कालीन एस.डी.ओ. बेनी माधव उनुका के अपना साथे भीतर ले गइले । बाहर रहला प कवनो घट सकत रहे । तत्काल उनके हिरासत में ले लीहल गइल।

बेटा के अंतिम संस्कार खातिर हिरासत में चौधरी जी के ले गइल लोग । ऊ दृश्य बड़ा मार्मिक रहे । बेटा के लाश के गला से लगा के कहले–**'बेटा एही ला तोहार जनम देले रहलीं। तोहार जनम सुफल हो गइल।'** आ फेरू उनके जेल भेज दिहल गइल ।

उनका दृढ़ता आ विश्वास के एगो दोसर घटना बजे हमनी के सीख देला कि आदमी के पारदर्शी विचारवाला होखे के चाहीं, पक्षपाती ना । सन् 1946 ई. में श्रीबाबू के नेतृत्व में कांग्रेस के सरकार बनल त चौधरीजी मंत्री बनलीं । शपथ ग्रहण कइला के बाद जेल से रिहा भइले । श्रीकृष्ण बाबू इनका के अपना साथे ले अइलन । जगजीवन बाबू केंद्र में मंत्री हो गइले त उनकर जगह खाली भइल आ ओही जगह चौधरी जी चुनाव जीतलीं, आ स्वास्थ्य मंत्री बनलीं । इहाँ के विभाग में कई स्तर पर सुधार कइले । सन् 1951 ई. में कैबिनेट में एगो प्रस्ताव आइल कि कम्युनिस्ट लोग के छोड़ के अउर सब राजनीतिक बंदी लोग के रिहा कर देल जाव । एह पर चौधरी जी विरोध कइलन । श्रीकृष्ण बाबू नाराज भइली । चौधरी जी कहलीं कि हम अपना उसूल से समझौता ना करब । आ अपना पद से त्यागपत्र दे देलीं । इहाँ के सत्ता पद से कतना दूर रहीं एकर एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकेला । एक बेर इनका के संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य बनावल गइल त कहले कि हम एक रोपेया वेतन लेब अगर सरकार मानी त पद पर ना रहब । आ इहाँ के पद स्वीकार ना कइलीं। अपना अपार लोकप्रियता के कारण पाँच बेर विधानसभा के सदस्य चुनइनी ।

जगलाल चौधरी जी कबो अपना जीवन में सिद्धांत, सादगी आ ईमानदारी से समझौता ना कइलीं आ ता जिनिगी समाज सेवा करत 9 मई 1975 ई. के विधान परिषद् सदस्य रहत गोलोकवासी भइलीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **जगलाल चौधरी के जन्म कहवाँ भइल रहे ?**

(क) छपरा में (ख) गरखा में

(ग) पटना में (घ) पूर्णियाँ में

2. **जगलाल चौधरी के छात्र जीवन में चाँदी के मेडल कब मिलल रहे ?**

(क) मिड्ल पास कइला पर (ख) मैट्रिक परीक्षा में

(ग) इंटर में (घ) मेडिकल में

3. **जगलाल चौधरी अपना पिता के कवन काम करे से मना करत रहस ?**

(क) मजदूरी करे से (ख) ताड़ी बेचे से

(ग) झगड़ा लड़ाई करे से (घ) एह में से कवनो ना

4. **पटना साइंस कॉलेज में पढ़े का बेर इनका पर केकर नजर पड़ल ?**

(क) श्रीकृष्ण सिंह के (ख) मजहरूल हक के

(ग) राजेन्द्र बाबू के (घ) गाँधी जी के

5. **मंत्री बनला पर अपना प्रयास से ऊ कवन विधेयक पारित करइलन ?**

(क) जमींदारी उन्मूलन (ख) शराबबंदी

(ग) दलित उद्धार (घ) दलित आरक्षण

6. **जगलाल चौधरी जी के राजनीतिक जिनिगी कहँवा से शुरू भइल?**

(क) छपरा से (ख) पूर्णियाँ से

(ग) पटना से (घ) कलकत्ता से

7. **संघ लोक सेवा आयोग के सदस्यता चौधरी जी काहे ना स्वीकार कईनी ?**

(क) कम वेतन के कारण

(ख) खाली एक रुपया वेतन लेवे के सिद्धांत के कारण

(ग) अपना गरिमा से छोट समझ के

(घ) एह में से कोई ना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

8. उहाँ का केतना बेर विधानसभा के सदस्य चुनइनी ?

(क) तीन (ख) दो

(ग) पाँच (घ) चार

लघु उत्तरीय प्रश्न

9. जगलाल चौधरी मेडिकल कॉलेज के छात्रावास में 24 घंटा के अनशन काहे कइलीं ?

10. जगलाल चौधरी डॉक्टरी के पढ़ाई कवना कारण से छोड़ दिहलीं ?

11. जगलाल चौधरी कवना बात पर मंत्री पद से त्यागपत्र दिहलीं ?

12. पंजाब में जगलाल चौधरी जी के कवना घटना के बाद काहे बिहार के गाँधी कहल गइल ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

13. देवघर विद्यापीठ में दलित छात्रावास पानी खातिर घटित घटना के वर्णन करीं ।

14. शराबबंदी विधेयक के बिहार में का प्रभाव पड़ल ?

15. बेटा इंद्रदेव के शहादत के खबर सुनके जगलाल चौधरी जी का कहलीं ?

16. जगलाल चौधरी जी के सादगी आ सिद्धांतवादिता के उदाहरण प्रस्तुत करीं ।

परियोजना कार्य

1. जगलाल चौधरी जइसन सरलता आ सादगी के प्रतीक कवना दोसर महापुरुष के संबंध में संक्षेप में वर्णन करीं ।

2. जगलाल चौधरी जी के जीवन में छुआछूत संबंधी कुछ घटना घटल रहे । अइसन घटना कवना दोसर के साथ घटल होखे त वर्णन करीं ।

3. जगलाल चौधरी जी आजादी के लड़ाई खातिर मेडिकल के पढ़ाई छोड़ दिहलीं । अइसन कवनो आउर घटना के वर्णन करीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्द भंडार

मेधावी	–	तेज बुद्धि वाला
शराबबंदी	–	शराब के पीयल-बेचल बंद कइल
खिलाफत	–	विरोध
पारदर्शी	–	साफ-साफ दिखाई पड़े
उसूल	–	सिद्धांत

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : दस

अमृता प्रीतम

साहित्य अकादमी के फेलो, ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित, राज्यसभा के सदस्य रह चुकल पंजाबी के नामी लेखिका अमृता प्रीतम के जनम 1919 ई में पाकिस्तान के गुजरांवाला में भइल रहे । ऊ लगभग 70 किताब लिखले बाड़ी जेकर लोकप्रियता भोजपुरी पाठकनो के बीच रहल बा । अपना मसहूर नज्म 'अज अक्खा वारिस शाह नू कि तो कबरा बिचो बोल, कि अज किताबो वरका खोल' से ऊ बुलंदी के चोटी पर पहुँचली।

उनकर आत्मकथा 'रसीदी टिकट' आ हिन्दुस्तान-पाकिस्तान बँटवारा का दौरान भइल विस्थापन, फेर धर्म-परिवर्तन पर आधारित उपन्यास 'पिंजर' खास चर्चा खातिर उल्लेखनीय बा। 'पिंजर' पर सफल कला फिल्म के निर्माण हो चुकल बा ।

एह तरह से अमृता प्रीतम जइसन आ एतना सम्मान पावेवाली पहिल भारतीय महिला मानल जाली जेकरा एतना प्रसिद्ध मिलल ।

अइसन कवयित्री 31 अक्टूबर 2005 के एह दुनिया से विदा हो गइली ।

विषय-प्रवेश

एह कविता में कवयित्री 'हीर-राँझा' जइसन अमर प्रेम के लोकगाथा के लोक गीतकार वारिसशाह से बिनवत बाड़ी कि अ अपना कबर से बहरी आवस, आपन पूर्व प्रेमाख्यान पर ध्यान देस आ फेर से प्रेम पैदा करे वाली कवनो किताब के नया पन्ना लिखस । काहें कि पंजाब के धरती अपना बेटियन के त्रासदी लेके आज पहिलहु से बदतर हालत में बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

वारिसशाह से

ए वारिसशाह बोल कबर से
आपन कहल टटोल !
प्रेम के पोथी के फेर कवनी
नवका पन्ना खोल !

इक पंजाब के बेटी ला तू
लिखलऽ लमहर गाथा
रोअति बा लाखन बेटी अब
कुछ त अमरित घोल !

देखऽना चउपाल के हालत
लाशन से पाटल बा
अउर चिनाब नदी में–
पानी ना, लोहू आँटल बा
कवन बना देले बा
पाँचो नदियन के जहरीला ?
अउर एही पानी से बा
ऊ धरती सींचेवाला
उपजाऊ जमीन में सगरे
माहुर अँखुआइल बा
फेर महुराइल हवा
पेड़-पौधन पर बहे लगल बा

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ऊहे बाँसो के बंसुरी के
नागिन बना रहल बा
डास रहल बा नाग ओठ में
देहिया पोलम पोल !......

एने गीत रूकल ओने
चरखा के तार टुटल बा
सखियन के महफिल में
वीरानी के भाव जुटल बा
माँझी नाव चला देलन
पीपर से झुलुआ खूलल
गूँजत गीत पराइल कतहूँ
हीर से राँझा रूठल
बरखो में खूने बरखत
कबरो से खूने रीसत

प्रेमनगर के राजकुमारी
हर मजार से सिसकत
हुस्न प पाबंदी लागल बा
इश्क भइल संगसार
अइसन में ना पैदा होलन
वारिसशाह दू चार
तोहरे से विनती बा 'वारिस'
वचन तोहर अनमोल ।
प्रेम के पोथी के फेर कवनो
नयका पन्ना खोल !......

(साभार : 'पाती' अंक-59, अप्रैल-जून 2007)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वारिसशाह से' कविता कवना कवयित्री के मूल कविता के अनुवाद बा ?

(क) मीरा बाई (ख) महादेव वर्मा

(ग) अमृता प्रीतम (घ) सरोजिनी नायडू

2. मूल कविता के भाषा का बा ?

(क) हिंदी (ख) पंजाबी

(ग) बंगाली (घ) उर्दू

3. कविता में केकरा से प्रेम के पोथी फेर से लिखे के कहल गइल बा ?

(क) भिखारी ठाकुर से (ख) वारिसशाह से

(ग) अमीर खुसरो से (घ) कबीर दास से

4. कविता में पंजाब के कवन नदी के नाम आइल बा ?

(क) झेलम (ख) रावी

(ग) चिनाब (घ) सिन्धु

5. कविता में कवन प्रसिद्ध प्रेमगाथा के नाम आइल बा ?

(क) लैला मजनू (ख) शिरी-फरहाद

(ग) हीर-राँझा (घ) सोहनी-महिवाल

6. 'वारिसशाह से' कविता जवना पंजाबी कविता के अनुवाद बा, ओकर मूल पंक्ति लिखीं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पंजाब कव गो नदी खातिर मशहूर बा ?

2. वारिसशाह के रहे ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. कवयित्री फेर से प्रेम के पोथी काहे लिखे के माँग करताड़ी ?

4. बेटियन लेके आज के पंजाब के हालत पाँच पंक्तियन में लिखीं ।

5. वारिसशाह के अनमोल वचन का रहे ? पाँच पंक्तियन में लिखीं ।

6. दीहल गइल शब्द भंडार में से पाँच गो संज्ञा शब्द चुन के ओकर विशेषण बनाईं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अमृता प्रीतम के परिचय लिखीं ।

2. कविता के भाव संक्षेप में लिखीं ।

परियोजना कार्य

1. हिंदी के कवनो छोट कविता के भोजपुरी में अनुवाद करीं ।

2. एह कविता का अलावे जो कवनो दोसरा भाषा के कविता के भोजपुरी में अनुवाद भइल होखे त ओके खोज के पढ़ी ।

3. अनुवाद-कला का बारे में जानी ।

शब्द-भंडार

टटोलल	–	खोजल, हाथ से छू के कवनो चीज के खोजल
पोथी	–	किताब
नवका	–	नया
गाथा	–	लमहर कहानी वाली गेय कविता
सींचल	–	पटावल
माहुर	–	जहर
आँखुआइल	–	टेम्ही निकलल, अंकुरित भइल
महुराइल	–	जहर लगावल
पोलम पोल	–	खोखला

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

महफिल	–	नृत्य-बइठका (सभा)
माँझी	–	नाव खेवेवाला
मजार	–	संत भा महान व्यक्ति के कब्र
सिसकल	–	धीरे-धीरे आ मने मन रोअल,
इश्क	–	प्रेम
अनमोल	–	जवना चीज के दाम ना लगावल जा सके, बेशकीमती

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : ग्यारह

रमाकांत द्विवेदी 'रमता'

रमाकांत द्विवेदी 'रमता' के जन्म 30 अक्टूबर, 1917 के भोजपुरी के महुलघाट (बड़हरा) में भइल रहे । उहाँ का बचपने से जुझारू आ स्वाभिमानी रहीं । शुरुआती शिक्षा-दीक्षा बालानंद संस्कृत विद्यालय परशुरामपुर से, मध्यमा के बाद देवघर विद्यापीठ से साहित्य भूषण के उपाधि प्राप्त कइले रहीं । जवानी का उमिर में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में साथे रहस । 1972 में नमक सत्याग्रह में धरा के जेल गइलन । फेरू 1941 आ 1943 में भी जेल में सजा कटले ।

आजादी का बादो देश पर सामंत, पूँजीपतियन आ नौकरशाहन के दबदबा से इहाँ का हृदय में विद्रोह के आगि धधक उठल । जे 'बेयालिस के साथी' 'क्रांतिपथ' विद्रोही आदि रचना में देखे के मिले ला। 'नक्सलबाड़ी की जय' 'बिगुल बजा नक्सलवाड़ी', 'पेरलजाई परजा', 'रउवा नेता भइलीं', 'दिल्ली वाली रनिया', 'कलक रनिया', बेगारी तोरी करब नाहीं रे कुचाली, कलउ के भूत, सुराज के सराध, अकाल आदि इनकर प्रसिद्ध कविता बा । इहाँ का भोजपुरी के एगो सिद्ध कवि रहीं । इहाँ के साहित्य के बदलाव के हथियार मानत रहीं । एही से उहाँ के जन संस्कृति मंच से जुड़ के एह दिशा में सजग होके काम कइलीं । 24 जनवरी, 2008 के इहाँ के मउवत हो गइल।

विषय-प्रवेश

'बेयालीस के साथी' शीर्षक कविता में आजादी के बाद सुराज के कल्पना के अनुरूप बदलाव ना अइला पर कवि क्रांति के दिनन के इयाद करत कह रहल बाड़न कि जवना आजादी खातिर क्रांतिकारी लोग आपन सुविधा छोड़ के दर-दर के ठोकर खइलन, डाँड़ में रसा लगा के जेल गइलन, रात-बिरात भागल चललन, जुल्मी अंग्रेजन के लाठी खइलन, ऊ सुराज ना आइल । क्रांतिकारी लोग ई सब यातना एहसे सहलन कि अंग्रेजी सल्तनत के जुल्म के चक्की में पिसाए वाला गरीब गुरबा सम्मान के जीवन बितइहन। बाकिर आजादी के लड़ाई के सहभागिए लोग सत्ता पवला के बाद अहंकारी आ विलासी होके गरीब जनता के भुला गइलन ।

कवि के दृष्टि में ई स्थिति निराशाजनक बा आ एह सत्ता के मद में आंहर भइले लोगन के अंतो नजदीके लउकता । एही भाव के मार्मिक रूप में अभिव्यक्त कहल गइल बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बेयालिस के साथी

साथी, ऊ दिन परल इयाद, नयन भरि आइल, ए साथी !

गरजे-तड़के चमके-बरसे, घटा भयावन कारी
आपन हाथ आपु ना सूझे, अइसन रात अन्हारी
चारो ओर भइल पजंजल ऊ, भादो-भदवारी
डेगे-डेग गोड़ बिछिलाइल, फनलीं कठिन कियारी
केहि आशा वन-वन फिरलीं छिछिआइल, ए साथी !

हाथे कड़ी, पाँव में बेड़ी, डाँड़े रसी बन्हाइल
बिना कसूर मूंज के अइसन, लाठिन देह थुराइल
सूपो चालन कुरुक करा के जुरुमाना वसुलाइल
बड़ा धरछने आइल, बाकी ऊ सुराज ना आइल
जवना खातिर तेरहो करम पुराइल, ए साथी !

भूखे-पेट बिसूरे लइका, समुझे ना समुझावे
गाँधि लुगरिया रनिया झुरवे, लाजो देखि लजावे
बिनु किवाँड़ घर कूकुर पइसे, ले छुँछहँड़ ढिमिलावे
रात-रात भर सोच-फिकिर में आँखी नींन न आवे
ई दुख सहल न जाइ कि मन उबिआइल, ए साथी !
कूर-सँघाती राज हड़पले, भरि मुंह ना बतिआवसु

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हमरे बल से कुरसी तूरसु, हमके आँख देखावसु
दिन-दिन एने बढ़े मुसीबत, ओने मउज उड़ावसु
पाथर बोझल नाव भवँर में, दइबे पार लगावसु
सजगे इन्हिको अंत काल नगिचाइल, एक साथी !

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'बेयालिस के साथी' कविता के मूल भाव का बा ?

(क) प्रकृति वर्णन (ख) सामाजिकता

(ग) राष्ट्रीयता (घ) एह में कवनो ना

2. 'बेयालिस के साथी' कविता में कवना मौसम के वर्णन बा ?

(क) जाड़ा (ख) बरसात

(ग) गर्मी (घ) बसंत

3. 'बेयालिस के साथी' बिना कसूर कवना चीज अइसन लोग पिटाइल ?

(क) गदहा (ख) भूसा

(ग) मकई (घ) मूंज

4. रात-रात भर नींन काहे ना आवे ?

(क) हल्ला-गुल्ला से (ख) सोच-फिकिर से

(ग) गर्मी से (घ) डर से

लघु उत्तरीय प्रश्न

5. कवना आशा में वन-वन छिछिआइल फिरत बा ?

6. आपन हाथ अपने काहे ना सूझे ?

7. जवना खातिर तेरहो करम पूरल ऊ का ह, जे ना आइल ?

8. कइसन आदमी राज हड़पले बा ?

9. जेकरा बल से कुरसी बइठल बा, ओकरा से का नइखे करत ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कवन-कवन दुख सहला का बादो सुराज ना आइल ?

2. 'पाथर बोझल नाव भवँर में' केकरा खातिर आइल बा ? एह पंक्ति का माध्यम से देश के वर्तमान स्थिति के दुर्दशा के चित्रण भइल बा-- कइसे ?

भाषा के संगे

नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ दिहल बा। एकर वाक्य प्रयोग करीं।

1. नयन भरल–दुःखी भइल
2. तेरहो करम पुराइल–सब गत भइल
3. कुरसी हरपले–राज कइल
4. आँखि देखावसु--डेरवावल

परियोजना कार्य

1. 'बेयालिस के क्रांति' से संबंधित कवनो आउरी कविता खोज के पढ़ी आ ओकर अर्थ लिखीं ।

2. अपना गाँव-जवार में बेयालिस के आंदोलन का बेरा सुराजी लोग द्वारा गावे वाला कवनो गीत इयाद क के लिखीं ।

शब्द-भंडार

पंजंजल	–	कादो-पानी
बिछिलाइल	–	फिसिलल
बेड़ी	–	जंजीर, पैर के बांधे वाला धातु के बनल जंजीर
मूंज	–	एक तरे के पौधा (झाड़ी) जवना से रसरी बनेला
कुरुक	–	जब्त कइल
जुरुमाना	–	दंड

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

बिसूरे	--	सुसुक-सुसुक के रोवल
लुगरिया	--	फाटल साड़ी
संघाती	--	साथी, इयार
वइबे	–	भगवाने
नगिचाइल	–	नियराइल

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : बारह

एह पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा ।

विषय-प्रवेश

सिनेमा एगो सशक्त कला माध्यम ह । ई जीवन के बहुत गहिरे प्रभावित करेला । एने भोजपुरी में खूब सिनेमा बन रहल बा । गैर-भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में भोजपुरी फिल्म खूब चलता । एह सब से भोजपुरी के लोकप्रियता आ ताकत के पता चलता । भोजपुरी में फिल्म बनावे के एगो लमहर आ समृद्ध परंपरा बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निबंध

भोजपुरी सिनेमा : लोकप्रियता के शिखर पर

एह घड़ी भोजपुरी में खूब सिनेमा बन रहल बा । भोजपुरी सिनेमा दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पंजाब जइसन गैर-भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में खूब लोकप्रिय होता । एह जंगहन पर भोजपुरिया लोग बड़हन संख्या में रहेला । ई भोजपुरी सिनेमा के तीसरका उछाल हवे।

भोजपुरी फिल्म बनावे के प्रयास बहुते पहिले से होत रहे बाकिर एकरा सफलता के शुरुआत 1962 में भइल । एही साल 'गंगा मइया तोहें पियरी चढइबो' फिल्म रिलीज भइल। ई फिल्म श्री विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी का पइसा से श्री नाजीर हुसेन, श्री रामायण तिवारी जइसन भोजपुरिया अभिनेता के मदद से बनल रहे । एह में गीतकार शंकर शैलेन्द्र आ संगीतकार चित्रगुप्त रहीं । ई दूनो नाम अपना-अपना क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे । एकर नायक असीम कुमार आ नायिका कुमकुम रहली । एह फिल्म के पहिलका राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के भी आशीर्वाद प्राप्त रहे । ई फिल्म भोजपुरिया संस्कृति के उजागर करता । एकर कथानक गाँव का पृष्ठभूमि से लिहल बा। कलाकारन के अभिनय आ संवाद देखनिहारन का मन पर असर डललस । दर्शकन के रुझान देख के भोजपुरी फिल्मन कावर निर्माता लोग के रुचि बढ़ल। एह पहिलके दौर में कई गो भोजपुरी फिल्म अइली स जवन काफी नाँव कइली स।

भोजपुरी फिल्मन के दूसरका दौर में 'गंगा किनारे मोरा गाँव', 'दुल्हा गंगा पार के', 'दंगल', 'सुहाग बिंदिया' 'गंगा आबाद रखिहऽ सजनवा के', 'बिहारी बाबू' जइसन कई गो हिट फिल्म बनल। एह दौर में कुणाल भोजपुरी फिल्मन के सुपर स्टार रहस ।

आज तीसरका दौर चल रहल बा जवना में भोजपुरी फिल्मन में खूब उछाल आइल बा। एकर बहुत बड़ बाजार बा । एह दौर में मनोज तिवारी, रवि किशन, दिनेशलाल यादव उर्फ निरहुआ रेक्सावाला स्टार हीरो बाड़े । भोजपुरिया फिल्मन के लोकप्रियता आ बाजार देख के अमिताभ बच्चन सहित कई गो गैर-भोजपुरिया कलाकार एह में काम कर रहल बाड़े । हिंदी फिल्मन के

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

मशहूर नायक-नायिका आ कलाकार लोग भोजपुरी फिल्मन में काम करे के तइयार बा, काहे कि एह फिल्मन के हिंदी का बाद सऊँसे देश में बाजार बा । भोजपुरी में हर साल अब छव-सात दर्जन फिल्म बने लागल बा ।

भोजपुरी सिनेमा आम जनता के संवेदना के छुवता । फिल्म एगो अइसन माध्यम हवे जवना से भरपूर मनोरंजन त होइबे करेला, एकर उपयोग नवनिर्माण आ सामाजिक सरोकार के गाढ़ बनावे में कइल जा सकत बा । भोजपुरी फिल्मन में आज के गाँवन के बदलत तस्वीर साफ उतरल बा। हिंदी फिल्मन का तुलना में कम लागत में बनला का बादो एकर लमहर बाजार बा । एह में फिल्म-निर्माता तेजी से एह बाजार में लाभ उठा के ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाये का फेर में लाग गइल बाड़े । फिल्म उद्योग के सबसे बड़ जगे मुंबई बा । भोजपुरी फिल्मों में मुंबइये में ढेर बन रहल बा । बॉलीउड खानी भोजपुरी भी जम रहल बा बाकिर ढेर-से-ढेर कमा लेवे का लालच में आज अइसनको फिल्म ढेर आ रहल बा जवना के स्तरीय नइखे कहल जा सकत ।

भोजपुरी क्षेत्र बहुत बड़ बा । भोजपुरी भाषी लोग अपना देश में कोना-कोना में रोजी-रोटी कमाये खातिर पसरल बाड़े । देशे ना विदेशो में भोजपुरियन के संख्या काफी बा। एह से भोजपुरी फिल्मन के देश-विदेश सगरे नीमन बाजार मिल सकत बा । एह से जरूरी बा कि भोजपुरी फिल्म बनाने वाला लोग सावधानी से पटकथा चुनो आ ढंग से ओकर प्रस्तुति करो । सस्ता मनोरंजन करे के रुझान कुछ दिन खातिर भले चमक जाव बाकिर एह से समाज आ भोजपुरी फिल्म उद्योग का स्थायी यश नइखे मिल सकत । भोजपुरी क्षेत्र के संस्कृति, परंपरा आ विकास के चित्रण ठीक से सावधानीपूर्वक होखे के चाही । पश्चिम का नकल से गीत-गवनई के भी अइसन ना बनावे के चाही कि ओपर अश्लीलता के दोष मढ़ाये लागो। भोजपुरी जनमानस बड़ा सहज आ सरल होला। बाकिर जब ऊ कुछ करे के ठान लेला त बिना मंजिल तक पहुँचले दम ना धरे । ई सुझाव कला का हर क्षेत्र में झलकेला ।

भोजपुरी फिल्मन के निर्माण खातिर एही क्षेत्र में स्टुडियो बने आ ओकनी के सूटिंगो एही क्षेत्र के दर्शनीय स्थानन पर होखे त बहुत नीमन होई । एह से रोजगार त बढ़वे करी, स्थानीय कलाकारन का भी आपन कला माँजे-संवारे के अवसर मिली । फिल्म-उद्योग रोजगार के एगो अच्छा माध्यम होला । भोजपुरी फिल्म उद्योग एह दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बा ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भोजपुरी के पहिलका फिल्म कवन रहे ?

(क) बलमा बड़ा नादान (ख) गंगा मइया तोहरे पियरी चढ़इबो

(ग) लागी नाहीं छूटे राम (घ) गंगा किनारे मोरा गाँव

2. 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' कब रिलीज भइल ?

(क) 1952 में (ख) 1965 में

(ग) 1962 में (घ) 1970 में

3. भोजपुरी के पहिलकी फिल्म के बनवले रहे ?

(क) चित्रगुप्त (ख) विश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी

(ग) रामायण तिवारी (घ) शैलेन्द्र

4. भोजपुरी के पहिलकी फिल्म मे हीरोइन के रहे ?

(क) कुमकुम (ख) नरगिस

(ग) वैजयंती माला (घ) शबाना आजमी

5 भोजपुरी फिल्मन के दूसरकी दौर में कवन फिल्म ना बनल रहे ?

(क) दंगल (ख) गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो

(ग) बिहारी बाबू (घ) सुहाग बिंदिया

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी के पहिलकी फिल्म कवना के मानल जाला ?

2. भोजपुरी फिल्मन के शुरुआत कब भइल ? दूसरका दौर के तीन गो फिल्मन के नाँव बताई ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. हिंदी फिल्मन के प्रसिद्ध चरित्र नायक नाजीर हुसेन कवना भोजपुरी फिल्म में काम कइले रहस ?

4. हिंदी के सुपर स्टार भोजपुरी फिल्मन में काम करे के काहे चाहत बा ?

5. तीसरका दौर के भोजपुरी फिल्मन में बड़ स्टार के-के बा ?

6. भोजपुरी फिल्मन के बाजार बहुत बड़ बा काहे ?

7. भोजपुरी फिल्मन के बाजार का विदेशो में हो सकत बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भोजपुरी फिल्म के इतिहास कब से शुरू होत बा ? पहिलका दौर के कुछ फिल्मन के चर्चा करीं आ ओकनी के खूबियन के रेखांकित करीं ।

2. आज भोजपुरी फिल्मन के का हाल बा ? एकनी का गुणवत्ता पर टिप्पणी करीं ।

3. आज भोजपुरी भाषा, संस्कृति समाज आ विकास पर भोजपुरी फिल्मन के का असर पड़ रहल बा, संक्षेप में बतलाईं ।

परियोजना कार्य

1. कवनो भोजपुरी फिल्म देख के ओकरा कहानी के अपना शब्द में लिखीं आ बतलाईं कि ओमें कवना कलाकार के अभिनय सबसे नीमन लागल ।

2. गाँव में बियाह का बेरा कई तरह के नेगचार होला । एपर एगो फिल्म बनावे के बा। कवनो एगो नेग चुन के ओह दृश्य खातिर संवाद लिखीं ।

शब्द-भंडार

भोजपुरिया	–	भोजपुरी बोले वाला लोग
गैर	–	दोसर
सुपर स्टार	–	लोकप्रिय नायक,
लमहर	–	लंबा, बड़
प्रयास	–	कोशिश

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

गीतकार	–	गीत बनावे वाला
संवाद	–	बातचीत
देखनिहार	–	देखेवाला
दर्शक रुझान	–	प्रवृत्ति
निर्माता	–	बनावे वाला
मशहूर	–	नामी
मुनाफा	–	नफा, लाभ
पसरल	–	फइलल
नीमन	–	अच्छा
मंजिल	–	लक्ष्य ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : तेरह

गोरख पांडेय

गोरख पांडेय अपना जनवादी चेतना के लोकप्रिय गीतन खातिर प्रसिद्ध रहले । उनकर जनम 1945 में देवरिया जिला (उत्तरप्रदेश) के एगो गाँव 'पंडित के मुड़ेरवा' गाँव में भइल रहे। उनकर शिक्षा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय आ काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भइल । नक्सलबाड़ी आंदोलन से किसान आंदोलन से आ ग्रामीण विकास खातिर एगो कार्यकर्त्ता का रूप में गोरख पांडेय लगातार जुड़ल रहले । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोध छात्र के रूप में दाखिला लिहलीं । 1985 में उहाँ का 'जन संस्कृति मंच' के संस्थापक महासचिव बनलीं । 29 जनवरी 1989 के गोरख पांडेय । के मउवत हो गइल । 'गोरख पांडेय के भोजपुरी गीत', जीतेन्द्र वर्मा के संपादन में नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली से प्रकाशित भइल बा । 'समय का पहिया' उनका प्रसिद्ध गीतन के संग्रह ह ।

अस्सी का दशक में गोरख के कविता किसान आंदोलन के फइलाव का संगे-संगे विकसित होत गइल बा। क्रांतिकारी संघर्षन से हिलत क्षेत्र के भोजपुरिया समाज गोरख का कविता में अपना जीवंत तेवर का साथे विराजमान बा।

विषय-प्रवेश

इहाँ दिहल गीत में श्रम आ श्रमिक के महत्त्व के एगो मजदूरिन रेखांकित कर रहल बिआ । श्रमिक शोषण कि ओर एह में इशारा कइल गइल बा । 'गोरख पांडेय के भोजपुरी गीत' से ई गीत संकलित कइल गइल बा ।

मेहनत करे वाला मजदूर असल में श्रम के सूरज हवे जेकरा पर धरती के हरियाली निर्भर बा । उहे जग के प्राण ह, जिनगी के पहिया ओकरे मेहनत से डगरत रहेला । ओकर श्रम से नया-नया काम होला, काम ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहानी

नेह के पाती

तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार

तोहरा से भगली बन्हनवा के रतिया

हमरा से हरियर भइली धरतिया

तूँ हवऽ जग के परनवा हो, हम संसरिया तोहार

तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

तोहरा से डगरेला जिनगी के पहिया

हमरा से बन-बन उपजेले रहिया

रचना के हवऽ तूँ बसूलवा हो, हम रुखनिया तोहार

तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

हमरा के छोड़िके न जइहऽ विदेसवा

जइहऽ त भूलिहऽ न भेजल सनेसवा

तूँ हवऽ नेहिया के पतिया हो, हम अछरिया तोहार

तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

तोहरे हथौड़वा से काँपे पूँजीखोरवा

हमरे हँसुअवा से हिले भँइखोरवा

ABDIEL SOLU ABSO PAT

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

तूँ हवऽ जूझे के पुकरवा हो हम तुरहिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

चाहे जहाँ रहऽ जो न मथवा झुकइबऽ
हमरा के हरदम संगे-संगे पइबऽ

तूँ हवऽ मुकुति के धरवा हो, हम लहरिया तोहार
तूँ हवऽ श्रम के सुरुजवा हो, हम किरिनिया तोहार।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'नेह के पाती' के रचनाकार के ह ?

(क) गोरख पांडेय (ख) राहुल सांकृत्यायन

(ग) महेन्द्र शास्त्री (घ) विजेन्द्र अनिल

2. गोरख पांडेय कहाँ के रहनियार रहीं ?

(क) सीवान (ख) आरा

(ग) बलिया (घ) सासाराम

3. पठित कविता कवना किताब से संकलित बा ?

(क) श्रम के सूरुज (ख) गोरख पाण्डेय के भोजपुरी गीत

(ग) नवजागरण (घ) एह में से कवनो ना

4. गीत में श्रमिक के का सनेस दिहल बा ?

(क) सब केहू के गोड़ लागे के (ख) कहहूँ माथ ना झुकावे के

(ग) जूझे के पुकार बने के (घ) जिनगी के पहिया डगरवत रहे के

5. केकरा हथौड़ा से पूँजीखोरवा काँपे ला ?

(क) सुरुज के (ख) संसार के

(ग) मजदूर के (घ) सरकार के

6. गोरख पांडेय के मउवत कब भइल ?

लघु उत्तरीय

1. गोरख पांडेय के परिचय लिखीं ।

2. पठित कविता में श्रम के सुरुज केकरा के आ काहे कहल गइल बा ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

3. पठित कविता के मथेला (शीर्षक) के सार्थकता पर विचार करीं ।

4. मुकुति के धार के बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'साहित्य में श्रम के महिमा स्वीकारल साहित्य के महत्त्वपूर्ण घटना बा ।'–गोरेख पांडेय के कविता के आलोक में एह कथन के व्याख्या करीं ।

2. गोरख पांडेय के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालीं ।

3. साहित्य में विचारधारा पर टिप्पणी लिखी ।

परियोजना कार्य

1. जन संघर्ष में गीत के महत्त्व बताईं ?

2. 'रोपनी' भा 'सोहनी' का समे मजदूरिन लोग गीत गावेला । अइसन कुछ गीतन के पता करके लिखीं ।

3. श्रमिक के महानता दर्शावे वाला कवना घटना के वर्णन करीं ।

शब्द-भंडार

बंहनवा	–	बंधन
परनवा	–	प्राण
श्रम	–	मेहनत
भूँइखोखा	–	भूमि हड़पे वाला
संसरिया	–	साँस
डगरल	–	लुढ़कल
तुरही	–	एगो बाजा, जवन मुँह से फूक के बजावल जाला
मथवा	–	माथा, सिर
धरवा	–	धारा, पृथ्वी
बसुला	–	एगो औजार, जवना से लकड़ी सेल्हे-काटल जाला
रुखानी	–	लकड़ी छीले खातिर एगो छोट औजार

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : चउदह

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा,

विषय-प्रवेश

कबड्डी भारत के गाँवन में खेलल जायेवाला एगो ग्रामीण खेल ह, जवना में कवनो सर-सामान के जरूरत ना होला । ई मनोरंजन का साथे स्वास्थ्य, ताकत, हिकमत, फुर्ती आ तुरते सोच लेवे जइसन मानासिक प्रक्रियो के लेहाज से उपयोगी बा। आज त एह देहाती खेल के अंतरराष्ट्रीय महत्त्व प्राप्त बा। स्वाभाविक बा कि अब ई निर्धारित लंबाई-चौड़ाई के मैदान, खेलाड़ी के संख्या आ अंतरराष्ट्रीय नियमन के अनुसार देश-विदेश में खेलल जाला । एह में गलत-सही देखेवाला निर्णायकों लोग रहेला । यद्यपि क्रिकेट के आगे एकर लोकप्रियता दब गइल बा, बाकी साधारण मनई कालगे एकर महत्त्व निर्विवाद बा ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कहानी

कबड्डी

विद्यालय में शिक्षाप्रद फिल्म देखावे के योजना में ओह दिन 'लगान' फिल्म चलत रहे। जब अंग्रेजन साथे गँवई लोगन के क्रिकेट खेले के दृश्य आइल त एगो लइका अपना शिक्षक राकेश बाबू से पूछ बइठल–"सर ! गाँव के अनाड़ी लोग एतना बढ़िया कैच कइसे लेत बा ?" दोसर लइका जवाब देलक–"एह से कि गुल्ली-डंडा में ऊ लोग गुल्ली लोकेला ।"

तीसरका के कहनाम रहे–"तब त कबड्डी आ किक्रेटों में कुछ समानता होई !

अब राकेश बाबू गंभीर हो गइलन । ऊ फिल्म रोकत कहलन–"बढ़िया प्रसंग छिड़ गइल । सबके राय होखे त काहे ना पहिले अपना कबड्डी का बारे में जान लेहल जाव ।"

सब लड़िका "हं-हं" कहे लगलनसऽ ।

राकेश बाबू तब खड़ा होके समुझावे लगलन–

"आज कबड्डी एगो अंतरराष्ट्रीय खेल का रूप में भले ही जानल जाला, बाकिर साँच पूछी त कबड्डी एगो लोकप्रिय भारतीय खेल ह । एह खेल के सबसे लमहर विशेषता ई ह कि एकरा में ना कवनो साज-सामान के जरूरत बा ना, लमहर लंबाई-चौड़ाई लेले मैदान के छोटो जगह में आत्मविश्वास का बल पर विरोधी दल के ललकारल, अपना दल के उत्साह बढ़ावल आ निडरता के प्रदर्शन के भाव एह से सीख लेल जाला । अइसन खेल भोजपुरी के गाँव-गँवई में पहिलहूँ खेलल जात रहे बाकिर 1920 में सतारा (महाराष्ट्र) में परांजपे जी एह खेल खातिर नियम निर्धारित करे के काम कइलन । एकरा बाद 1938 में पहिले पहिल एकर अखिल भारती प्रतियोगिता आयोजित भइल । 1944 में भारतीय ओलंपिक संघ एकरा नियम के मंजूरी आ मान्यता देलस । भारत के राजधानी दिल्ली में 1982 ई. में आयोजित नउवाँ एशियाई खेल में एकरो एगो खेल के रूप में सम्मिलित कइल गइल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

रमेश : सर ! त का कबड्डी खेले ला मैदान के कवनो लंबाई-चौड़ाई निर्धारित नइखे ?

शिक्षक : जब नियम से एह खेल के बाँध देहल गइल त निर्धारण जरूरी हो गइल। अइसे त कबड्डी के मैदान चौरस आ आयताकार होला बाकिर वयस्क, महिला आ किशोर खातिर एकर अलग-अलग मानक लंबाई-चौड़ाई निर्धारित बा । वयस्क लोग ला जहवाँ 13 मीटर × 10 मीटर के मैदान होला उहँवे महिला आ किशोर खातिर 11 मीटर × 8 मीटर के मैदान होला । मैदान का बीचोबीच एगो मध्य रेखा होला जेकरा दूनों ओर एक-एक प्रतिद्वन्द्वी दल खड़ा होले । एकरा अलावे चारू ओर से लाइन खींच के एगो घेरा बना देहल जाला, जेकरा बाहर गइला पर खेलाड़ी आउट मानल जालन ।

मोहन : हरेक दल में केतना खेलाड़ी होला सर ?

शिक्षक : हरेक दल में 12 खेलाड़ी होला बाकिर एक समय में साते खेलाड़ी मैदान में उतरेला, शेष पाँच खेलाड़ी सुरक्षित रहेला जेकर जरूरत पड़ला पर दल उपयोग करेला।

खेल के शुरुआत टॉस से होला । टॉस जीतेवाला अपन मन पसंद साइड चुनेला आ पहिले उहे अपना ओर से कबड्डी भेजेला । कबड्डी जानेवाला खेलाड़ी एके साँस में 'कबड्डी-कबड्डी' बोलत विपक्षी दल के खेलाड़ियन के छू के भागे के प्रयास करेला । ऊ जवना-जवना खेलाड़ी के छू के मध्य रेखा पार क के अपना दल में आ जाला ऊ सब खेलाड़ी मुअल मानल जालन । आ जो कबड्डी जायवाला खेलाड़ी मध्य रेखा के ओही पार पकड़ा जाले आ ओकर साँस टूट जाले माने एके साँस में 'कबड्डी-कबड्डी' कहल रूक जाले त कबड्डी जायेवाला खेलाड़ी मुअल मान लेल जालन । ईहे क्रम बारी-बारी से होत रहेला। दूनो दल का घर में एगो रेखा होला । कबड्डी गइला पर एक बेर ए ओकरा पार कइल जरूरी होला ।

सलीम : कबड्डी खेले के समय केतना निर्धारित बा ?

शिक्षक : खेल के अवधि वयस्क में चालीस मिनट आ महिला आ किशोर में तीस मिनट होला । बीच में पाँच मिनट के विश्राम दिहल जाला ।

लक्ष्मी : पोशाक ?

शिक्षक : एक पोशाक हाफ पैंट आ गंजी होला । गंजी पर खेलाड़ी के नंबर छपल रहेला ।

फातिमा : जीत हार के फैसला कइसे होला ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शिक्षक : विपक्षी दल के एक खेलाड़ी के आउट कइला पर आक्रामक दल के एक अंक मिलेला । अगर आउट होत-होत कवनो दल के कुल खेलाड़ी आउट हो जाला त ओह दल के विपक्षी विजयी दल के 'लोन्ना' मिलल कहल जाला । एकर अंक अलगा मिलेला। पूरा खेल में जवन दल अधिका अंक पावेला, ऊ विजयी घोषित होला ।

एगो लइका बीचे में टुभुकल–"खेल में गाल होखे त ?" सब लड़िका हँसे लगलन स । शिक्षको के हँसी आ गइल । ऊ कहत गइलन–"चोरवा के मन बसे ककड़ी के खेत में ।" फेर गंभीर होत कहलन–

"बेईमानी कइसे होई ? खेल के नियंत्रण खातिर एगो रेफरी, दूगो लाइंस मेन, दू गो अंपायर आ एगो स्कोरर होलन । रेफरी कवनो खेलाड़ी के नियम के उल्लंघन कइला आ अनुशासन भंग कइला पर चेतावनी दे सकेला आ विपक्षी दल के ओकरा बदला में अंक दे सकेला । खेल से ओकरा के बाहरो कइल जा सकेला । बाकियो निर्णायक आपन-आपन काम करत रहेला । त अब तू लोग बतावऽ कबड्डी में आउर कवन-कवन बोल बोलल जाला ?"

रमेश : 'आम छू-आम छू, कौड़ी बादाम छू ।

मोहन : चल कबड्डी आइला, तबला बजाइला

तबला के पइसा, लाल गलइचा ।

सलीम : आइले कबड्डी डेरइह जनि होऽ

हाथ-गोर टूटी त रोइह जनि होऽ ।

वर्ग में ठहाका मच जाता । शिक्षक सबके शांत कके 'लगान' फिल्म के बाकी हिस्सा देखावे लागताड़न ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कबड्डी में प्रत्येक दल में केतना खेलाड़ी होला ?

(क) 7 (ख) 8

(ग) 12 (घ) 6

2. किशोर खेलाड़ियनल खातिर कबड्डी के मैदान के लंबाई-चौड़ाई का होला ?

(क) 13 × 10 मीटर (ख) 11 × 8 मीटर

(ग) 8 × 6 मीटर (घ) 15 × 11 मीटर

3. कबड्डी खेल के नियम पहिले पहल कब बनल ?

(क) 1911 (ख) 1920

(ग) 1982 (घ) 1952

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

4. पहिले पहल कवना जगहा पर कबड्डी के एशियाई खेल में शामिल कइल गइल ?

(क) चेन्नई (ख) बंबई

(ग) पटियाला (घ) दिल्ली

5. रिक्त स्थान में सही शब्द भरीं–

(क) पहिले पहल कबड्डी के नियम ..... बनवलन ।

(ख) कबड्डी में कवना खेलाड़ी का मुअला पर विपक्षी दल के ..... अंक मिलेला।

(ग) कबड्डी में एक समय मैदान पर एक दल के ..... गो खेलाड़ी खेलेला ।

(घ) कबड्डी में पहिले कवन दल कबड्डी भेजी एकर फैसला ..... से होला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

6. कहानी में जब खेल में बेइमानी के बात एगो लइका उठइलक त का भइल ?

7. कबड्डी में लोन्ना का होला ?

8. किशोर लोगन ला कबड्डी खेल के केतना समय निर्धारित बा ?

9. कबड्डी जाय में खेलाड़ी के मुँह से निकलल तीन गो बोल लिखीं ।

दीघ उत्तरीय प्रश्न

1. 'कबड्डी' कहानी के सारांश लिखीं ।

2. पठित कहानी के शिल्प पर विचार करीं ।

परियोजना कार्य

1. गाँव-गंवई में खेलल जायवाला कबड्डी जइसन कवनो दोसर खेल के वर्णन दू छात्रन का बीच वार्तालाप का रूप में लिखीं ।

शब्द-भंडार

अनाड़ी – जेकरा कवनों बात के जानकारी ना होखे

गुल्ली-डंडा – एगो भारत के गाँवन में खेलल जायवाला खेल

चौरस – चौकोर, सभतर बराबर, समतल

आयताकार – चार सरल रेखा से घिरल अइसन क्षेत्र जेकर दूनो लंबाई आ दूनो चौड़ाई बराबर होला आ सभ कोण के होला ।

एशियाई खेल – एशियाई देशन के बीच प्रति चार वर्ष पर होखे वाला खेल प्रतियोगिता ।

आक्रामक दल – जवन दल विपक्षी दल पर आक्रमण करत कबड्डी जनला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : पन्द्रह

रमेशचन्द्र झा

रमेशचन्द्र झा भोजपुरी-हिंदी सुप्रसिद्ध रचनाकार रहीं । उहाँ के जनम पूर्वी चंपारन जिला के सुगौली अंचल का फुलवरिया गाँव में भइल रहे । पिता श्री लक्ष्मीकान्त झा जिला के एगो प्रमुख नेता रहीं । रमेशो जी बयालिस का आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिहली । जेलो गइलीं । उनका स्वतंत्रता-सेनानी के ताम्रपत्र आ पेंशन मिलल । ऊ बहुत दिन ले चंपारन जिला बोर्ड प्रेस के मैनेजर का रूप में काम करत रहले आ 1984 में सेवानिवृत्त भइले । 7 अप्रिल 1994 के रात में अपना धरती पर छियासठ-सड़सठ का उमिर में उहाँ के निधन हो गइल ।

रमेशचन्द्र झा जी उपन्यास, कहानी, कविता, गीत, निबंध संस्मरण आ बाल-साहित्य का अलावा शोध भी कइलीं । पचास गो से ढेर किताब उहाँ के प्रकाशित बा । हिंदी के तीन गो साप्ताहिक पत्रन के उहाँ का संपादनो कइलीं । उहाँ के तीन गो किताब चंपारन की साहित्य साधना', चंपारन : साहित्य और साहित्यकार' आ 'अपने और सपने' भोजपुरी में लिखल उहाँ के उपन्यास 'सुरमा सगुन बिचारे बा' अपना ढंग के महत्त्वपूर्ण कृति बा। ई 'भोजपुरी कहानियाँ' । (वाराणसी) में धारावाहिक छपल रहे । पचास का दशक में उहाँ गीत-गजल भोजपुरी, 'अँजोर' में छपे ।

विषय-प्रवेश

एक भौतिकवादी युग में स्वार्थ क समुंदर में आकंठ डूबल समाज के यथार्थ आ भयावह चित्र एह गीत में उकेरल गइल बा । हर आदमी स्वार्थ में आन्हर होके चोर, बेइमान, व्यभिचारी आतंकी इत्यादि बन रहल बा, जवना से समाज से सात्विक भाव के लोप हो रहल बा । चारो ओर आतंक के साया में जिए खातिर मजबूरी होत जा रहल बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आग पर तप रहल जिन्दगी

आग पर तप रहल जिन्दगी
आमने-सामने आदमी !

जान पहचान के चेहरा,
लग रहल आजकल अजनबी !

आज बारूद का बीज के,
कह रहल लोग चम्पाकली !

कर्म के ग्रंथ अब के लिखी
लिख रहल देश रोकड़-बही !

आज पहरू लुटेरा भइल,
काल्ह तक जे रहल संतरी ।

हर गली में दु:शासन इहाँ,
हार बइठल कहीं द्रौपदी !

आदमी का बदे आचमन,
देवता का बदे अंजली !

हर दिसा से धुआँ उठ रहल,
हर नगर गाँव में सनसनी !

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

हस्त रेखा बिगड़ते गइल,
भाग्य पढ़ले बहुत ज्योतिसी !
सेनका हो गइल कुलबधू,
घोर अपराधिनी कुलवती !
आज उनके समुन्दर मिलल,
पी गइल जे नदी के नदी !

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. जिन्दगी कवना चीज पर तप रहल बा ?

(क) आग पर (ख) बारूद पर

(ग) धूप में (घ) एह सब पर

2. आज के परिस्थिति में पहचानलो चेहरा कइसन लाग रहल बा ?

(क) डरावना (ख) उदास

(ग) अजनबी (घ) विकृत

3. कवना चीज का प्रभाव में लोग बारूद के चंपाकली समुझता ?

(क) राजनीति के प्रभाव में (ख) भौतिकता का प्रभाव में

(ग) पूँजीवाद आ प्रभाव में (घ) समाजवाद का प्रभाव में

4. आज के बिगड़ल परिस्थिति में के कुलवधू हो गइल हवा ?

(क) उर्वशी (ख) द्रौपदी

(ग) अपराधिनी (घ) मेनका

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. द्रौपदी काहे हरि के बइठ गइल बाड़ी ?

2. काल्ह तक जे संतरी रहे उ आज का भ गइल बा ?

3. आदमी के बदे 'आचमन' आ देवता का बदे अंजली में कवन भाव छिपल बा ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रमेशचन्द्र झा जी अपना एह गीत में का जवन विकृत परिस्थिति के वर्णन कइले बाड़ें ओकर संक्षेप में वर्णन करीं ।

2. द्रौपदी आ मेनका के कहानी संक्षेप में लिखीं ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

परियोजना कार्य

1. देश के सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक परिस्थिति में आइल विकृति से संबंधित कवनो आउर कविता खोज के प्रस्तुत करीं ।

2. समय का अनुसार समाज में आइल बदलाव पर अपना दोस्तन का संगे बइठ के चर्चा करीं।

शब्द-भंडार

अजनबी – अनजान, जेकरा से पहिले चिन्हा-परिचे ना होखे

रोकड़-बही – रुपिया-पैसा के हिसाब लिखे वाली बही

पहरू – पहरेदार, पहरुआ

संतरी – सिपाही, रक्षक

आचमन – भोग के बाद जल पिआवल, पूजा में जल-स्पर्श

अंजली – फूल समर्पित कइल, अंजुरी के भर के फूल चढ़ावल

लुटेरा – लूटे वाला

सनसनी – आतंक आ भय के माहौल ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अध्याय : सोलह

एक पाठ के रचना पाठ्य पुस्तक निर्माण खातिर आयोजित कार्यशाला में भइल बा

विषय-प्रवेश

लोक जीवन से स्वाभाविक रूप से उपजल अइसन नाटकन में आम आदमी के सुख-दुःख के सही अभिव्यक्ति भइल बा। भोजपुरिया संस्कृति के सोर बड़ी गहिरा गइल बा। इहे वजह बा कि पश्चिमी सभ्यता के चकाचौन्ध के बादो एजवा के संस्कृति बाचल बा। परंपरागत रूप से चलल चल आवल रीति-रिवाज आजो कवनो-ना-कवनो रूप में प्रयोग में बा। लोक नाटक, संवाद आ सुख-दुख के अभिव्यक्ति के एगो बरियार विधा रहल बा।

अइसन में 'भोजपुरी लोकनाट्य डोमकच' निबंध ना खाली भोजपुरी क्षेत्र के लोक नाटकन से परिचित करावता बलुक आजो के परिवेश में ओकर उपयोगिता दर्शावता।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निबंध

भोजपुरी लोकनाट्य डोमकच

भोजपुरिया जगत सांस्कृतिक रूप से बड़ी संपन्न बा । एजवाँ जीवन के डेगे-डेगे पर्व-त्यौहार, नेगचार मिलेला । भोजपुरिया लोग बड़ी उत्सवप्रिय होला । भोजपुरी क्षेत्र में कई तरह के लोक नाटकन के प्रचलन बा, जवन सहज-सरल हृदय भोजपुरिया लोग के जिनगी के एगो अभिन्न अंग बा ।

अइसने एगो लोकनाट्य बा डोमकच । जहिया लड़िका के बारात जाला ओह दिन रात में मेहरारू लोग एकरा के खेलेला । एजवाँ शादी-बियाह में एतना नेगचार होला कि महिनवन एकर लरे ना टूटे । बियाह में मरद लोग त बारात चल गइल रहेला घर में खाली मेहरारूये लोग बाँच जाला । मेहरारू लोग बटुरा के अपने में नाटक खेलेला । इहो एगो उत्सवे खानी होला । मेहरारू लोग के प्रतिउत्पन्नमतित्व अपना जिनगी से जुड़ल अनेक प्रसंगन के संवाद गढ़ के हाव-भाव का संगे नाटक बना लेला । उहे लोग पुरुष पात्रो के भूमिका निभावेला । मरदन के वर्चस्व का खिलाफ एह में मेहरारू लोग के दमित इच्छा के भी अभिव्यक्ति खुल के होला। हँसी-मजाक आ व्यंग्यपरक आभी-गाभी से भरल गीतन का जरिए आ हाव-भाव के बेहिचक प्रयोग से नारी-जीवन के विभिन्न स्थितियन के खुलासा हो जाला । 'जट-जटिन' खानी 'डोमकचो' एगो नारी कौतुक हवे आ दूनूँ में कुछ-कुछ मेलो बा । दूनू के नायिका के मरद कामचोर होला, अपना मेहरारू के छोड़ के कमाये खातिर परदेस जाला आ दूनू में शिकायत एह बात खातिर होला कि ऊ अपना मेहर खातिर कुछ ना कइलस । नायक कामचोर, बुरबक, साधारण मनई, पियक्कड़ आ नायिका सुंदर चतुर-चल्हाक होले।

डोमकच के एगो कथा में नायक-नायिका डोम जाति के बा । सुन्नर-सुघड़ नायिका से खीसिया के नायक कोलकत्ता चल जाता आ ओहिजा ढेर दिन ले रह जाता । नायिका पर सिपाही आ राजा दूनों के नजर लागल बा । मजबूरी आ दबाव में आके नायिका राजा के रानी बन के महल में रहे लागल बाड़ी । राजा के बिअहुती मेहर, बहिन आ मातारी डोमिन से खार खाता लोग। राजा नायिका डोमिन के भरोसा देत बाड़न कि ओकरा बेटा के बियाह खूब धूमधाम से करिहें। नायक कमा के लवटत बा । ओकर पलानी उजड़ चुकल बा आ ओकर मेहरियो अलोपित हो गइल बिआ । चूड़ीहार से ओकरा पता चल जाता कि ओकर मेहरारू राजा किहाँ रहत बिआ । ऊ भेष बदल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

के ओकरा से मिलत बा । नायिका अपना पति का जवरे रहे खातिर तइयार हो जातिया । डोम नायक सफल हो जाता आ राजा का घर के सब खिलकत सभका सोझा आ जात बा । नाटक नायक-नायिका का बियाह का खुशी में खतम होता । नाटक इ संदेश छोड़ जाता कि चाहे जइसन होबे, अपने घर-परिवार आ परिजन लोग प्रिय होला, अपना लायक होला आ ओही लोग से सच्चा सुख मिलेला ।

अब एह नाटक का क्रम में शादी के प्रसंग लइका जनमे के प्रसंग, नायक-नायिका के मनुहार भा दांपत्य जीवन के प्रसंग नायक के परदेस गइला पर वियोग आ विरह के प्रसंग, सुख आ गरीबी के दृश्य आदि आकर्षण विन्दु होला आ मेहरारू सन के बहोराइल जमात हरेक प्रसंग के नाच-गा के जीवंत बना देला । एमे मनोरंजन का जवरे-नारी-जीवन के भोगल यथार्थ प्रस्तुत हो जाला । बीच बीच में नाच, संवाद, गीत, समूह नृत्य आ कतना औरत के जोकरई आ मरद बनल औरत के मरदानगी के खिलकत मजेदार होला ।

आज के बदलल परिवेश में मनोरंजन के अनेक साधन, रेडियो, टी. वी., सिनमा आदि हो गइल बा । कुछ लोग का 'डोमकच' में फूहड़पन लउकेला । बाकिर साँच बात त ई बा कि एह में भारी सांस्कृतिक गरिमा बा ।

डोमकच खानी आउर लोकनृत्य आ लोकनाट्य प्रचलन में रहल बा जइसे हुड़का के नाच, गोंड़ऊ नाच, धोबी नृत्य, जोगीरा, हरपरौली आदि ।

डोमकच के एगो संवाद-गीत

अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?

डोम हमर हउ गुनी-गवैया, महफिल-महफिल गइले ।....

टिकुली सटले, सेनूर भरले, सब सिंगारो कइले

अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?

बज्जर पड़ो मोर एह देहिया पर अनका से लोभइले

अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?

डोम हमर हउ हरबिसना हँसवाये राजा गइले

अनार कलिया डोमिनी तोर डोम कहाँ गइले ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डोमकच कइसन नाटक बा, लोकनाटक कि शिष्ट नाटक ?
2. डोमकच कवना अवसर पर खेलल जाला ?
3. डोमकच कवना बेरा खेलल जाला ?
4. डोमकच में मुख्य रूप से कवन-कवन पात्र होलन ?
5. डोमकच केकरा द्वारा कब खेलल जाला ?
6. डोमकच से मिलत-जुलत कवन नाटक ह ?

   (क) नौटंकी (ख) जट-जटिन

   (ग) रामलीला (घ) नेटुआ नाच

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहार के कवन-कवन क्षेत्र में डोमकच खेलल जाला ?
2. जट-जटिन आ डोमकच में कथा लेके का समानता बा ?
3. डोमकच के नायक के का आदत रहे ?
4. डोमिन राजा घरे काहे चल गइली ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. डोमकच के कहानी संक्षेप में लिखीं ।
2. डोमकच कब होला
3. डोमकच के कवनो गीत लिखीं लिखीं ।
4. लोकनाटकन के नाम गिनाईं

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

5. डोमकच में पुरुष पात्र के अभिनय के करेला ?

6. भोजपुरिया जगत सांस्कृतिक रूप से कइसन बा ?

परियोजना कार्य

1. कवनो के डोमकच सुनल बात लिखीं ।

2. पाठ से बाहर से दूगो लोकनाटक के उदाहरण लिखीं ।

3. अपना आस-पास डोमकच के नायक मतिन कवनो पात्र होखे त ओकर चरित्र लिखीं।

4. नाटक के कवनो अइसन आपबीती के बात लिखीं जे आजो इयाद आवेला ।

शब्द-भंडार

सोर	–	जड़
नेगचार	–	विधि-बेहवार का अवसर पर देवल गइल उपहार
उत्सव प्रिय	–	खुशी के समारोह पसन्द करेवाला
उत्सव	–	खुशी के समारोह
प्रतिउत्पन्नमतित्व	–	हाजिर जवाबी
वर्चस्व	–	अधिका अधिकार
दमित	–	दबंल
नायिका	–	नाटक में मुख्य भूमिका निभावेवाली महिला
बिअहुती	–	बिआहल या बिआह कइल
अलोपित	–	गायब
नायक	–	नाटक मुख्य भूमिका निभावेवाला पुरुष पात्र
संदेश	–	खबर

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

दांपत्य – पति-पत्नी के सम्मिलात रहल

जीवंत – जिअतार

परिवेश – रहे-सहे के वातावरण

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

व्याकरण आ रचना

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

चिट्ठी

कार्यालयीय, पारिवारिक आ निजी पत्र के चिट्ठी कहल जाला । पत्र दू तरह के होला–औपचारिक आ अनौपचारिक । 'चिट्ठी' अनौपचारिक पत्र के अंतर्गत आवेला। चिट्ठी में निजी परिचय के महत्त्व होला । दू गो व्यक्ति के विचारन आ समाचारन से एक-दूसरा के परिचित करावे वाला सेतु बा–चिट्ठी । एह से चिट्ठी में तथ्य, सूचना के साथ-साथ व्यक्तिगत भावना के भी महत्त्व होला । माता, पिता, भाई, बहन, रिश्तेदार, मित्र, पदाधिकारी आदि के लिखल जाए वाला पत्र चिट्ठी के अतर्गत आवेला । चिट्ठी लिखे के एगो ढाँचा निर्धारित बा, ओही ढाँचा पर चिट्ठी लिखाला । घरेलू बात आ आत्मीयता के भाव चिट्ठी के विशेषता होला । चिट्ठी के व्यक्तिगत पत्र भी कहल जाला ।

आदर्श चिट्ठी के नमूना–

मित्र के परीक्षा में उत्तीर्ण भइला पर बधाई–

सीवान

30.11.2008

प्रिय इयार रमेश,

नमस्कार ।

ई जानके बहुत खुशी भइल कि तू दसवाँ के परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कइलऽ हऽ। तहरा ई सफलता पर हम हृदय से बधाई देत बानीं । हमरा पूरा विश्वास बा कि आगे भी तू परिश्रम करके अइसने सफलता प्राप्त करबऽ । भगवान से प्रार्थना बा कि तहार सब मनोरथ पूरा होखो । हमरा आशा बा कि तू भविष्य में अपना परिवार के नाम ऊँचा करबऽ । घर में सबके यथोचित प्रणाम आ आशीष कहिहऽ ।

भविष्य के कार्यकम के बारे में जल्दिए सूचित करिहऽ ।

तहार लंगोटिया इयार

विमल

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

कार्यालयी आवेदन पत्र

पत्र दू तरह के होला–औपचारिक आ अनौपचारिक । कार्यालयी-आवेदन पत्र औपचारिक पत्रन के अंतर्गत आवेला । कार्यालयी आवेदन पत्र में निजी परिचय के संभावना ना रहेला। एह में औपचारिक पहलू आ बात के स्पष्ट ढंग से राखले प्रधान होला । एह में तथ्य आ सूचना के अधिक महत्त्व दिहल जाला । अइसन में व्यक्तिगत भावना के कवनो महत्त्व ना होला। संपादक नगर निगम अधिकारी, कार्यालय प्रधानमंत्री, रेलवे अधीक्षक, पोस्टमास्टर आदि के लिखल जाए वाला पत्र कार्यालयी-आवेदन पत्र के अंतर्गत आवेला ।

कार्यालयी आवेदन पत्र लिखे के एगो सुनियोजित ढाँचा होला । पत्र के शुरुआत उत्तर पुस्तिका के पृष्ठारंभ से होके ओही पृष्ठ में नीच तक समाप्त हो जाए के चाहीं, अइसने पत्र के आदर्श कार्यालयी पत्र मानल जाला ।

आदर्श कार्यालयी आवेदन पत्र के उदाहरण

पटना नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी के पत्र लिखके अपना मुहल्ला के सफाई खातिर अनुरोध–

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,
पटना नगर निगम
पटना (बिहार) ।

विषय–मोहल्ला के सफाई करावे खातिर अनुरोध ।

महोदय,

हम राऊर ध्यान अपना मोहल्ला में फइलल गंदगी का ओर आकृष्ट करावे के चाहत बानीं। रऊआ ई जान के आश्चर्य होई कि हमनीं के मोहल्ला में पिछला बीस दिन से कवनों सफाई कर्मचारी नगर निगम का ओर से काम पर नइखे आइल । मोहल्ला में चारों ओर कूड़ा-कर्कट के अंबार जगह-जगह लाग गइल बा । कूड़ा डाले खातिर कवनो निश्चित व्यवस्था निगम का ओर से नइखे कइल गइल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आज स्थिति ई बा कि मोहल्ला के वातावरण एकदम दूषित हो गइल बा, जेहसे सड़क पर चलल मुश्किल हो गइल बा । नालियो के सफाई बहुत दिन से नइखे भइल । चारो ओर मच्छर के प्रकोप बढ़ गइल बा, जवना चलते बीमारी फइले के खतरा बन गइल बा । वर्षा ऋतु के शुरुआत हो गइल बा, ई स्थिति रही तऽ जीअल मुश्किल हो जाई ।

श्रीमान् से निवेदन बा कि जल्दी से जल्दी मोहल्ला के निरीक्षण कराके नियमित सफाई के उचित व्यवस्था कराई, ना तऽ मोहल्लावासिअन के स्वास्थ्य पर एकर भयंकर कुप्रभाव पड़ी। रऊरा ओर से उचित कार्यवाही भइला पर हमनी राऊर आभारी होखब ।

दिनांक : 20.5.2008

प्रार्थी
समस्त निवासी
ब्लॉक ए, राजीवनगर, पटना

निबंध-लेखन

निबंध के गद्य के कसौटी मानल गइल बा । ई गद्य के उत्कृष्ट रूप होला । निबंध-लेखन एगो कला हऽ । एकर क्षेत्र व्यापक होला । निबंध लिखे खातिर भाषा पर पकड़ जरूरी होला। निबंध के माध्यम से छात्र के ज्ञान, अनुभव विचार आऊर भाव के अभिव्यक्ति होला। अनुभव आ ज्ञान के कवनो क्षेत्र निबंध के विषय बन सकत बा ।

निबंध के प्रकार

निबंध मुख्यतः तीन प्रकार के होले–

(1) विचार प्रधान निबंध–एकरा अंतर्गत धर्म, राजनीति, घटना-प्रधान, ज्ञान, दर्शन, समस्या आदि से जुड़ल निबंध आवेला ।

(2) वर्णन प्रधान निबंध–एकरा अंतर्गत वस्तु, स्थान, मेला, प्राकृतिक दृश्य, त्योहार, ऋतु आदि से जुड़ल निबंध आवेला ।

(3) भाव प्रधान निबंध–अइसन निबंध में भाव के प्रधानता होला । एकरा अंतर्गत अहिंसा, संस्कार, आतंकवाद, मानवता, संस्कृति, सत्संगति आदि से जुड़ल निबंध आवेला।

निबंध के अंग (भाग)

'निबंध-लेखन' के मुख्यतः चार भाग होला–

(1) भूमिका (2) विषय-वस्तु (3) विषय-विस्तार (4) उपसंहार ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

निबंध के विशेषता

निबध के आकार छोट आ गद्यमय होखे के चाहीं ।

निबंध में शुरू से अंत तक विषयगत-तारतम्य बनल रहेके चाहीं ।

भाषा-शैली रोचक, ललित आ जीवंत होखे के चाहीं ।

निबंध निर्धारित शब्द-सीमा के भीतर पूरा करे के चाहीं ना त दीर्घ निबंध उत्कृष्ट मानल गइल बा, ना छोट ।

विराम चिह्न के सही प्रयोग होखे के चाहीं ।

निबंध लेखन अभ्यास से आसान हो जाला । कवनो विषय पर निबंध लिखे के पहिले ओह विषय पर चिंतन-मनन कर लेवे के चाहीं । निबंध रोचक आ सारगर्भित होखे के चाहीं। निबंध के आरंभ आ अंत आकर्षक होखे के चाहीं । निबंध में विषयगत व्यापक विवेचना का साथे-साथे शैली में लेखक के निजता के झलक भी रहे के चाहीं ।

फीचर-लेखन

'फीचर-लेखन' के आशय हऽ—मनोरंजनपूर्ण समाचार । 'फीचर' में मनोरंजन के पहिलका स्थान होला, समाचार आ सूचना के स्थान बाद में आवेला । लेकिन मनोरंजन आ सूचना—दूनू फीचर के अनिवार्य अंग बा । ना तऽ मनोरंजक प्रस्तुति के बिना कवनो समाचार फीचर कहला सकत बा, ना सूचनात्मक आग्रह के बिना कवनो आलेख फीचर के संज्ञा पा सकत बा ।

'फीचर' शब्द के अर्थ होला नाक-नक्शा भा चेहरा । जब कवनो लेखक कवनो सूचना भा समाचार के अइसन सजीव आऊर रोचक ढंग से प्रस्तुत करे कि ओकर चेहरा पूरा तरह से उभर आवे, तऽ अइसन आलेख के 'फीचर' कहल जाला । एकरा में कथा-शैली, पात्र-योजना, मार्मिकता आ शैली के रोचकता के बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान आउर भूमिका होले। फीचर-लेखन में कलात्मकता, उत्सुकता जगावे के क्षमता आऊर आकर्षण के गुण रहल जरूरी होला । फीचर के अंत में भविष्य के संभावना आऊर फीचर-लेखक के निजी मत भी महत्त्वपूर्ण मानल जाला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

आदर्श फीचर के नमूना

शीर्षक–लड़िकाई पर बस्ता के बढ़त बोझ

उमिर–5 बरिस । पढ़े खातिर विषय छव गो आऊर किताब दस गो । लिखे खातिर कॉपी बीस गो । बेचारा बच्चा के रीढ़ के हड्डी सीधा नइखे हो पावत–एह बोझ के ढोवला से। आज के शिक्षा के ई कमाल बा । किताबे-कॉपी में अझुरा के रह गइल बा, स्कूल में हाले पहुँचल बा ई लइका । मनोरंजन आ खेल के कवनो जगह नइखे रह गइल । एह लइका के जिनिगी अभिये से तनाव में पड़ गइल बा । स्कूल में मास्टर साहब लोग बा जे खाली सिलेबस पूरा करावे खातिर रोज एक-एक चैप्टर कइसहूँ पढ़ावत जा रहल बा आ घरे पहुँचला पर ट्यूशन वाला मास्टर साहब आ जात बाड़े । रात में ग्यारह बजे ले जाग के स्कूल के टास्क पूरा करत बा लइका । एको मिनट के संवास नइखे । ई सोंच के कि आगे अभी अठारह–बीस बरिस से एहू से कठिन तपस्या जब ऊ करी तब जाके डॉक्टर, इंजीनियर भा साहेब कुछऊ बन सकी--अभिये से ऊ लइका के माथा पगला रहल बा ।

ज्ञान के दुनिया अपार बा । रोज एकहे गो नया चीज एमें समा रहल बा । गणित, विज्ञान, सामाजिक शिक्षा–अब एतने विषय तक ई दुनिया नइखे रह गइल । कंप्यूटर सब पढ़ाई खातिर जरूरी जरिया बन गइल बा । ई कंप्यूटर आँख चऊपट करके बचवा के आँख पर चश्मा बचपने में चढ़वा देत बा । बाहरी दुनिया के देखेवाली आँख के रोशनी कमजोर पड़ला के बाद भीतरी आँख के रोशनी खुलले कन्नू परोसा कइल जा सकत बा । आ एकरो का विश्वास । समाज में एक दूसरा के बीच पल रहल अविश्वास नफरत, टाँग खींचऊअल में का उमेद कइल जाव ?

साँच पूछल जाव तऽ बचवन के ज्ञान दिहल कवनो बुरा बात नइखे बाकिर खाली किताबिये ज्ञान से का होखे के बा ? जरूरत बा अइसन नयकी शिक्षा-प्रणाली के विकास के–जवना से मानस के साथे-साथ मन भी ऊँचा भाव से भर सके । विज्ञान, प्रयोग के भाव जगावे, खोज के ललक पैदा करे । कला आंतरिक आ बाह्य गुणन के विकास करे । वाणिज्य मेलजोल ना समतो के भाव भरे में सफल होखे तऽ सुयोग्य शिक्षक, उत्तम शिक्षा प्रणाली, कुशल दूरदर्शी नेतृत्व, दृढ़ इच्छाशक्ति–ई सब के जब मणिकांचन संयोग होई तब ई बस्ता बोझ ना रह जाई बचपन पर । बचपन के मुस्काये खातिर बस्ता के बोझ हटल बड़ा जरूरी बा।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

पटकथा

'पटकथा' के शाब्दिक अर्थ होई पर्दा खातिर कथा । संक्षेप में जब कवनो कहानी के फिल्म आ टी. वी. धारावाहिक के रूप में देखावे खातिर कैमरा के नजरिया से लिखल जाय त ऊ 'पटकथा' कहाला । हालांकि पटकथा पहिला बेर त पटकथा-लेखक लिखऽले बाकी ओके आउर प्रभावकारी बनाव खातिर कैमरा मैन (फोटोग्राफर) अपना ढंग से फोटोग्राफी करत जइसे दोबारा लिखेले । फेर निदेशक जेकरा दिमाग में पूरा कहानी के फिल्मी रूप में उकेरे के रूपरेखा मौजूद रहेला, कैमरा मैन, लाइट मैन आ अभिनेता-अभिनेत्री के निर्देशन देत तिबारा लिखेला आ आखिर में फिल्म के शूटिंग पूरा भइला पर एडिटिंग करे के दौरान आगे-पीछे जोड़-घटाव के चौथा बार एडिटर लिखेले ।

दरअसल 'पटकथा' लइकन खातिर छपेवाला कौमिक लेखा, कहानी के खंड-खंड में दर्शक के आगे आकर्षक ढंग से परोसे के एगो विशेष लेखनह, जवना नींव पर फिल्म आ धारावाहिक के घर तइयार होले । साफ बा कि इमारत बढ़िया बनी कि घटिया, एकर दारोमदार पटकथे पर निर्भर करेले ।

पटकथा लेखक में ई गुण होखे के चाहीं कि ऊ कैमरा के आँख से पर्दा पर घटेवाली घटनन के कल्पना, लेखन करत खानी करत जाय । एह प्रक्रिया में अंग्रेजी में 'विश्वजाइलेशन' कहल जाला ।

पटकथा-लेखन के कवनो निर्धारित तरीका नइखे । अपना-अपना सुविधा आ हुनर से एके अलग-अलग तरीका से लिखे आ फिल्म बनावे के उदाहरण भारतीय फिल्म-जगत में मिलेला । उदाहरण खातिर, सुप्रसिद्ध फिल्मकार सत्यजित राय चूँकि खुदे चित्रकार रहस, एह से चित्रे के माध्यम से ऊ कवनो फिल्म के पूरा पटकथा तइयार कर लेत रहस फेर ओही के आधार पर अपना फिल्मन के शूटिंग कर लेत रहस । एगो दोसर बंगाली निदेशक मृणाल सेन कैमरा मैन के कहके बहुत सारा फोटोग्राफी करा लेत रहस जवना के बाद में जोर घटा के एगो पटकथा बना लेत रहस, काहें कि उनका दिमाग में कहानी के रूपरेखा बिना कवनो लिखा-पढ़ी के रहत रहे ।

आखिर में मोटा-मोटी पटकथा-लेखन के जवन तरीका बा, ऊ नीचे के उदाहरण से समझल जा सकेला ।

प्रसिद्ध हिन्दी फिल्म 'मदर इंडिया' के कथासार कुछ एह तरह से बा कि एगो किसान-परिवार के पास सीमित जमीन रहे । शादी के बाद किसान के हाथ टूटत पहाड़ के टुकड़न के नीचे दब के बेकार हो जाता । ऊ काट देल जाता । अपना मजबूरी से घबड़ा के ऊ एक दिन

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

घर छोड़के लापता हो जात बा । तब ओकर मेहर जवन अभाव में बैल ना खरीद सकता रहे, अपना दूगो बेटन के बैल के जगहा जोत के खेती आ जीवन के गाड़ी आगे बढ़ावतिया । तबहूँ गाँव के लाला के कर्जा आ जुलुम ओकरा पर बढ़ल जाता । आखिर में नायिका के छोट बेटा डकइत बन के एक दिन ना खाली लाला के चुनौती देता बलुक ओकरा जवान बेटी के जबरदस्ती घोड़ा पर बइठा के ले भागे चाहता। गाँववाला माई से बिनवता । मतारी बेटा के मना करत विया आ जब ऊ नइखे मानत त अपने बनूक उठाके अपना बेटा के मार दे तिया काहें कि ओकरा सामने गाँव के इज्जत के सवाल बेटो से बढ़ के बा ।

अब एह कहानी के पटकथा कुछ एह ढंग से शुरू भइल बा–

क्रम	दृश्य	संवाद
1.	गाँव में सरकारी नहर बनके तइयार बा । ओकरा उद्घाटन खातिर एगो । झिरकुट बुढ़िया भारत माता नियर खड़ा बाड़ी । ऊ अपना हाथ से नहर के फाटक खोल दे ताड़ी । पानी इहाँ के गिरे लागता ।	×
2.	उनका अपन बीतल दिन इयाद आवे लागता । लागता कि नहर में पानी ना उनका अपन हाथ से मारल बेटा के खून बहता । (एह घरी पानी के रंग पर्दा पर दर्शक के कबो लाल लउकता, कबो असल रंग में)	×
3.	दर्शक अबले समझ जाता कि ई बुढ़िया फिल्म के नायिका हिय । अब कहानी पीछे लवट के (फ्लैश बैक) में नायिका के शादी आ बिदाई के दृश्य में बदल जाता ।	गाना 'पी के घर आज प्यारी दुलनिया चली.....

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

अइसहीं बाकी कहानियो के पटकथा का रूप में लिखल जा सकेला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पटकथा के का शाब्दिक अर्थ होला ?
2. पटकथा के-के लिखेला आ कवना दृष्टि से ?
3. पटकथा आ कौमिक के कथा में का समानता बा ?
4. सत्यजित राय के पटकथा के का तरीका बा ?
5. मृणाल सेन कइसे पटकथा के कल्पना करेलन ?

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. पटकथा के परिभाषा लिखीं।
2. पटकथा-लेखन के उदाहरण देके समझाईं।
3. पटकथा-लेखन में कवन गुण होखे के चाहीं।
4. पटकथा-लेखन में कवना-कवना बात पर ध्यान देवे के चाहीं।
5. पटकथा कवना-कवना माध्यम खातिर लिखल जाला।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. पटकथा आ साधरण कथा के अंतर बताईं।
2. पटकथा लिखे के विभिन्न फिल्मकारन के उदाहरण देके समझाईं।
3. पटकथा के कवनो उदाहरण पेश करीं।
4. फिल्म 'मदर इंडिया' के पटकथा कइसे लिखल गइल बा ?
5. कैमरा के आँख से लिखे का पीछे का मतलब बा ?

परियोजना कार्य

1. कवनो फिल्म के कहानी गढ़ीं।
2. कवनो धारावाहिक खातिर छोट पटकथा लिखीं।
3. कवनो भोजपुरी फिल्म के कथा पटकथा शैली में लिखीं।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्द-भंडार

पटकथा	–	पर्दा पर चलेवाली कहानी खातिर कथा
धारावाहिक	–	जवन कहानी टी०वी० पर क्रमशः खण्ड-खण्ड में देखलावल जाला।
कैमरामैन	–	कैमरा से फोटो खींचेवाला फोटोग्राफर
निदेशक	–	जेकरा देखरेख में काम होला।
लाइट्मैन	–	फोटोग्राफी करत खानी प्रकाश-व्यवस्था करेवाला शिल्पी
शूटिंग	–	फिल्म या धारावाहिक कैमरा से बनावे के प्रक्रिया
एडिटिंग	–	फिल्मावल के दृश्य आगे-पीछे आ काट के कहानी के मांग-अनुसार पूरा करके काम
दरअसल	–	असल में
विश्वजाइलेशन	–	घटनेवाली घटना के कल्पना कइल
मदर इंडिया	–	भारत की माता
नायिका	–	कहानी में मुख्य भूमिका निभावेवाली औरत
झिरकुट	–	बहुत उमरवाला बूढ़
उद्घाटन	–	कवनो काम के शुरू करा देवे के काम
दर्शक	–	देखेवाला

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

क्रिया

परिभाषा : जवना शब्द से कवनो काम के भइल भा कइल पावल जाला ओकरा के क्रिया कहल जाला । साधारण रूप में क्रिया का अंत में 'ल' प्रत्यय पावल जाला । जइसे–आईल, गईल, गावल, पीयल, खाईल ।

प्रयोग आ रचना का अनुसार क्रिया के दूगो भेद होला–अकर्मक आ सकर्मक ।

अकर्मक क्रिया–जवन क्रिया के व्यापार फल कर्त्ता पर पड़ेला ओकरा अकर्मक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– राम हँसत बा ।

सीता छींकत बिया ।

मुनिया रोवत बिया ।

इहँवा, हँसल, छींकल, रोवल क्रमशः 'राम', 'सीता' आ 'मुनिया' कर्त्ता का माध्यम से हो रहल बा एह में कर्म नइखे । एह से इ कुल्हि अकर्मक क्रिया कहलाई ।

सकर्मक क्रिया–जवन क्रिया के व्यापार आ फल कर्त्ता पर ना पड़ि के कर्म पर पड़ेला ओकरा सकर्मक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– गौरव किताब पढ़ रहल बा ।

सौम्या आम खा रहल बिया ।

सुरभि खाना बना रहल बिया ।

इहँवा पढ़ल, खाईल, बनावल सकर्मक क्रिया के उदाहरण बा ।

प्रयोग आ रचना के अलावे क्रिया के कुछ आउरो भेद होला–

(1) द्विकर्मक क्रिया–कवनो वाक्य में जब दू गो कर्म ला एके गो क्रिया के प्रयोग होला त ओकरा द्विकर्मक क्रिया कहल जाला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

जइसे– गुरुजी लइकन के किताब पढ़ावत बाड़न ।

रश्मि बेटा के मिठाई खियावत बिया ।

इहँवा पहिला वाक्य में पढ़ावल क्रिया के संगे लइकन आ किताब दूगो कर्म के प्रयोग आ दूसरका वाक्य में खियावल क्रिया का संगे बेटा आ मिठाई दूगो कर्म के प्रयोग बा ।

(2) संयुक्त क्रिया–जवन क्रिया दू भा दू से अधिका धातु के मेल से बने ओकरा संयुक्त क्रिया कहल जाला ।

जइसे–मुन्ना रोये लागल ।

रोहित घरे पहुँच गइल ।

इहँवा रोये लागल आ घरे पहुँचल संयुक्त क्रिया के उदाहरण बा ।

(3) पूर्वकालिक क्रिया–जब कर्त्ता एक क्रिया समाप्त होते दोसर क्रिया का ओर बढ़े ला त पहिल क्रिया के पूर्वकालिक क्रिया कहल जाला ।

जइसे–अंशु खा के स्कूल गइल ।

बादल नहा के खइलस ।

इहँवा खाइल आ नहाइल पूर्वकालिक क्रिया बा ।

(4) प्रेरणार्थक क्रिया–जब कवनो वाक्य में कर्त्ता अपने काम न कइ के दोसरा से करावेला त ओकरा प्रेरणार्थक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– मोहन मजदूर से पेड़ कटवावता ।

मीरा माई से चिट्ठी पढ़वावत बिया ।

इहँवा कहवावल, पढ़वावल प्रेरणार्थक क्रिया बा ।

(5) सहायक क्रिया–जब मुख्य क्रिया के अर्थ स्पष्ट करे भा पूरा करेला कवनो क्रिया के प्रयोग होला त ओकरा सहायक क्रिया कहल जाला ।

जइसे– सभे मेला जात रहे ।

लइका गोली खेलत ह ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

नेताजी भाषण देत रहीं ।

इहवाँ रहे, ह, रहीं सहायक क्रिया बा ।

1. नीचे दिहल वाक्य में कवन क्रिया भेद के उदाहरण बा–

(क) ज्ञानू मनीष के किताब दिहलन । (दिहलन, द्विकर्मक)

(ख) किरण हँसल बिया । (हँसल सकर्मक)

(ग) नंदू रोटी खात बा । (खात, सकर्मक)

(घ) गाड़ी चले लागल । (चले लागल, संयुक्त क्रिया)

(क्र) श्रवण खा के सुत गइल (खा के पूर्वकालिक क्रिया)

(च) राहुल चुन्नू से पेड़ कटवइलस । (कटवावल, प्रेरणार्थक)

2. नीचे दिहल क्रिया पद के प्रेरणार्थक रूप दिहल बा –

(क) पढ़ल – पढ़वावल

(ख) लिखल – लिखवावल

(ग) काटल – कटवावल

(घ) खाइल – खिलवावल

(ङ) दउड़ल – दउड़ावल

3. नीचे लिखल वाक्य के भूतकाल में दिहल बा –

हम जात बानी । (हम जात रहीं)

मोहन किताब पढ़ी । (मोहन किताब पढ़ले रहे ।)

सीता चित्र बनइलस । (सीता चित्र बनवले रही ।)

सोनू खेल रहल बा । (सोनू खेलत रहे)

गोलू स्कूल जात बा । (गोलू स्कूल जात रहे)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

2. विशेषण

जवन शब्द संज्ञा भा सर्वनाम के विशेषता बतावेला ओकरा के विशेषण कहल जाला आ जवन शब्द के विशेषता बतावेला ओकरा विशेष्य कहल जाला ।

जइसे– **लाल** गाय दूध देत बिया ।

पुरान चाउर पंथ पड़ेला ।

इहवाँ लाल आ पुरान, गाय आ चाउर के विशेषता बतावत बा एहसे ई दूनो शब्द विशेषण कहाई ।

विशेषण के चारि गो भेद होला–

1. गुणवाचक–जवन शब्द संज्ञा भाव के नाम गुण, दशा, स्वभाव के बोध करावे ओकरा गुणवाचक विशेषण कहल जाला ।

जइसे– **गोल** पहिया नाचता ता ।

पाकल आम मीठ होला ।

नया घर नीमन लागेला ।

करिया गाय शुभ मानल जाले ।

एजवा गोल, पाकल, नया, करिया गुणवाचक विशेषण बा ।

2. संख्यावाचक–जवन शब्द संज्ञा आ सर्वनाम के संख्या बतावे ओकरा संख्यावाचक विशेषण कहल जाला ।

जइसे– **एगो** लड़िका खेलत रहे ।

चार गो पेड़ आँधी में गिर गइल ।

कुलि लोग घर छोड़ि के भाग गइल ।

इहवाँ एगो, चार, कुल्हि संख्यावाचक विशेषण बा ।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

परिमाणवाचक–जवन शब्द कवनो चीज के नाप तौल के बोध करले ओकरा परिणामवाचक कहल जाला ।

जइसे– **बहुत** लोग जात रहे ।

पाँच सर दूध आइल ।

सब धन डूब गइल ।

इहवाँ बहुत, पाँच सेर, सब परिमाणवाचक विशेषण बा ।

4. प्रविशेषण–जब कवन शब्द विशेषण के विशेषता बतावे त ओकरा प्रविशेषण कहल जाला ।

जइसे– **बहुत** सुंदर

टह-टह लाल

लमहर बहादुर

अनार के दाना **सेनुनिया** लाल रहे

इहवाँ बहुत, टह-टह लमहर, सेनुरिया प्रविशेषण के उदाहरण बा ।

1. नीचे दिहल वाक्यन में विशेषण लिखल बा

(क) फटल-पुरान नोट (फटल-पुरान)

(ख) दुखी लोगन के मदद उपकार (दुखी)

(ग) सेठजी के सगरी पूँजी डूब गइल (सगरी)

(घ) ढेर लड़िकन के देख के कुकुर भाग गइल (ढेर)

(ड) दस किलो दूध में थई-थई भ गइल । (दस किलो)

(च) आपन कमाई लुटावे में मोह लागेला । (आपन)

2. नीचे दिहल वाक्यन में विशेष्य कोष्ठक में लिखल बा ।

(1) करिया घोड़ा दउड़त रहे (घोड़ा)

(2) पातर नदी में तेज धार होला (नदी, धार)

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(3) मोट अक्षर पढ़े में आसान होला (अक्षर)

(4) गरजे बादल बरसे ना । (बादल)

(5) भारत में बड़हन लोकतंत्र बा । (बड़हन)

3. नीचे दिहल शब्दन से विशेषण बना में वाक्य में प्रयोग करीं–

(क) अच्छाई (ख) माटी (ग) पानी (घ) बुढ़ापा (ङ) लड़िका

B. क्रिया विशेषण

विशेषण के अर्थ में जवन शब्द विशेषता प्रकट करेला ऊ क्रिया विशेष कहाला ।

लड़िका **तेज** दउड़ता ।

मोहन अबहीं आइल रहे ।

इहवा. तेज आ अबहीं क्रमशः दउड़त आ आइल क्रिया के विशेषता बतावता ।

क्रिया विशेषण के अर्थ का अनुसार चारि गो भेद होला ।

(क). काल वाचक–जवन क्रिया विशेषण समय में बोध करावेला ओकरा कालवाचक क्रिया विशेषण कहल जाला ।

मोहन **बाद** में चलल ।

रानी **पहिले** ही आइल रहे ।

इहवाँ बाद, पहिले समय के बोध करावता ।

(ख) स्थानवाचक–जवन क्रिया विशेषण से स्थान के बोध होला ओकरा स्थानवाचक कहल जाला ।

ऊ जहँवा गइल उहँवे अकाल पड़गइल ।

इहवाँ जहंवाँ, उहंवाँ स्थान के बोध करावेला ।

(ग) परिमाणवाचक–जवन शब्द से क्रिया के परिमाण के बोध होला ओकरा परिमाणवाचक कहल जाला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

ढेर बोलल जीउ के जंजाल होला ।

खूब हँसल नीमन नइखे ।

इहवाँ ढेर, खूब परिमाण बोध करावता ।

(घ) रीतिवाचक–जवना क्रिया विशेषण से क्रिया के रीति के बोध होला ओकरा के रीतिवाचक कहज जाला ।

जइसे– हम **जरूर** जाइब ।

ऊ साइद देखले रहे ।

हम **इहँवे** रहब ।

हम **सचमुच** जाइब ।

अभ्यास

1. नीचे लिखल वाक्यन में प्रयोग भइल क्रिया विशेषण के कोष्ठक में लिखीं –

(क) नीयरे बइठ जा । ( )

(ख) गवे-गवे चलल जाव । ( )

(ग) रनिया पहिले मजदूरी करत रहे । ( )

(घ) कतहूँ टिल्हा होई त कतहूँ खाई होई । ( )

(ङ) अधिका खाइल मउअत के बोलावल ह । ( )

2. नीचे दिहल गइल क्रिया विशेषणन के नीचे दिहल वाक्यन में उपयुक्त स्थान पर भरीं–

गवे-गवे, ठठाके, बादे में, अधिका, धड़ाधड़, डेगा-डेगी ।

(क) उपेन्द्र ..... पढ़े वाला लड़िका बा ।

(ख) प्रमिला ..... के हँस दिहली ।

(ग) ओकर ..... बोलल ओकरा खातिर काल हो गइल ।

(घ) छोट लड़िका ..... चले ला ।

(ङ) सऊँसे घर ..... गिर गइल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अलंकार

जवना के प्रयोग से काव्य के शोभा बढ़ेला भा काव्य में चमक आ जाला ओकरा अलंकार कहल जाला । अलंकार से काव्य अलंकृत भा आभूषित होला । अलंकार के दूगो मुख्य भेद बा–

1. शब्दालंकार–जहवाँ शब्द संबंधी चमत्कार पावल जाला ओकरा शब्दालंकार कहल जाला ।

शब्दलंकार के मुख्य भेद– अनुप्रास, यमक, श्लेष ।

2. अर्थालंकार–जवन विधान द्वारा काव्य में अर्थ संबंधी चमत्कार चातुर्य, सौंदर्य आवे ओकरा के अर्थालंकार कहल जाला । जहवाँ चमत्कार शब्द पर निर्भर ना कके अर्थ पर निर्भर करे उहवाँ अर्थालंकार होला ।

अर्थालंकार के कुछ भेद– उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण ।

शब्दालंकार के प्रमुख भेद–

अनुप्रास–कवनो वाक्य के शब्दन में एके वर्ण के बार-बार आवल आवृत्ति के अनुप्रास कहल जाला ।

अनुप्रास के पाँच गो भेद होला–

छेकानुप्रास, वृत्यानुप्रास, लाटानुप्रास, श्रुत्यानुप्रास, अन्त्यानुप्रास ।

यमक–भिन्नार्थक भा निरर्थक स्वर व्यंजन समुदाय के आवृति के यमक कहल जाला अर्थात् स्वर साम्य के साथ वर्ण समुदाय के अर्थान्तर के साथ आवृत्ति ।

यमक के दूगो भेद होला–

सभङ्ग–जहवाँ शब्द के तुड़ला पर अर्थान्तर होला ।

अभङ्ग–जहवाँ अनेकार्थकवाची शब्द भा शब्दन के राख के शब्द के बिना तुड़ले अर्थान्तर आवेला ।

श्लेष–श्लिष्ट पदन से अनेक अर्थन के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला । श्लिष्ट के अर्थ होला कवनो शब्द में एक से अधिक अर्थ के चिपकल रहल ।

एकर दू गो भेद होला

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

शब्दात्मक आ अर्थगत ।

जहवाँ श्लिष्ट शब्द के पर्यायवाची शब्द रखला पर अर्थान्तर चमत्कार बा रहे ओकरा शब्दात्मक श्लेष कहल जाला ।

जहवाँ श्लिष्ट शब्द के दूसर पर्यायवाची शब्द रखले पर अर्थ चमत्कार बनल रहे ओकरा अर्थगत श्लेष कहल जाला ।

अर्थालंकार के प्रमुख भेद

उपमा–दू वस्तुअन में समान धर्म के प्रतिपादन भा एक वस्तु के दूसर वस्तु से तुलना कइल जाय त एकरा उपमा अलंकार कहल जाला । उपमा के चार अंग होला–उपमेय, उपमान, साधारण धर्म आ वाचक ।

उपमा अलंकार के तीन भेद होते हैं–पूर्णोपमा, लुप्तोपमा, मालोपमा।

पूर्णोपमा–जहवाँ उपमा के चारो अंग उपस्थित रहेला ओकरा पूर्णोपमा कहल जाला ।

लुप्तोपमा–जहवाँ उपमा के कवनो एगो अंग के कमी रहेला ओकरा लुप्तोपमा कहल जाला ।

मालोप्मा–जहवाँ कवनो उपमेय खातिर एक से अधिका उपमान लिहल जाला उहाँ उपमान के माला जइसन हो जाला । एह से एकरा मालोप्मा कहल जाला ।

रूपक–जहवाँ उपमान के सगरी रूप उपमेय में चित्रित होला बाकिर सादृश्य के भाव ना होला । एकरूपता के साथ अभेद के भाव रहेला ओकरा रूपक अलंकार कहल जाला । एकरा कहल सकेला कि जहवाँ उपमेय के उपमान के रूप में दिखावल जाय त ओकरा रूपक कहल जाई ।

रूपक के तीनि गो भेद होला–

निरंग, सांग आ परंपरित ।

निरंग–जहवाँ उपमान के आरोप बिना ओकरा अंगन के उल्लेख कइले उपमेय पर होखे ।

सांग–जहवाँ उपमेय में उपमान के अंगन के भी आरोप होखे ।

परंपरित–जहवाँ एगो रूपक द्वारा दूसर रूपक के पुष्टि कइल जाला ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

उत्प्रेक्षा–जहवाँ उपमेय में उपमान के संभावना पावल जाला भा अप्रस्तुत के रूप में प्रस्तुत के कल्पना कइल जाला ।

उत्प्रेक्षा के तीनू गो भेद होला–वस्तुत्प्रेक्षा, हेतुत्प्रेक्षा, फलोत्प्रेक्षा ।

वस्तुत्प्रेक्षा–जहवाँ एक वस्तु में दूसर वस्तु के आरोप के संभावना होखे भा जहवाँ प्रस्तुत-अप्रस्तुत वस्तु के कल्पना होखे त ओकरा उत्प्रेक्षा अलंकार कहल जाला । एकरा कहल जा सकेला कि उपमेय में कल्पित उपमान के संभावना उत्प्रेक्षा ह ।

मानवीकरण–जहवाँ कवनो जड़-चेतन वस्तु के मनुष्य के रूप में मान के भा कल्पना के वर्णन कइल जाला त ओकरा के मानवीकरण अलंकार कहल जाला ।

MODEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

मुहावरा आ लोकोक्ति

भाषा के रोचक आ प्रभावपूर्ण बनावे में मुहावरा आ लोकोक्ति के महत्त्वपूर्ण स्थान होला। मुहावरा आ लोकोक्ति के प्रयोग से भाषा सरस आ सशक्त हो जाला आउर भावाभिव्यक्ति में चमत्कार आ जाला ।

मुहावरा

'मुहावरा' शब्द के अर्थ होला–अभ्यास, बातचीत, जब कवनो वाक्यांश भा शब्द समूह अपना मूल शाब्दिक अर्थ के छोड़ के कवनो दोसर विशेष अर्थ प्रकट करे, तब ऊ वाक्यांश भा शब्द-समूह मुहावरा हो जाला । मुहावरा के स्वतंत्र रूप से प्रयोग नइखे हो सकत ओकर प्रयोग वाक्य के अंग के रूप में कइल जाला । उदाहरण–'पेट काटल' । 'पट काटल' से कवनो सीधा अर्थ प्रकट नइखे होत । बाकिर जब कहल जाई कि 'हम पेट काटके अपना लइका के पढ़वनि ह', त एकरा वाक्य में स्पष्टता आजाता । मुहावरा में मूल 'क्रिया-पद' के होखल जरूरी बा, जेकरा अंत 'ल' लागल होखे । उदाहरण–

दूनूँ हाथ से पइसा पीटल ।

मोछ पर ताव दिहल ।

चानी काटल ।

झख मारल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

लोकोक्ति

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक' आ 'उक्ति' से बनल बा । लोकोक्ति सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर बनेला । लोकोक्ति मुहावरा जइसन वाक्य के अंग ना होला । प्राय: लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होले । एकर प्रयोग उपदेश देवे खातिर आ अपना कथन के पुष्टि खातिर प्रभावकारी सिद्ध होला । लोकोक्ति के 'कहावतो' कहल जाला । लोकोक्ति भा कहावत के प्रयोग विशेष संदर्भ में होला आ ओकर विशेष अर्थ लिहल जाला । उदाहरण–

आम के आम गुठली के दाम ।

आंहर कुकुर बतासे भूके ।

गेहूँ के साथ घूनो पिसाला ।

अंहरा में काना राजा ।

भईस के आगे बीन बजावस, भईस करे पगुरी ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कइसन पत्र के चिट्ठी कहल जाला ?

(क) पारिवारिक (ख) सरकारी (ग) व्यावहारिक (घ) एह में कवनो ना

2. कार्यालयी आवेदन पत्र कवना प्रकार के पत्र होला ?

(क) औपचारिक (ख) अनौपचारिक (ग) दूनों (घ) एहमें से कवनो ना

3. गद्य के कसौटी होला–

(क) कहानी (ख) नाटक (ग) निबंध (घ) कवनो ना

4. 'फीचर' कवना तरह के समाचार के कहल जाला ?

(क) सरकारी समाचार के (ख) मनोरंजक समाचार के

(ग) आपराधिक घटना से जुड़ल समाचार के (घ) एहमें से कवनो ना

5. भाववाचक विशेषण के उदाहरण कवन बा–

(क) अच्छा (ख) चार (ग) मीटर आम

6. जवना शब्द से कवनो काम के कइला या भइले के बोध होला, ऊ कहाला–

(क) संज्ञा (ख) क्रिया (ग) विशेषण सर्वनाम

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चिट्ठी में कवन-कवन बात के महत्त्वपूर्ण स्थान होला ? ई बात तीन पँक्ति में लिखीं ।
2. कार्यालयी आवेदन पत्र में कवना बात के संभावना रहेला ?
3. निबंध के तीनू भेद के नाम लिखीं ।
4. निबंध के चारो अंग के नाम लिखीं ।
5. पटकथा के शाब्दिक अर्थ का होला ?

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

6. 'फीचर' शब्द के अर्थ का होला ?

7. विशेषण आ क्रिया विशेषण के परिभाषा लिखीं ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. अपना छोट भाई के कुसंगति से बचावे खातिर एगो पत्र लिखीं ।
2. अपना साइकिल चोरी के रिपोर्ट करे खातिर थाना प्रभारी के पत्र लिखीं ।
3. 'प्रदूषण के समस्या' पर एगो संक्षिप्त निबंध लिखीं ।
4. 'पटकथा-लेखन' का होला–आपन शब्दन में लिखीं ।
5. 'बाल-मजदूरी' पर एगो फीचर लिखीं ।
6. क्रिया आ ओकर भेद के परिभाषा लिखीं ।
7. नीचे दिहल पंक्तिअन में कवन अलंकार बा बताईं–

   (क) जे रहे अति सुन्दर राम शिला
   बन के बन पत्थर आज गइल ।

   (ख) भजन कह्यो ताते भज्यो भज्यो न एको बार ।
   दूर भजन जाते कह्यो ते ही तू भज्यो गँवार ।

8. नीचे लिखल वाक्यन में से गुणवाचक आ परिमाणवाचक विशेषण खोज के लिखीं–

   (क) हमार घर पुरान बा ।
   (ख) सूरज गोल बा ।
   (ग) हमरा एक मीटर कपड़ा चाहीं ।
   (घ) ऊ लइका गरीब बा ।
   (ङ) कक्षा में बहुते विद्यार्थी बाड़े ।

9. नीचे दिहल कहावतन के अर्थ लिखीं–

   (क) अंहरा पीसे कुत्ता खाये ।
   (ख) जौ के साथ घुन पिसाईल ।

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

(ग) आम के आम गुठली के दाम ।

(घ) अंहरन में काना राजा ।

(ङ) अंत भला तऽ सब भला ।

परियोजना कार्य

1. 'आज के तनावपूर्ण शैली' पर एगो फीचर लिखके अपना कक्षा में पढ़ के सुनाईं ।

2. अपना माता, पिता, शिक्षक आदि से पूछ के तथा अपना पाठ्य पुस्तक से खोज के मुहावरा आ लोकोक्ति के सूची तैयार करीं आ अपना शिक्षक के देखाईं ।

3. 'केतना बदलल हमार गाँव' विषय पर नीचे दिहल संकेत विन्दुअन के आधार पर एगो निबंध लिखीं–

   (क) भूमिका (ख) गाँवन के देश भारत (ग) आजादी के बाद बदलत दशा (घ) पुरान ग्रामीण व्यवस्था (ङ) वर्तमान दशा (च) उपसंहार ।

ABDILL SOLUTIONS ABSOL PATNA

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com

https://www.studiestoday.com